संस्कृत छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास

Saṃskṛit Canda Śikṣaṇa ke liye veba ādhārita sahāyaka tantra kā vikāsa

दिल्ली विश्वविद्यालय की एम.फिल. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्ता

रवि कुमार मीना

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द

सहायक आचार्य, संगणकीय भाषाविज्ञान

संस्कृत विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007

2016

संस्कृत छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास

Saṃskṛit Canda Śikṣaṇa ke liye veba ādhārita sahāyaka tantra kā vikāsa

दिल्ली विश्वविद्यालय की एम.फिल. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्ता

रवि कुमार मीना

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द

सहायक आचार्य, संगणकीय भाषाविज्ञान

संस्कृत विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007

2016

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की एम.फ़िल्. उपाधि के निमित्त प्रस्तुत **"संस्कृत छन्द शिक्षण हेतु वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास"** नामक यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा मौलिक कार्य है। इस शोधकार्य का प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन सम्पूर्णत: अथवा अंशत: कहीं भी नहीं किया गया है। यत्र-तत्र किसी अन्य ग्रन्थ विशेष का प्रमाण हेतु प्रयोग करने पर उसका विवरण यथावत् निर्देशानुसार पाद-टिप्पणी में किया गया है।

शोधकर्त्ता

रवि कुमार मीना

शोध-निर्देशक	**विभागाध्यक्ष**
डॉ. सुभाष चन्द	प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज

Department of Sanskrit
University of Delhi
Delhi-110007, India

Date : 30.03.2016

Certificate of Originality

The research work embodied in this dissertation entitled **"संस्कृत छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास"** has been carried out by me at the Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, India. The Manuscript has been subjected to plagiarism checked by **Turnitin software**. The work submitted for consideration of award of M.Phil. is original.

(Ravi Kumar Meena)
Candidate

Student Approval Form

Name of the Author	**RAVI KUMAR MEENA**
Department	**Department of Sanskrit**
Degree	**MASTER OF PHILOSOPHY**
University	**UNIVERSITY OF DELHI**
Guide	**DR. SUBHASH CHANDRA**
Dissertation Title	**संस्कृत छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास**
Year of Award	**TO BE AWARDED**

Agreement

1. I hereby certify that, if appropriate, I have obtained and attached hereto a written permission/statement from the owner(s) of each third party copyrighted matter to be included in my dissertation, allowing distribution as specified below.
2. I hereby grant to the university and its agents the non-exclusive license to archive and make accessible, under the conditions specified below, my dissertation, in whole or in part in all forms of media, now or hereafter known. I retain all other ownership rights to the copyright of the dissertation. I also retain the right to use in future works (such as articles or books) all or part of this thesis, dissertation, or project report.

Conditions:

1. Release the entire work access Worldwide	
2. Release the entire work for 'My University' only for **1 year** **2 year** **3 year** **and after this time release the for** **access worldwide**	

3. Release the entire work for 'My University' only while at the same time releasing the following parts of the work (e.g. because other parts relate to publication) for worldwide access. **a) Bibliographic details and Synopsis only.** **b) Bibliographic details, synopsis and the following chapters only.** **c) Preview/Table of Contents/24 page only.**	
4. View Only (No Downloads) (worldwide)	

Signature of the Scholar **Signature an Seal of the Guide**

Place: UNIVERSITY OF DELHI, DELHI

Date: 30.03.2016

University of Delhi

Supervisor's Certificate for Exclusion of Self-Published work

Following Research papers based on this research has been presented and accepted for publications:

1. मीना, रवि कुमार एवं चन्द्रा, सुभाष. 2016. संस्कृत छन्द शिक्षण हेतु छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास. *बाइसवां अन्तराष्ट्रीय वेदान्त कॉंग्रेस (22वां वेदान्त)*, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, दिसम्बर 2-7-30, 2015.

2. मीना, रवि कुमार एवं चन्द्रा, सुभाष. 2016. ऑनलाइन संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र. *बाइसवां अन्तराष्ट्रीय वेदान्त कॉंग्रेस (22वां वेदान्त)*, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, दिसम्बर 2-7-30, 2015. (Published as Poster).

This published works have been included in the dissertation and has not been submitted for any degree to any University/institute.

Signature of Student **Signature of Supervisor**

आजीवन जीवनसमर में निर्भयतापूर्वक संघर्षरत रहने
वाली संघर्ष की प्रतिमूर्ति तथा ममत्व एवं
वात्सल्यभाव से आप्लावित स्नेहितहृदया
पूज्या दादी माँ श्रीमति रामप्यारी देवी
एवं माँ श्रीमति रतनबाई मीना,
पिता श्री छोट्याराम मीना,
बड़े पापा श्री गजराज सिंह
रावत एवं भुआ जी
श्रीमति मीनादेवी
के कर कमलों में
सादर समर्पित !

आभार

इस शोध को पूर्ण करने हेतु गुरुजनों का आर्शीवाद तथा अग्रजों एवं मित्रों की प्ररेणा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, अत: इनके प्रति आभार-व्यक्त करना अपना दायित्व समझता हूँ । सर्वप्रथम मैं अपने परमश्रद्धेय गुरु डॉ. सुभाष चन्द जी को हार्दिक नमन करता हूँ । जिन्होंने छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास इस विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किया । संस्कृत शास्त्रों एवं संगणकीय भाषाविज्ञान में आपके कौशल, निरन्तर सहायता एवं योग्य शोध निर्देशन के बिना मेरे लिए यह कार्य कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव ही था । शोध के दौरान आप द्वारा दिये गये निरन्तर समय एवं नवीन विषय संगणकीय भाषाविज्ञान के प्रशिक्षण के साथ-साथ कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का भी ज्ञान आपने बड़ी ही सरलता के साथ कराया । आपके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन से मेरा यह शोध पूर्णता को प्राप्त हो सका है । शोध एवं छात्रों के लिए आपका इतना समर्पण मेरे लिए सम्मानीय है। इस शोधकार्य को आपने एक ही नहीं अनेकों बार सम्पादित किया जिसके कारण यह कार्य इस स्थिति में पहुँच पाया है । अत: आदरणीय गुरुजी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ ।

छात्रों के प्रति स्नेहशील-हृदय संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो. रमेशचन्द भारद्वाज जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मुझे इस विषय पर काम करने का अवसर प्रदान किया । हमारे विभाग के अन्य प्राध्यापकगण प्रो. शारदा शर्मा, सहाचार्य डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय, डॉ. दयाशंकर तिवारी, डॉ. मीरा द्विवेदी, डॉ. ओमनाथ बिमली, डॉ. पूर्णिमा कौल, डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी, डॉ. रणजीत बेहरा, डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. वेद प्रकाश डिंडोरिया तथा सहायक आचार्य डॉ.अवधेश प्रताप सिंह, डॉ. बलराम शुक्ल, डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य, डॉ. करुणा आर्य, श्री एम. किशन, डॉ. मोहिनी आर्य, डॉ. रजीव रञ्जन, डॉ. श्रुति राय, डॉ. सोमवीर, डॉ. टेकचन्द मीणा, डॉ. उमाशंकर तथा डॉ. विजय शंकर द्विवेदी को भी मैं धन्यवाद देना चाहूँगा जिनका समय-समय पर अमूल्य मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं स्नेह मिला । विभागीय एम.फिल्. शोधसमिति का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सहमति से ही इस विषय पर कार्य करने का अवसर मिला । मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अध्यापकगणों का आभार व्यक्त करना

चाहूँगा जिनके निर्देशन में मुझे दो वर्षों तक अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं जाकिर हुसैन महाविद्यालय के अध्यापकगण का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

शोध प्रबन्ध लेखन में सबसे बड़ा कार्य सम्पादन का होता है। इस शोध को हमारे ही विभाग के डॉ. दयाशंकर तिवारी, डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, डॉ. टेकचन्द मीणा तथा डॉ. सुमन शर्मा (पीडीएफ) एवं मित्रों में कैलाश जी, सागर जी तथा प्रवीण जी ने एक ही बार नहीं कई बार सम्पादित किया जिससे शोध में आने वाली कमियों को यथासम्भव दूर किया जा सका। बिना इनके यह कार्य इतना अच्छा सम्भव नहीं था। मेरे सहशोधार्थी एवं शोधमण्डल के सदस्यों ने भी समय-समय पर अपना सहयोग दिया इसके लिए उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ। मेरे ही विभाग के संगणकीय भाषाविज्ञान के वरिष्ठ शोधार्थी भूपेन्द्र, माधव, साक्षी एवं विवेक जी तथा सहपाठी जलज का भी मै आभारी हूँ।

मुझे यहाँ तक पहुँचाने में मेरे परिवार के सभी सदस्य एवं सभी सम्बन्धियों की अहम् भूमिका रही है। अतः उनके लिए भी मैं दिल से आभारी हूँ। जिनका आशीर्वाद मुझ पर हमेशा रहता है। मैं अपने भाईयों रोहित मीना, अश्वेन्द्र मीना, सत्येन्द्र मीना, जितेन्द्र मीना, विजय मीना, गजेन्द्र, नरेन्द्र, प्रशान्त एवं अनुज सौरव, शिवकान्त, गौरव, मोहित और सूरज का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

विश्वविद्यालय के उन सभी पुस्तकालय कर्मचारियों तथा विभागीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पुस्तक प्राप्ति में तथा प्रशासनिक कार्यों में समय-समय पर सहयोग किया। इस शोध को सम्पन्न करने के लिए जेआरएफ के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने आर्थिक सहायता प्रदान की। जिसके का कारण यह कार्य बहुत ही आसान हो गया। इसके लिये मैं यूजीसी का भी आभारी हूँ।

यह कार्य छन्द पर आधारित है इसके लिए मुझे बहुत से संस्कृत एवं छन्द के विद्वानों का भी मार्गदर्शन मिला जिनमें डॉ. रमाकान्त शुक्ल तथा प्रो. नावानारायण बन्द्योपाध्याय मुख्य हैं। मैं उनके लिए भी आभारी हूँ। इस शोध का परिणाम दिल्ली विश्वविद्यालय के सर्वर पर उपलब्ध होगा जिसका उपयोग कोई भी कहीं से इंटरनेट के माध्यम से कर सकता है। अतः इसके लिए मैं अपने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर केन्द्र का भी आभारी हूँ जिन्होंने इसे होस्ट करने के लिए सभी

सुविधाएँ प्रदान की । अन्त में उन सभी को धन्यवाद देना चाहूँगा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिनका सहयोग प्राप्त हुआ ।

रवि कुमार मीना

विषय-सूची

आभार ..... i-iii

विषय-सूची ..... iv-viii

संस्कृत लिप्यन्तर के लिये अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला(आईएएसटी) ..... ix-ix

बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिये यूनीकोड में संस्कृत टंकण सहायता ..... x-x

ग्रन्थ-संकेततालिका ..... xi-xii

शोध हेतु चुने हुए 40 छन्दों की सूची ..... xiii-xiii

परिचय 01-04

प्रथम अध्याय 05-34

छन्दशास्त्र एवं तत्सम्बद्ध प्रमुख ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय

1. छन्द का परिचय (Introduction of Meter) 05-08
2. छन्दशास्त्र की परम्परा (Tradition of Meter) 08-09
3. पिङ्गलकृत छन्दशास्त्र का परिचय (Intro of Chhandshastra by Pingal) 09-11
4. पिङ्गल का संक्षिप्त परिचय एवं समय (Time & Introduction of Pingal) 11-19
5. पिङ्गलकृतछन्दसूत्र पर प्रमुख टीकाएँ एवं भाष्य 19-20
6. छन्द-प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय 21-34

द्वितीय अध्याय 35-80

संस्कृत छन्दों का परिचय, विभाजन, अवयव तथा शोध सर्वेक्षण एवं अनुसन्धान हेतु छन्द चुनाव

1. संस्कृत छन्दों का परिच (Introduction of Sanskrit Meter) 35-36
2. **छन्दों का विभाजन** (Dividation of Meter) 36-36

3. साहित्य के आधार पर छन्दों के भेद (Meter Dividation of Literature) 36-37

3.1 वैदिक छन्द (Vedic Meter) 37-50

3.2 लौकिक छन्द (Classical Meter) 50-55

4. छन्द के अवयव (Part of Meter) 55-65

5. छन्द के क्षेत्र में हुए शोधकार्यों का संक्षिप्त सर्वेक्षण 65-65

5.1 छन्द विषयक पारम्परिक अनुसन्धानों का परिचय 65-70

5.2 संगणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित शोधकार्यों का सर्वेक्षण 70-75

6. अनुसन्धान हेतु छन्दचुनाव 75-80

तृतीय अध्याय 81-147

अनुसन्धान के लिए चुने हुये छन्दों का परिचय एवं मात्रा गणना के नियम

1. अनुसन्धान के लिए चुने हुये छन्दों का परिचय 81-81

1.1 मात्रिक छन्द 81-89

1.2 समवृत्त छन्द 89-132

1.3 अर्धसमवृत्त छन्द 133-140

1.4 विषमवृत्त छन्द 141-144

2. मात्राओं की गणना के नियम 144-147

चतुर्थ अध्याय 148-159

वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र के संगणकीय पक्ष

1. संस्कृत छन्दसंगणक एवं डेटा संग्रहण में प्रयुक्त विधि 148-149

2. वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना 149-149

2.1 पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages) 149-151

2.2 स्पाइसी वेब सर्वर (Spyce Web Server) 151-151

2.3 डेटाबेस एवं टेक्सट फाइल (Databes and Text files) 151-154

3. छन्द सूचना तन्त्र के घटक (Component of Meter Info System) 154-154

3.1 छन्द प्रमाणक (Meter Validator) 154-155

3.2 छन्द पहचानकर्त्ता (Meter Recognizer) 155-156

3.3 छन्द सूचना जनरेटर (Meter Info Generator) 157-157
3.4 छन्द उदाहरण विश्लेषक (Meter Example Analyzer) 158-158
3.5 लेक्सिकॉन/डेटाबेस (Lexicon/Database)..... 158-158
4. छन्द सूचना तंत्र की प्रक्रिया (Process of Meter Info System)..... 158-159

पञ्चम अध्याय..... 160-165
वेब आधारित छन्द सहायक तंत्र का परिचय

1. इन्पुट मकैनिज्म (Input Mechanism)..... 160-162
2. आउटपुट (Output)..... 163-163
3. परिणाम विवरण (Result Descriptions) 163-165

निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान संभावनाएँ..... 166-168
1. सिस्टम की कुछ विशिष्टताएँ 166-167
2. सिस्टम की कुछ सीमाएँ..... 167-167
3. भावी शोध की सम्भावनाएँ..... 167-167
3.1 बहुभाषीय सिस्टम का विकास 167-167
3.2 वैदिक तथा अन्य लौकिक छन्दों हेतु सूचना तंत्र का विकास..... 167-167
3.3 पद्यों में छन्द विश्लेषक सिस्टम का विकास 168-168

तालिका.....पृष्ठ संख्या
तालिका संख्या: 1.1 17-17
छन्दशास्त्र के प्रवक्ताओं का क्रम
तालिका संख्या: 1.2..... 34-34
छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों की सूची
तालिका संख्या: 2.1..... 43-43
प्राग्गायत्री छन्द एवं उनके अन्य नाम
तालिका संख्या: 2.2..... 44-44
प्रथमसप्तक
तालिका संख्या: 2.3..... 44-44
द्वितीयसप्तक
तालिका संख्या: 2.4..... 45-45
तृतीयसप्तक
तालिका संख्या: 2.5..... 48-48

छन्दगोत्र
तालिका संख्या: 2.6 48-48
छन्ददेवता
तालिका संख्या: 2.7 49-49
छन्दस्वर
तालिका संख्या: 2.8 50-50
छन्दवर्ण
तालिका संख्या: 2.9 59-59
छन्द के गण
तालिका संख्या: 2.10 76-76
पुस्तकों की सूची
तालिका संख्या: 2.11 76-77
अनुसन्धान हेतु छन्दों की सूची

चित्र सूची ..... पृष्ठ संख्या
चित्र संख्या 4.1 149-149
वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना
चित्र संख्या 4.2 159-159
छन्द सूचना तन्त्र की प्रक्रिया
चित्र संख्या 5.1 161-161
पाठबॉक्स
चित्र संख्या 5.2 162-162
छन्दसूची
चित्र संख्या 5.3 162-162
सब्मिट बटन
चित्र संख्या 5.4 165-165
वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र का स्क्रीनशॉट
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 169-184
सन्दर्भग्रन्थ सूची (References) 169-182
हिन्दी सन्दर्भग्रन्थ (Hindi References) 169-176
अंग्रेजी सन्दर्भग्रन्थ (English References) 176-181
वेब सन्दर्भग्रन्थ (Web References) 181-182
सहायक ग्रन्थसूची (Bibliography) 182-184
हिन्दी सहायक ग्रन्थसूची (Hindi Bibliography) 182-183

अंग्रेजी सहायक ग्रन्थसूची (English Bibliography)..... 184-184
वेब सहायक ग्रन्थसूची (Web Bibliography)..... 184-184
शब्दकोश (Dictionary)..... 184-184

परिशिष्ट 185-205
प्रथम परिशिष्ट..... 185-189
पिङ्गलछन्दशास्त्र में उल्लिखित वैदिक छन्दों की सूची
द्वितीय परिशिष्ट..... 190-195
पिङ्गलछन्दशास्त्र में उल्लिखित लौकिक छन्दों की सूची
तृतीय परिशिष्ट..... 196-202
चुने हुए गन्थों की सूची एवं इनमें प्रयुक्त कुल छन्दों की संख्या एवं उनके नाम
चतुर्थ परिशिष्ट 203-203
संस्कृत छन्द सूचना सिस्टम का वेब पेज
पञ्चम परिशिष्ट 204-204
संस्कृत छन्द सूचना सिस्टम का यूज़र इन्टरफेस
षष्ठ परिशिष्ट..... 205-205
छन्द सूचना तंत्र का फ्लोचार्ट

प्रकाशन सूची 206-220
प्रथम प्रकाशन 206-219
संस्कृत छन्द शिक्षण हेतु छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास
वैदिक छन्दों की सूची

द्वितीय प्रकाशन 220-220
ऑनलाइन संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र

संस्कृत लिप्यन्तर के लिये अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला(आईएएसटी)

INTERNATIONAL ALPHABET FOR SANSKRIT TRANSLITERATION (IAST)

अ *a*	आ *ā*	इ *i*	ई *ī*	उ *u*
ऊ *ū*	ऋ *ṛ*	ॠ *ṝ*	ऌ *ḷ*	ए *e*
ऐ *ai*	ओ *o*	औ *au*	ं *ṃ*	ः *ḥ*
क् *k*	ख् *kh*	ग् *g*	घ् *gh*	ङ् *ṅ*
च् *c*	छ् *C*	ज् *j*	झ् *jh*	ञ् *ñ*
ट् *ṭ*	ठ् *ṭh*	ड् *ḍ*	ढ् *ḍh*	ण् *ṇ*
त् *t*	थ् *th*	द् *d*	ध् *dh*	न् *n*
प् *p*	फ् *ph*	ब् *b*	भ् *bh*	म् *m*
य् *y*	र् *r*	ल् *l*	व् *v*	
स् *s*	श् *ś*	ष् *ṣ*	ह् *h*	
क्ष् *kṣ*	ज्ञ् *jñ*	श्र् *śr*		

बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिये यूनीकोड में संस्कृत टंकण हेतु सहायक तालिका

Unicode Devanagari Input Mechanism through Baraha software (http://www.baraha.com)				
अ (a)	आ (A/aa)	इ (i)	ई (I/ee)	उ (u)
ऊ (U/oo)	ऋ (Ru)	ॠ (RRu)	ऌ (lRu)	ॡ (lRRu)
ए (e)	ऐ (ai)	ओ (o)	औ (au)	अं (aM)
ः (aH)				
क् (k)	ख् (K/kh)	ग् (g)	घ् (G/gh)	ङ् (~G)
च् (c)	छ्(C)	ज् (j)	झ् (J/jh)	ञ् (~j)
ट् (T)	ठ् (Th)	ड् (D)	ढ् (Dh)	ण् (N)
त् (t)	थ् (th)	द् (d)	ध् (dh)	न् (n)
प् (p)	फ् (ph)	ब् (b)	भ् (bh)	म् (m)
य् (y)	र् (r)	ल् (l)		व् (v/w)
स् (s)	श् (S/sh)	ष् (Sh)	ह् (h)	ळ् (Lx)
क्ष् (kSh)	ज्ञ् (j~j)	श्र् (Sr/Shr)		

ग्रन्थ संकेततालिका

अ.पु.	अग्निपुराण
अ.को.	अमरकोष
अभिनव.	अभिनवभारती
आ.ब्रा.	आर्षेय ब्राह्मण
उ.नि.सू.	उपनिदानसूत्र
ऋ.सं.	ऋग्वेद संहिता
ऋ.भा.भू.	ऋग्वेद भाष्य भूमिका
ऋ.प्रा.	ऋग्वेदप्रातिशाख्य
क.द.	कविदर्पण
कुमार.	कुमारसम्भव
किरात.	किरातार्जुनीय
गा.ल.	गाथालक्षण
छा.उ.	छान्दोग्य उपनिषद्
छन्दोनु.	छन्दोनुशासन
छ.म.	छन्दोमञ्जरी
छ.वि.	छन्दोविचिति
छ.सू.	छन्दःसूत्र (पिङ्गल)
ज.छ., जय.	जयदेवच्छन्द
ज.की.	जयकीर्ति
जा.छ.वि.	जानाश्रयी छन्दोविचिति
तै.सं.	तैत्तिरीय संहिता
ना.टी.	नारायणी टीका
ना.शा.	नाट्यशास्त्र
नि.	निरुक्त
नि.सू.	निदानसूत्र
पा.	पाणिनिसूत्र
पा.शि.	पाणिनीय शिक्षा
पि.सू.	पिङ्गलछन्दःसूत्र
प्रा.पै.	प्राकृत पैङ्गल
पु.	पुराण
मनु.	मनुस्मृति
रघु.	रघुवंश
वृ.	वृत्त
वृ.मु.	वृत्तमुक्तावली
वृ.मौ.	वृत्तमौक्तिक
वृ.र.ना.	वृत्तरत्नाकर नारायणी टीका
वृ.र.	वृत्तरत्नाकर

वृ.जा.स.	वृत्तजातिसमुच्चय
वे.मा.छ.	वेङ्कटमाधवीय छन्दोनुक्रमणी
वाग्व.	वाग्वल्लभ
वै.छ.मी.	वैदिक छन्दोमीमांसा
श.ब्रा.	शतपथ ब्राह्मण
शिशु.व.	शिशुपालवध
श्रु.बो.	श्रुतबोध
सु.ति.	सुवृत्ततिलक
सं.शा.इ.	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास
सं.छ.उ.वि.	संस्कृत छन्दों का उद्भव और विकास
हला.	हलायुध
है.छ.अ.	हैमचन्द्र छन्दोऽनुशासन
भा.	भाग
भू.	भूमिका
वा.रा.	वाल्मीकि रामायण
वे.दी.	वेदार्थदीपिका
वै.सा.औ.सं.	वैदिक साहित्य और संस्कृति
सर्वा.	सर्वानुक्रमणी
हला.वृ.	हलायुधवृत्ति
बल.उपा.	बलदेव उपाध्याय
अभि.शा.	अभिज्ञानशाकुन्तल
स्व.व.	स्वप्नवासवदत्त
मृ.क.	मृच्छकटिक
शि.बा.द्वि.	शिवबालक द्विवेदी
ब्रह्मा.त्रि	ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
वै.छ.	वैदिक छन्द
लौ.छ.	लौकिक छन्द
मा.ग.	मात्रिक गण
भा.रा.	भास्करराय

शोध हेतु चुने हुए 40 छन्दों की सूची

क्र. सं.	छन्द का नाम	क्र. सं.	छन्द का नाम	क्र. सं.	छन्द का नाम
1	आर्या	14	पृथ्वी	27	शालिनी
2	उपगीति	15	प्रमिताक्षरा	28	शिखरिणी
3	गीति	16	प्रहर्षिणी	29	सुमधुरा
4	मात्रासमक	17	मञ्जुभाषिणी	30	सुवदना
5	विपुला	18	मन्दाक्रान्ता	31	स्रग्धरा
6	वैतालीय	19	मालिनी	32	हरिणी
7	अनुष्टुप्	20	रथोद्धता	33	भुजङ्ग-प्रयात
8	इन्द्रवज्रा	21	रुचिरा	34	अपरवक्त्र
9	उपजाति	22	वंशस्थ	35	पथ्यावक्त्र
10	उपेन्द्रवज्रा	23	वसन्ततिलका	36	पुष्पिताग्रा
11	तोटक	24	विद्युन्माला	37	मालभारिणी
12	दोधक	25	वैश्वदेवी	38	वियोगिनी
13	द्रुतविल-म्बित	26	शार्दूल-विक्रीडित	39	उद्गता
				40	गाथा

परिचय

संस्कृत साहित्य विश्व का सर्वाधिक प्राचीन, सम्पन्न एवं सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। वेदों में मानव जीवन के सभी अभ्युदय एवं नि:श्रेयस सम्बन्धी विषयों का वर्णन किया गया है । वैदिक संस्कृत साहित्य का मूलाधार वेदशब्दराशि है। वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाने तथा उसको समझने के लिये शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष नामक छ: वेदाङ्गों की रचना की गई । छन्द एक वेदाङ्ग है जिसको वेद का पाद कहा गया है। जिस प्रकार मनुष्य पैर के बिना चल नही सकता उसी प्रकार वेद भी छन्दों के बिना आगे नही बढ़ सकता । वेदों के अर्थ को समझने के लिये छन्दशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है। वैदिक मन्त्रों के सम्यक उच्चारण के लिए छन्दोज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। छन्द गणितीय गणना पर आधारित होता है।

छन्दों को उनके साहित्य के आधार पर दो प्रकार का बताया गया है वैदिक एवं लौकिक। संस्कृत छन्द अनेक प्रकार के होते हैं। छन्दशास्त्र में कुल 119 वैदिक छन्द तथा 162 लौकिक छन्दों का वर्णन किया गया है। इस शोध में दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए तथा एमए संस्कृत के पाठ्यक्रम में लगी हुई पद्य से सम्बन्धित पुस्तकों में प्रयुक्त होने वाले कुल 40 छन्दों का चुनाव किया गया है। जिनका विस्तृत विवरण इस लघु शोध प्रबन्ध के अध्याय सङ्ख्या तीन में किया गया है। छन्द के क्षेत्र में पहला नाम आचार्य पिङ्गल का आता है जिन्होंने वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का विवरण दिया है। इनकी भाषा-शैली सूत्रात्मक है तथा समझने में थोड़ी दुरूह है। नये पाठकों के लिये समझना थोड़ा दुर्बोध हो सकता है। अतः इस पर बहुत सारे भाष्यों की रचना की गई। छन्दशास्त्र के अन्य ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं जिनमें वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी, वृत्तमञ्जरी, नाट्यशास्त्र आदि मुख्य हैं।

उद्देश्य

कम्प्यूटर तथा मोबाइल के इस युग में सब कुछ ऑनलाइन करना आसान हो गया है। अपनी ज्ञान परम्परा को सब तक पहुँचाना भी आसान हो गया है। पारम्परिक शिक्षा की जगह आजकल ई-शिक्षा ले रही है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य संस्कृत छन्दशास्त्र को समझने एवं संरक्षण से इसका डिजिटलाइजेशन करना है तथा साथ ही छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित एक

प्लेटफॉर्म तैयार करना जहाँ से जिज्ञासु किसी भी समय इन्टरनेट के माध्यम से छन्द सीख सकें तथा इसकी सहायता से सिखा भी सकें। इस शोध में दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए तथा एमए संस्कृत के पाठ्यक्रम में लगी हुई पद्य से सम्बन्धित पुस्तकों में प्रयुक्त होने वाले कुल 40 छन्दों को शामिल किया गया है। तथा इन्हीं के लिये ऑनलाइन छन्द सूचना सिस्टम का विकास किया गया है। जो संस्कृत विभाग (http://sanskrit.du.ac.in) दिल्ली विश्वविद्यालय पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) के अन्तर्गत सभी के उपयोग के लिये उपलब्ध है।

ऑनलाइन छन्द सूचना सिस्टम का परिचय

जैसाकि पहले बताया जा चुका है जो संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) के अन्तर्गत उपलब्ध है। इस वेबसाइट को खोलने पर चित्र सङ्ख्या 1 में दिखाया गया यूजर इन्टरफेस खुलता है। जिसमें पाठ टंकित करने के लिये एक पाठबॉक्स (Text Box) दिया गया है तथा साथ ही साथ सूचना के लिये उपलब्ध सभी छन्दों की एक सूची भी इसी पेज के दाहिने साइड में दी गयी है। जिसकी सहायता से सूचना के लिये उपलब्ध छन्द का नाम पाठ बॉक्स में टंकित किये बिना ही यहाँ से चुनाव किया जा सकता है। छन्द का नाम टंकित करने के बाद या सूची से चुनने के बाद यूजर को नीचे दिये गये **"छन्द सूचना के लिये क्लिक करें"** बटन पर क्लिक करने पर प्रयोक्ता द्वारा टंकित या चुने गये छन्द/छन्दों की सूचना इसी पेज पर नीचे प्राप्त होती है। इस सूचना में सबसे पहले छन्द का लक्षण सन्दर्भ गन्थों से जैसे छन्दसूत्र, वृत्तरत्नाकर श्रुतबोध एवं छन्दोमञ्जरी के अनुसार दिया जाता है साथ ही साथ इसकी हिन्दी में व्याख्या भी दी जाती है।

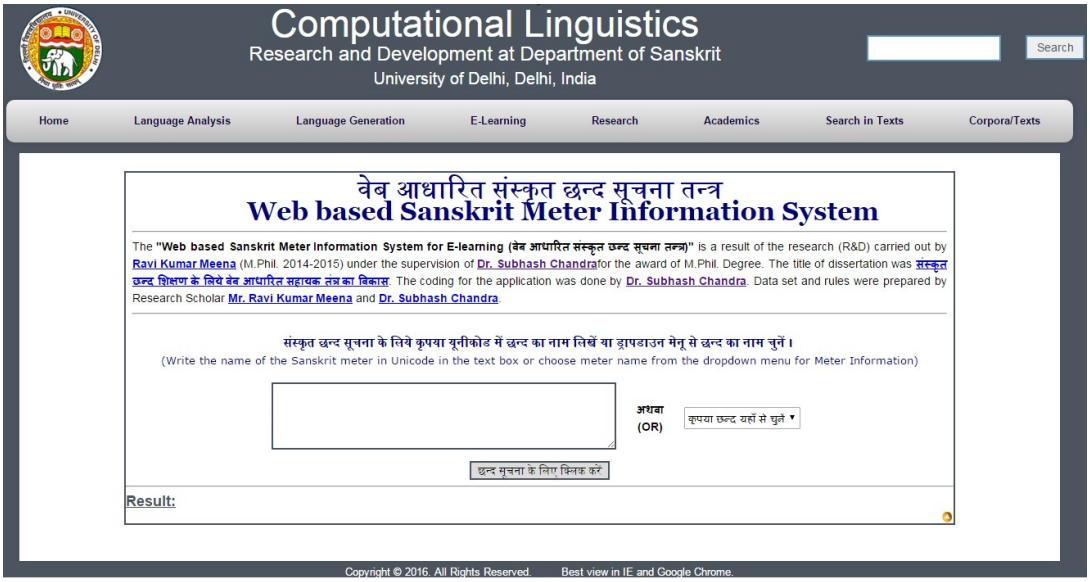

Figure 1: वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तंत्र का स्क्रीनशॉट

इसके बाद छन्द का उदाहरण फिर उदाहरण का विश्लेषण अर्थात् मात्रा गणना आदि प्राप्त होती है। मात्रा गणना के नियम भी उदाहरण विश्लेषण में दिये गये उदाहरण के ऊपर कर्सर ले जाने के बाद प्राप्त होते हैं। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए तथा एमए संस्कृत के पाठ्यक्रम में लगी हुई पद्य से सम्बन्धित किन-किन पाठ्य-पुस्तकों के किस-किस पद्य में खोजे गये छन्द का प्रयोग हुआ है। इसकी सूचना भी हाइपर लिंक (hyper link) के द्वारा दी गई है, जिस पर क्लिक करने पर वो पद्य प्रस्तुत हो जाता है तथा उसमें भी मात्रा गणना हो जाती है। इसके साथ ही साथ कुछ छन्दों के लिये उसकी गान पद्धति को भी ऑडियो फाइल से एक पुरुष एवं एक स्त्री की आवाज में लिंक किया गया है जिससे कोई भी पाठक खोजे गए छन्द में लिखे गए पद्यों का गान भी सीख सकता है।

लघुशोध-प्रबन्ध का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

1. प्रथम अध्याय:

प्रथम अध्याय "छन्दशास्त्र एवं तत्सम्बद्ध प्रमुख ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय" में छन्द परम्परा का सामान्य परिचय, छन्दशास्त्र की परम्परा, पिङ्गलछन्दशास्त्र का परिचय तथा विभिन्न

शास्त्रों के आधार पर इनके काल सम्बन्धी मतभेद, वैदिक तथा लौकिक छन्द सम्बन्धी ग्रन्थों का सामान्य परिचय आदि का सम्पूर्ण विवेचन संक्षेप में किया गया है।

2. द्वितीय अध्याय:

"संस्कृत छन्दों का परिचय, विभाजन, अवयव तथा शोध सर्वेक्षण एवं अनुसन्धान हेतु छन्द चुनाव" नामक द्वितीय अध्याय इस अध्याय में वैदिक तथा लौकिक छन्दों का संक्षिप्त परिचय, छन्दों का विभाजन, छन्द में प्रयोग होने वाले विभिन्न अवयवों का परिचय तथा प्रत्ययों का विवेचन किया गया है। इसके बाद इस अध्याय के दूसरे भाग में छन्द के क्षेत्र में हुए सभी प्रकार के कार्यों का सर्वेक्षण किया गया है।

3. तृतीय अध्याय:

तृतीय अध्याय "अनुसन्धान के लिए चुने हुये छन्दों का परिचय एवं मात्रा गणना के नियम" में शोध के लिए जिन छन्दों का चुनाव किया गया है उनका विस्तृत विवरण (परिभाषा, लक्षण, उदाहरण आदि) परिचय तथा मात्रा गणना के नियमों का विवरण दिया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय:

"संस्कृत छन्दसंगणन एवं डेटा संग्रहण में प्रयुक्त विधि तथा ऑनलाइन सिस्टम विकास के संगणकीय पक्ष" नामक चतुर्थ अध्याय में छन्द के डिजिटलाइजेशन में प्रयुक्त होने वाली संगणकीय विधियों का वर्णन किया गया है। तथा इसके विकास में प्रयुक्त प्रमुख डेटा, नियम एवं प्रोग्राम्स का वर्णन किया गया है।

5. पञ्चम अध्याय:

"वेब आधारित सहायक तंत्र का परिचय" नामक यह अन्तिम अध्याय है। जिसमें वेब आधारित सिस्टम का सामान्य परिचय सचित्र दिया गया है।

निष्कर्ष एवं भावी शोध की सम्भावनाएँ:

शोधप्रबन्ध के अन्त में निष्कर्ष एवं शोध की भावी सम्भावनाओं का उल्लेख किया गया है जिसके आधार पर भावी शोधार्थी छन्द पर कार्य कर सकता है।

प्रथम अध्याय

छन्दशास्त्र एवं तत्सम्बद्ध प्रमुख ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय

1. छन्द का परिचय

वेद भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आत्मा हैं। वेद मनुष्य जीवन के विकास के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ के समान हैं। समस्त संसार को ज्ञान प्रदान करने का श्रेय वेदों को जाता है। वेद को ही समस्त विश्व की शान्ति, विश्व-बन्धुत्व (सम्पूर्ण संसार को एकजुट करके रखना) और समस्त विश्व के कल्याण की घोषणा करने वाला कहा गया है (द्विवेदी, 2010)। वेदों में समस्त भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक ज्ञान है। मनुस्मृतिकार आचार्य मनु ने चारों वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान का आधार माना है, अर्थात् वेदों में सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं[1] (पाण्डेय, 1998 तथा शास्त्री, 2005)। इसके वास्तविक अर्थों को समझने के लिए इसके छः अङ्गों की सहायता ली जाती है। जिन्हें वेदाङ्ग कहा गया है। पाणिनीयशिक्षा के अनुसार वेद पुरुष के छः (6) अङ्ग हैं। 'अङ्ग' शब्द का अर्थ निरुक्तकार ने 'उपकारक' बताया है- 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते अमीभिरिति अङ्गानि', अर्थात् जिनके द्वारा किसी वस्तु के स्वरूप को जानने में सहायता मिलती है उनको अङ्ग कहा जाता है। जिनके नाम इस प्रकार है[2]- शिक्षा (Education), कल्प (Eon), छन्द (Meter), व्याकरण (Grammar), ज्योतिष (Astrology) और निरुक्त (Etymology) आदि (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997; महतो, 2015 तथा अवस्थी, 1972)। छः वेदाङ्गों में से छन्द को वेद पुरुष के पाद के रूप में स्वीकार किया गया है[3] क्योंकि वेद को छन्दोमयी वाणी के रूप में स्वीकार किया गया है (महतो, 2015 तथा अवस्थी, 1972)। इसीलिए वेदों में स्थित मन्त्रों या

---

[1] सर्वज्ञानमयो हि सः (मनु. 2.7)।

[2] छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्साङ्कमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ।। (पाणिनीयशिक्षा, महतो, 2015), कारिका- 41-42.

[3] छन्दः पादौ तु वेदस्य। (पाणिनीयशिक्षा, महतो, 2015), कारिका- 41-42.

ऋचाओं के सही तरह से उच्चारण के लिए छन्दों का ज्ञान होना आवश्यक है तथा वैदिक मन्त्रों के भावबोधन अर्थात् भावों को जानने (प्रकट करने) के लिए भी छन्दों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। लौकिक साहित्य में केवल पद्यों या श्लोकों को ही छन्द के रूप में स्वीकार किया गया है। लेकिन वैदिक साहित्य में गद्य (Prose) और पद्य (Poetry) दोनों को छन्द से युक्त स्वीकार किया है। निरुक्तकार आचार्य यास्क ने छन्द शब्द के अनेक अर्थ बताये हैं। निरुक्तकार यास्काचार्य[4] ने छन्द शब्द की व्युत्पत्ति 'छदिर्-आवरणे' धातु से स्वीकार की है, जिसका अर्थ है आच्छादित करना। अत: छन्द वेदों को आच्छादित करते हैं, इसलिए छन्द कहलाते हैं (शास्त्री, 1963 तथा मोर, 1952)। निघण्टु के अनुसार 'छद्' धातु का अर्थ स्तुति, पूजा और प्रसन्न करना है (मोर, 1952)। वेदों में गायत्री आदि छन्दों में मन्त्रों अथवा ऋचाओं के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी स्तुति की गई है (मिश्र, 2002 तथा मिश्र, 2006)। तैत्तिरीयसंहिता[5], शतपथब्राह्मण[6] और छान्दोग्योपनिषद्[7] में उपलब्ध निर्वचन भी आच्छादन अर्थ को ही बतलाते हैं। अमरकोष के टीकाकार क्षीरस्वामी[8] ने छन्द शब्द की आह्लादनपरक व्युत्पति दी है-'छन्दयति-आह्लादयते इति छन्द: (अभिमन्यु, 2012 तथा शास्त्री, 1998)। दुर्गाचार्य ने निरुक्त[9] (शास्त्री, 1963 तथा मोर, 1952) की वृत्ति में किसी ब्राह्मण ग्रन्थ के वाक्य को उद्धृत किया है, जिसका अर्थ है कि छन्द के बिना वाणी उच्चरित नहीं होती- "नाच्छन्दसि वागुच्चरति"। भरतमुनि[10] भी नाट्यशास्त्र में छन्द से विरहित शब्द स्वीकार नहीं करते है (चतुर्वेदी, 2011; नागर, 1989; शुक्ल, 1975; शर्मा, 1980; उपाध्याय, 1980 तथा वन्द्योपाध्याय, 1985)। छन्द छ: वेदाङ्गों के अलावा चतुर्दश विद्यास्थानों में भी अपना स्वतन्त्र स्थान रखता है (मीमांसक, 2009)। इस शास्त्र को प्राचीन छन्द के आचार्यों

---

[4] छन्दांसि छादनात् – निरुक्त 7.3.

[5] तैत्तिरीयसंहिता (5.6.6.1)।

[6] शतपथब्राह्मण (8.5.2.1)।

[7] छान्दोग्योपनिषद् (1.4.2)।

[8] अमरकोष (3.2.20) पर क्षीरस्वामी की टीका।

[9] निरुक्त (7.2)।

[10] छन्दहीनो न शब्दोऽस्ति न छन्द: शब्द-वर्जितम्। नाट्यशास्त्र 14.45.

द्वारा छन्दोविचिति नाम से जाना जाता है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा उपाध्याय, 1969)। वह ग्रन्थ जिसमें छन्दों का विशेष रूप से संकलन किया गया हो उसे छन्दोविचिति कहा जाता है। वैदिक संस्कृत साहित्य में छन्दशास्त्र के लिए भिन्न-भिन्न नामों का उल्लेख अनेक स्थानों पर किया गया है । छन्दशास्त्र के अन्य नाम जैसे- छन्दोऽनुशासन, छन्दोमान, छन्दोभाषा, छन्दोनाम, छन्दोव्याख्यान, छन्दोविवृत्ति तथा छन्दशास्त्र आदि भी अनेक शास्त्रों में प्राप्त होते हैं (मीमांसक, 2009) । आचार्य पिङ्गल के द्वारा लिखित ग्रन्थ छन्दशास्त्र सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसकी प्रामाणिकता इससे ही सिद्ध हो जाती है कि इसी ग्रन्थ के नाम के आधार पर सम्पूर्ण शास्त्र ही 'पिङ्गलशास्त्र' के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया । छन्दशास्त्र में वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है । अतः पिङ्गल द्वारा रचित छन्दशास्त्र का ज्ञान वैदिक तथा लौकिक साहित्य दोनों के लिए बहुत महत्त्व रखता है (उपाध्याय, 1969) ।

सामान्यत: वर्णों और मात्राओं की गेय-व्यवस्था को छन्द कहा जाता है । इसी अर्थ में पद्य शब्द का भी प्रयोग किया जाता है । पद्य अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है । भाषा में वाक्य तथा वाक्य में शब्द और शब्दों में वर्ण तथा स्वर रहते हैं । इन्हीं को एक निश्चित विधान से सुव्यवस्थित करने पर छन्द का नाम दिया जाता है। छन्दशास्त्र गणित पर आधारित है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा शर्मा, 1969) । वाक्य में प्रयुक्त अक्षरों की सङ्ख्या एवं क्रम, मात्रा-गणना तथा यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना छन्द कहलाती है। सूत्रशैली में आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित छन्दशास्त्र छन्द का मूल ग्रन्थ है तथा बिना भाष्य के समझना एवं पढ़ना अत्यन्य कठिन है। इसे ही वेदों का पाद कहा गया है (अवस्थी, 1972 तथा महतो, 2015) । विश्व के किसी भी साहित्य में छन्दों का इतना व्यापक और सूक्ष्म अनुशीलन नहीं हुआ है, जितना संस्कृत साहित्य में विद्यमान है । संस्कृत - साहित्य का आद्य स्रोत तथा मूलाधार वेद हैं । चारों वेदों में ऋग्वेद की ऋचाएँ सबसे प्राचीन हैं । उन ऋचाओं को जो पद्यमय, छन्दोबद्ध हैं, उन्हें वेदपुरुष के दोनों चरण कहा गया है। आचार्य कात्यायन ने अक्षरों को परिगणित करने वाली पदावली को छन्द स्वीकार किया है[11] (पाल, 1984) । इस प्रकार आगे चलकर लौकिक छन्दों का प्रादुर्भाव हुआ।

[11] यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः, ऋक्सर्वानुक्रमणी 2/6.

आचार्य विश्वनाथ[12] ने छन्दोबद्ध रचना को पद्य कहा है (शास्त्री, 1977 तथा दाहाल, द्विवेदी एवं द्विवेदी, 2013) । अथर्ववेद की बृहत्सर्वानुक्रमणी में छन्द का लक्षण इस प्रकार बताया है- अर्थात् अक्षरों की सङ्ख्या का नियामक छन्द कहलाता है अर्थात् जिस छन्द के नाम का हम जब उच्चारण करते है तो हमें गद्य या पद्य रचना में लिखित अक्षरों (वर्णों) की सङ्ख्या का ज्ञान हो जाये तब वह छन्द कहलाता है (मीमांसक, 2009) । छन्दों के लिए अनेक आचार्यों ने विभिन्न ग्रन्थों की रचना की है । जिनमें से आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित छन्दसूत्र या छन्दशास्त्र, केदारभट्ट विरचित वृत्तरत्नाकर, गङ्गादास विरचित छन्दोमञ्जरी, महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित सुवृत्ततिलक, जयकीर्तिकृत छन्दोऽनुशासन, जयदेवच्छन्द तथा रत्नशेखर कृत छन्दकोश इत्यादि मुख्य एवं उल्लेखनीय हैं (मिश्र, 2006) ।

2. छन्दशास्त्र की परम्परा

जिस प्रकार अन्य भारतीय वाङ्मय के इतिहास का निश्चित काल निर्धारण कर पाना मुश्किल है। उसी प्रकार छन्दशास्त्र का भी कोई निश्चित काल नहीं है इसके काल के विषय में विद्वान् एकमत नहीं हैं । लेकिन छन्दशास्त्र के जितने भी ग्रन्थ प्राप्त होते हैं उनमें पिङ्गल से प्राचीन अनेक आचार्यों के नामों का उल्लेख किया गया है । पिङ्गल छन्दसूत्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल ने समस्त छन्दों के ज्ञान के मूल कर्ता के रूप में भगवान् शिव के नाम का उल्लेख किया है (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा उपाध्याय, 1969) । वेदान्त दर्शन के अनेक सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक आचार्य रामानुज हैं । इनका समय 11वीं शती स्वीकार किया जाता है। रामानुजाचार्य के गुरु आचार्य यादवप्रकाश हैं । पिङ्गलसूत्र की यादवप्रकाश[13] नामक टीका में एक श्लोक छन्दशास्त्र की परम्परा से सम्बन्धित उद्धृत किया है ।

इस परम्परा का क्रम इस प्रकार हैं- भगवान् शिव से सुरगुरु बृहस्पति ने, उससे दुश्च्यवन (इन्द्र) ने, इन्द्र से असुरगुरु शुक्र ने, शुक्र से माण्डव्य ने, माण्डव्य से सैतव, सैतव से यास्क ने, यास्क

---

[12] छन्दोबद्धमिदं पद्यम् ,साहित्यदर्पण, शास्त्री, पृष्ठ सङ्ख्या - 224.

[13] छदोज्ञानमिदं भवाद् भगवतो लेभे सुराणां गुरु: तस्माद् दुश्च्यवनस्ततोऽसुरगुरुर्माण्डव्यनामा तत: ।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्तत: पिङ्गल: तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यै: क्रमात्
(यादवप्रकाश)॥

से पिङ्गल ने छन्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया (तैलङ्ग, 2013; द्विवेदी एवं सिंह, 2008; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा उपाध्याय, 1969) । छन्दशास्त्र की ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित एक और मत प्रचलित है । यह क्रम वैदिक-छन्दोमीमांसा के कर्ता युधिष्ठिरमीमांसक[14] (मीमांसक, 2009) ने अपनी कृति में दिया हुआ है । इस परम्परा के भी प्रवर्तक तीनों लोकों के स्वामी भगवान् शिव ही हैं किन्तु इसका आरम्भ भगवान् शिव के बड़े पुत्र कार्तिकेय से प्रारम्भ होता है- कार्तिकेय- सनत्कुमार मुनि – देवगुरु बृहस्पति – देवराज इन्द्र – शेषावतार पतञ्जलि और पिङ्गलमुनि से आगे बढ़ता हुआ उनके शिष्यों में प्रचलित हुआ। यहाँ दो प्रकार की परम्पराओं का उल्लेख किया गया है । इन दोनों परम्पराओं में से आचार्य यादवप्रकाश ने जिस परम्परा का वर्णन किया है प्रमाणों की दृष्टि से वह छन्दशास्त्रों के विद्वानों द्वारा अधिकाधिक स्वीकार की गई है (तैलङ्ग, 2013; त्रिपाठी, 2012 तथा उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)।

3. पिङ्गलकृत छन्दशास्त्र का परिचय

आचार्य पिङ्गल की एकमात्र कृति छन्दसूत्र (पिङ्गलछन्दशास्त्र) प्राप्त है । छन्दसूत्र छन्द से सम्बन्ध रखने वाले सभी ग्रन्थों का आधार ग्रन्थ है । छन्दसूत्र में केवल वैदिक छन्दों का ही उल्लेख नहीं है अपितु लौकिक छन्दों का भी वर्णन मिलता है । यह ग्रन्थ सूत्रों में प्राप्त होता है । छन्दसूत्र आठ अध्यायों में विभक्त है । इसमें पाणिनीय अष्टाध्यायी के समान आठ अध्याय होने के कारण इसे भी अष्टाध्यायी नाम से सम्बोधित किया जाता है (मिश्र, 2006; उपाध्याय, 1969 तथा मिश्र, 2002) । छन्दशास्त्र के आठ अध्यायों में कुल 308 सूत्र प्राप्त होते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) । यादवप्रकाश के अनुसार सूत्रों की सङ्ख्या 286 (शिवकुमार, 1964) तथा भास्कराय के अनुसार 300 सूत्र हैं (शर्मा, 1969 तथा पाठक, 2015) । पहले अध्याय का नाम सङ्ज्ञा अध्याय है जिसमें कुल 15 सूत्र हैं । इन्हीं सूत्रों के माध्यम से छन्दों में प्रयुक्त होने वाले आठ प्रकार के गण (यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण तथा सगण आदि), लघु तथा गुरु मात्राओं की योजना

[14] छन्दःशास्त्रमिदं पुरा त्रिनयनाल् लेभे गुहोऽनादतस्तस्मात् प्राप सनत्कुमारकमुनिस्तस्मात् सुराणां गुरुः।
तस्मात् देवपतिस्ततः फ़णिपतिस्तस्माच्च सत्पिङ्गलस्तच्छिष्यैर्बहुभिर्महात्मभिरथो मह्यां प्रतिष्ठापितम्
(छन्दोमीमांसा) ॥

तथा लघु अक्षर का उच्चारण कब गुरु की तरह होता है आदि बताया गया है। द्वितीय अध्याय में कुल 16 सूत्र मिलते हैं। इस अध्याय में वैदिक छन्दों के विषय में बताया है। जिसमें गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् और जगती इन सात वैदिक छन्दों के विषय में वर्णन किया गया है। इनमें से प्रत्येक छन्दों के अक्षरों की सङ्ख्या के आधार पर आर्षी, दैवी, आसुरी, प्राजापत्य, याजुषी, साम्नी, आर्ची और ब्राह्मी आदि आठ भेद हो जाते हैं। तीसरा अध्याय सबसे बडा अध्याय है जिसमें कुल 66 सूत्र हैं। इसमें मुख्य सात वैदिक छन्दों के विभिन्न प्रकारों का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसी अध्याय में जब किसी मन्त्र के छन्द से सम्बन्धित कोई शंका हो तो उस स्थिति में कौन-सा छन्द मानना चाहिए, इसका वर्णन भी पाँच सूत्रों (61-66) में किया गया है तथा इन्हीं सूत्रों में वैदिक छन्दों के देवता, स्वर, वर्ण एवं ऋषि का भी निर्देश दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में कुल 53 सूत्र हैं जिनमें से प्रथम सात (1-7) सूत्र वैदिक छन्दों से सम्बन्धित हैं तथा आठवें सूत्र से लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त छन्दों के लक्षण प्राप्त होते हैं। इस अध्याय में सूत्र 8 से 13 तक लौकिक छन्द-विषयक कुछ सामान्य बातें कही गई हैं। इनमें किसी छन्द का लक्षण नहीं दिया गया है। सूत्र 14 से 31 तक आर्या और उसके प्रकार, सूत्र 32 से 41 तक वैतालीय और उसके प्रकार तथा सूत्र 42 से 47 तक मात्रासमक और उनके प्रकार दिये गये हैं। सूत्र 48 से 52 में गीत्यार्या से लेकर चूलिका नामक मात्रिक छन्द समझाये गये हैं। पाँचवें अध्याय में कुल 44 सूत्र हैं। इस अध्याय में वृत्त छन्दों (1-27) का तथा अन्य लौकिक छन्दों (सूत्र 28 से 44) का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में अनुष्टुप् वक्त्र (सूत्र 6 से 19) पदचतुरूर्ध्व (सूत्र 20 से 24 तक) उद्गता (सूत्र 25 से 27 तक) के लक्षण दिये गये हैं। छठे अध्याय में कुल 43 सूत्र मिलते हैं। प्रथम सूत्र में यति की व्याख्या प्राप्त होती है। तनुमध्या छन्द से लेकर नवमालिनी छन्द तक आठ से बारह अक्षर के पाद वाले छन्दों के लक्षण दिये गये हैं। सातवें अध्याय में 36 सूत्र दिये गये हैं। इसमें प्रहर्षिणी छन्द से लेकर अपवाहक छन्द तक 13 से 26 अक्षर के पाद वाले छन्दों के लक्षण दिये गये हैं। अन्त में चण्डवृष्टिप्रयात छन्द और प्रचित प्रकार के दण्डक छन्द को समझाया है। आठवें अध्याय में 35 सूत्र प्राप्त होते हैं। गाथा छन्द तथा उसके प्रकारों को सूत्र 1 से 19 तक कहा गया है। सूत्र 20 से 35 तक प्रस्तार आदि प्रत्ययों को बताया गया है। छन्दसूत्र में नामोल्लेख न होने वाले छन्दों को गाथा कहा गया है।

पिङ्गलाचार्य ने कुञ्जलदन्ती से लेकर शशिवदना तक करीब सोलह गाथाओं के लक्षण दिए हैं। आठवें अध्याय के बीसवें सूत्र के अन्त तक प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट, एकद्वयादिलगक्रिया, सङ्ख्यान तथा अध्वयोग ये 6 प्रत्ययों का वर्णन किया गया है। पिङ्गलाचार्य और बाद में आये हुए छान्दसिकों द्वारा की गई प्रस्तार आदि प्रत्ययों की चर्चा सूक्ष्म एवं जटिल है (मिश्र, 2006; पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शिवकुमार, 1964)। इस प्रकार छन्दशास्त्र में वैदिक तथा लौकिक छन्दों का वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है। इसमें छन्द के नियमों, प्रत्ययों तथा गण व्यवस्था का विवेचन किया गया है। अत: इसको समझने के लिए भाष्यों की आवश्यकता पड़ती है।

4. पिङ्गल का संक्षिप्त परिचय एवं समय

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन से पता चलता है कि सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में हमारे कवियों तथा शास्त्रकारों का निश्चित काल तथा उनके विषय से सम्बन्धित पूर्ण अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि अधिकतर संस्कृत कवियों और शास्त्रकारों ने अपने-अपने ग्रन्थों में विषयवस्तु के अतिरिक्त स्वयं के जीवन के विषय में अल्पमात्र भी जानकारी नहीं दी है। इसलिए किसी भी आचार्य या शास्त्रकार का काल निश्चित नहीं बताया जा सकता है तथा छन्दशास्त्र के रचयिता पिङ्गलाचार्य किस काल में हुए थे यह निश्चित रूप से बता पाना बहुत मुश्किल है फिर भी अनेक विद्वानों ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर आचार्य पिङ्गल के काल-निर्धारण करने का प्रयास किया है। आचार्य षड्गुरुशिष्य ने सर्वानुक्रमणी पर अपनी एक टीका लिखी है उस टीका का नाम वेदार्थदीपिका है। इसमें षड्गुरुशिष्य ने आचार्य पिङ्गल को पाणिनि का छोटा भाई बताया है[15] (मैक्डानल एवं नाणावटी, 2001)। आचार्य षड्गुरुशिष्य के इस मत का समर्थन आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक[16] (मीमांसक, 2009) ने भी किया है। कुछ विद्वान् पाणिनि और पिङ्गल को भाई तथा इन दोनों को आचार्य उपवर्ष के शिष्य के रूप में स्वीकार करते हैं। यदि पिङ्गल पाणिनि के अनुज हैं तो पाणिनि के शालातुर निवासी होने से पिङ्गल शालातुर के निवासी तथा विक्रम पूर्व लगभग अष्टमशती के ग्रन्थकार स्वीकार किये जा सकते हैं[17] (उपाध्याय, 1969)।

---

[15] सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन पाणिन्यनुजेन (वेदार्थदीपिका-3.33)।

[16] युधिष्ठिर मीमांसक, संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, भाग 1, पृ. 183.

[17] संस्कृत शास्त्रों का इतिहास (पृ. 288, बलदेव उपाध्याय)।

4.1 पुराणों के आधार पर पिङ्गल का समय

पुराणों में पिङ्गल नामक नाग का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है। संस्कृत साहित्य में अठारह पुराणों का उल्लेख किया गया है। जिनमें से वामनपुराण में आचार्य पिङ्गल का उल्लेख आचार्य आसुरि के साथ हुआ है[18] (त्रिपाठी, 2002 तथा उपाध्याय, 1969) । अग्निपुराण के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। इस पुराण में 18 विद्याओं का वर्णन प्राप्त होता है। अग्निपुराण के 328वें अध्याय से लेकर 335वें अध्याय तक इन आठ अध्यायों में छन्दों का वर्णन मिलता है तथा छन्दों का यह विवरण पिङ्गल छन्दसूत्र के आधार पर स्वयं पुराण के रचयिता ने निर्दिष्ट किया है[19] (धरन, 1984; तर्करत्न, 1999 तथा ज्ञानी, 1964)। मत्स्यपुराण में जलप्लावन की कथा का वर्णन किया गया है। इस पुराण के 196वें अध्याय के छठे पद्य से लेकर 32वें पद्य तक आचार्य पिङ्गल को नग का पुत्र बताया गया है। इसीलिए आचार्य पिङ्गल (पिङ्गलनाग) को नाग विशेषण के रूप में प्राप्त हुआ है[20] (अग्निहोत्री, 1963)। अठारह पुराणों में स्कन्दपुराण सबसे बड़ा पुराण है जिसमें 81,100 श्लोक प्राप्त होते हैं। इस पुराण के काशीखण्ड में शिवलिंग की प्रतिष्ठा जिस व्यक्ति के द्वारा की गई है वे आचार्य पिङ्गल हैं[21] (गीताप्रेस, 2008)। आचार्य पिङ्गल के द्वारा रचित छन्दसूत्र पर भट्ट हलायुध की टीका सबसे प्रसिद्ध है जिसका नाम मृतसञ्जीवनी है । जिसमें हलायुध ने पिङ्गलनाग नाम का विशेषण 'शिवप्रसादाद्विशुद्धमतिः' दिया है[22] (मिश्र, 2002 तथा मिश्र, 2006)।

4.2 महाभाष्य के आधार पर

महर्षि पतञ्जलि व्याकरण महाभाष्य के रचयिता हैं। अनन्त शर्मा धूपकर (मिश्र, 2002) ने आचार्य पिङ्गल का समय महाभाष्य के आधार पर निश्चित करने की कोशिश की है। महाभाष्य में

---

[18] सनत्कुमारः सनकः,सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च। (व्यास-वामनपुराण 14/25)।

[19] छन्दो वक्ष्ये मूलजैस्तैः पिङ्गलोक्तं यथाक्रमम् (संस्कृत शास्त्रों का इतिहास पृ. 289, बलदेव उपाध्याय)।

[20] द्र. याः षट् पिङ्गलनागाद्यैश्छन्दोविचितयः कृताः (निदानसूत्र भू. पृ. 25)।

[21] व्यास – स्कन्दपुराण – काशी खण्ड (55/2)।

[22] (हलायुध – मृतसंजीवनीवृत्ति – प्रास्तविक श्लोक " स जयति पिङ्गलनागः शिवप्रसादाद्विशुद्धमतिः")।

कुल 85 आह्निक हैं। नवें आह्निक के सूत्र सङ्ख्या 73 में "पैङ्गलकाण्व" नाम से एक शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी आधार पर पिङ्गल के पुत्र पैङ्गल के महाभाष्य में निर्देश के आधार पर आचार्य पिङ्गल को महर्षि पतञ्जलि से पूर्व का स्वीकार करते हैं[23] (शाह, 2010)।

4.3 मीमांसा दर्शन के आधार पर

मीमांसासूत्र के रचयिता महर्षि जैमिनि हैं। पाश्चात्य विद्वान् जैकोबी ने इनका काल ई. पू. 300-200 वर्षों के बीच स्वीकार किया है (मुसलगाँवकर, 1992)। मीमांसासूत्रों पर शबरस्वामी ने एक बृहद् भाष्य की रचना की है। यह ग्रन्थ शाबरभाष्य के नाम से जाना जाता है। शबरस्वामी का काल पाश्चात्य विद्वान् जैकोबी 200-500 ई. के मध्य स्वीकार करते हैं (मुसलगाँवकर, 1992)। शबरस्वामी ने अपने भाष्य में आचार्य पिङ्गल का तथा सर्व गुरु मगण त्रिक का उल्लेख किया है[24] (शर्मा, 1991)।

4.4 पञ्चतन्त्र के आधार पर

इस ग्रन्थ के रचयिता पं॰ विष्णु शर्मा हैं। उपलब्ध अनुवादों के आधार पर इसकी रचना तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आस-पास निर्धारित की गई है। कुछ विद्वानों ने पञ्चतन्त्र के आधार पर भी इनका काल निर्धारण करने का प्रयास किया है। पञ्चतन्त्र के एक पद्य के अनुसार महर्षि पिङ्गलाचार्य को नदी के किनारे एक मगरमच्छ ने निगल लिया था। इसी प्रकार इनके भाई तथा अष्टाध्यायी के रचयिता पाणिनि वन में सिंह के द्वारा मारे गये और मीमांसादर्शनकार महर्षि जैमिनि को हाथी ने मार दिया था[25] (गुप्त एवं झा, 2011)।

---

[23] (पिङ्गलनागविरचितं 'छन्दः शास्त्रम्' काव्यमाला –91, टिप्पणी – अनन्त यज्ञेश्वर शर्मा धूपकर, प्रस्तावना पृ. 5)।

[24] यथा मकारेण पिङ्गलस्य सर्वगुरुस्त्रिकः प्रतीयते(शबरस्वामी मीमांसाभाष्य 1-1-5)। संस्कृत शास्त्रों का इतिहास(पृ. 297, बलदेव उपाध्याय)। तथा शाबरभाष्य (तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी, 1984)।

[25] सिंहोव्याकरणस्य कर्त्तुरहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः, छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकारो वेलातटे पिङ्गलम्। मीमांसा कृतमुन्ममाथ सहसा हस्ति मुनिंजैमिनीम्, अज्ञानावृतचेतसामतिरुषां कोऽर्थस्तिरश्चां गुणैः- (विष्णुशर्मा–पञ्चतन्त्र– 2/26)।

4.5 काव्यमीमांसा के आधार पर

आचार्य राजशेखर एक प्रसिद्ध आलङ्कारिक है । राजशेखर का समय 900-925 ई. स्वीकार किया गया है । राजशेखर ने अपने ग्रन्थ काव्यमीमांसा में उल्लेख किया है कि आचार्य उपवर्ष, वर्ष, पाणिनि, पिङ्गल, व्याडि, वररुचि तथा पतञ्जलि इन सभी आचार्यों की पाटलिपुत्र में परीक्षा हुई थी[26] (नाथ, 1924) । इन सभी साहित्यिक ग्रन्थों के उल्लेख से आचार्य पिङ्गल की प्राचीनता निश्चित रूप से सिद्ध होती है (मिश्र, 2006)।

4.6 आधुनिक विद्वानों के मतानुसार

कुछ विद्वानों का मत है कि छन्दसूत्र के द्वितीय तथा तृतीय अध्याय बाद में जोड़े गये हैं। किन्तु आचार्य पिङ्गल के काल निर्धारण के सम्बन्ध में अगर आधुनिक विद्वानों के मत देखें तो सबसे पहले डा. मनमोहन घोष का नाम आता है । उनके अनुसार छन्दसूत्र के प्रथम अध्याय से लेकर चतुर्थ अध्याय के आरम्भ के 7 सूत्रों को छोड दिया जाये। तथा द्वितीय और तृतीय अध्याय छन्दसूत्र के बाद में जोड़े हुए अङ्ग नहीं हैं, यह मत उनका स्वयं का है[27] (Ghosh, 1931) । लेकिन कुछ विद्वान् छन्दसूत्र के द्वितीय और तृतीय अध्यायों को ही पिङ्गल के द्वारा रचित छन्द वेदाङ्ग का मूल रूप स्वीकार करते हैं। तथा चतुर्थ अध्याय के प्रथम सात सूत्र बाद के प्रक्षेप अर्थात् बाद में जोड़े गये हैं, परन्तु वे और बचे हुए सूत्रों से भी कहीं ज्यादा प्राचीन प्रतीत होते हैं[28] (शर्मा, 1969 तथा शिवकुमार, 1964) । प्रथम अध्याय तथा चौथे अध्याय के आठ सूत्रों तक के रचयिता ने अपने आपको तथा अपने ग्रन्थ को अधिक प्राचीन तथा अधिक प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए द्वितीय और तृतीय अध्यायों को भी अपने ग्रन्थ में मिला लिया[29] (Ghosh, 1931) । छन्दशास्त्र के वैदिक छन्द:प्रकरण का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इसमें वैदिक छन्दों का

---

[26] श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकारपरीक्षा- अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनिपिङ्गलाविह व्याडि:। वररुचिपतञ्जलि इह परीक्षिता: ख्यातिमुपजग्मु:। (राजशेखरविरचित काव्यमीमांसा, अध्याय – 10, पृ.143")।

[27] The Indian Historical Quarterly (39 Vols-Set), Part-1, PP-727-734.

[28] छ. सू. के तृतीय अध्याय के अन्त में छन्दों के ऋषियों, देवताओं, स्वरों तथा वर्णों का उल्लेख वैदिक छन्द: प्रकरण की समाप्ति का संकेत है।

[29] The Indian Historical Quarterly (39 Vols-Set), Part-1, PP-727-734.

वर्णन ऋक्प्रातिशाख्य, निदानसूत्र तथा ऋक्सर्वानुक्रमणी के विवरण की अपेक्षा छन्दशास्त्र की बहुत ही अविकसित तथा उसकी प्रारम्भ की अवस्था को प्रस्तुत करता है। अत: छन्दसूत्र ऋक्प्रातिशाख्य के छन्द:प्रकरण से कहीं अधिक प्राचीन सिद्ध होता है (मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002)।

4.7 वार्तिककार के आधार पर

आचार्य कात्यायन ने महर्षि पाणिनि के सूत्रों पर अपने वार्तिकों की रचना की है। इनका नाम वररुचि भी है तथा वे नौ शुल्बसूत्रों में से एक के रचयिता भी हैं। संस्कृत के विद्वानों के द्वारा आचार्य कात्यायन का स्थितिकाल लगभग 700 ई. के पूर्व स्वीकार किया जा सकता है[30] (मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002)। आचार्य कात्यायन के काल का अध्ययन करके यह बताया जा सकता है कि ऋक्प्रातिशाख्य का छन्द:प्रकरण कात्यायन से प्राचीन प्रतीत होता है। अत: इस दृष्टि से आचार्य पिङ्गल का काल 800 ई.पू. के आसपास होना चाहिए। यह अनेक विद्वानों का मत है[31](शर्मा, 1983)।

4.8 पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

पाश्चात्य विद्वानों का यदि आचार्य पिङ्गल के कालनिर्धारण के सम्बन्ध में मत देखा जाये तो वे इनको ईस्वी पूर्व द्वितीय शती में स्वीकार करते हैं। पिङ्गलसूत्र के विकास के सन्दर्भ में यदि पाश्चात्य विद्वानों का मत देखें तो छन्दसूत्र मान्यता प्राप्त सूत्रकाल के बाद हुआ होगा तथा बहुत शताब्दियों तक छन्दशास्त्र का विकास होता रहा (डॉ. वेबर)। इन सब विद्वानों के अनुसार सूत्रकाल के लगभग 200 वर्ष ई.पू. आचार्य पिङ्गल ने अपने प्रमुख ग्रन्थ छन्दशास्त्र की रचना की होगी ऐसा स्वीकार किया जा सकता है (Paul and Stern, 1951)। लेकिन वास्तव में यदि देखा जाये तो न तो छन्दसूत्र का उदय सूत्रकाल के पश्चात् हुआ और न ही पिङ्गल का छन्दसूत्र अपने विषय का व्यवस्थित प्रथम ग्रन्थ है। वह तो अपने विषय अर्थात् छन्दशास्त्र का सबसे बाद का तथा सबसे छोटा एक आर्षतन्त्र है। विभिन्न विद्वानों का मत देखा जाये तो छन्दशास्त्र के उद्भव से पहले लौकिक तथा वैदिक छन्दों पर बहुत बड़ी सङ्ख्या में बहुत बड़े-बड़े ग्रन्थों की रचना की जा चुकी

---

[30] छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार, प्रथम अध्याय, पृष्ठ सङ्ख्या (31)।

[31] वेदाङ्ग, पृष्ठ सङ्ख्या 493.

थी। आचार्य पिङ्गल ने स्वयं भी अपने से पूर्ववर्ती विभिन्न छन्दशास्त्र प्रवक्ताओं का उल्लेख किया है[32] (मीमांसक, 2009)। पिङ्गलशास्त्र के अलावा भी अनेक शास्त्रों के साहित्य में इनका निर्देश प्राप्त होता है।

श्रीकिशोर मिश्र (2006) ने डॉ. वेबर के मत को उद्धृत करते हुये लिखा है कि वेबर पहले तो छन्दसूत्र को वैदिक सूत्रकाल अर्थात् 500 ई.पू. के लगभग रखने का प्रयास करते हैं तथा इसके द्वितीय और तृतीय अध्यायों को बाद में जोड़नें की अपेक्षा पूर्वकाल का स्वीकार करते हैं। लेकिन जब आचार्य भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र को वेबर ने देखा तो उसके (नाट्यशास्त्र) छन्द:प्रकरण को पिङ्गलसूत्र से कम प्रचलित देखकर उन्होंने पिङ्गलसूत्र को भरतनाट्यशास्त्र से बाद का स्वीकार किया था तथा वेबर ने इसका काल 400-700 ई. के मध्य में स्वीकार किया। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार भी पिङ्गलसूत्र में वैदिक छन्दों का एक प्रकार से व्यवस्थित निरूपण प्राप्त होता है तथा इसमें लौकिक छन्दों का भी वर्णन बहुत ही उत्तम तथा उत्कृष्ट तरीके से किया गया है[33] (मिश्र, 2006)। छन्द के अवयव एवं लय पर भी पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा बहुत सारे शोध का कार्य किये गयें हैं। वैदिक-छन्दोमीमांसा के रचयिता आचार्य युधिष्टिर मीमांसक ने वैदिक तथा लौकिक छन्दों के ज्ञाता भगवान् शिव से लेकर गार्ग्याचार्य तक छन्दशास्त्र के प्रवक्ताओं के नामों का क्रमानुसार उल्लेख ग्रन्थों में स्थित उदाहरणों के अनुसार चारयुगों में विभाजित करके प्रस्तुत किया है[34] (मीमांसक, 2009)। जिसको तालिका सङ्ख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

इस तालिका से यह बात तो स्पष्ट होती है कि आचार्य पिङ्गल से पूर्व के ऐसे तीन आचार्य है जिनके ग्रन्थों में छन्दों के विषयों पर विचार किया गया है। उन आचार्यों के नाम हैं आचार्य भरत, पतञ्जलि और शौनक (मिश्र, 2006)। किन्तु इनके अतिरिक्त ऐसे 8 आचार्यों का उल्लेख पिङ्गल के छन्दसूत्र में प्राप्त होता है जिन्होंने छन्दों के विषय पर अपने-अपने ग्रन्थों की रचना तो की थी परन्तु वर्तमान में उनके छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थ प्राप्त नहीं होते। इससे पता चलता है कि आचार्य भरत का नाट्यशास्त्र आचार्य पिङ्गल के छन्दसूत्र से पूर्व की रचना है।

---

[32] वैदिक-छन्दोमीमांसा, पृष्ठ सङ्ख्या 48.

[33] छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार, प्रथम अध्याय, पृष्ठ सङ्ख्या (31)।

[34] वैदिक-छन्दोमीमांसा, पृष्ठ सङ्ख्या 64.

कृतयुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग के प्रारम्भ में
शिव	माण्डव्य	यास्क	उक्थशास्त्रकार
पार्वती	वसिष्ठ	रात	शौनक
नन्दी	सैतव	क्रौष्टुकि	पिङ्गल
गुह	भरत	कौण्डिन्य	कात्यायन
सनत्कुमार	कोहल	ताण्डी	गरुड़
बृहस्पति		अश्वतर	गार्ग्य
इन्द्र		कम्बल	
शुक्र		काश्यप	
कपिल		पाञ्चाल (बाभ्रव्य)	
		पतञ्जलि	

तालिका 1.1: छन्दशास्त्र के प्रवक्ताओं का क्रम

4.9 पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार

वर्तमान काल में स्थित पुरातत्त्ववेत्ताओं (Archaeologists) ने खोज कर बताया है कि पेशावर जिले में अटक के समीप लाहुर ग्राम ही प्राचीन शालातुर है[35] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। संस्कृत शास्त्रों के प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार दाक्षी पुत्र पाणिनि का समय लगभग 750 ई.पू. के समीप बैठता है (उपाध्याय, 1969)। युधिष्ठिर मीमांसक स्वीकार करते हैं कि यास्क, शौनक, पाणिनि, पिङ्गल, कौत्स आदि सभी आचार्य लगभग एक ही समय में या समकालिक ही हैं। उनके मत से इनके स्थिति-काल में अल्प ही अन्तराल प्रतीत होता है। युधिष्ठिर मीमांसक विक्रम से 2800 वर्ष पूर्व ही इनकी स्थिति स्वीकार करते हैं (मीमांसक, 2009)।

अन्त में निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि आचार्य पिङ्गल के जीवन के विषय में ज्यादा सामाग्री तो प्राप्त नहीं होती है, लेकिन महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध में कुल 20 सर्ग प्राप्त होते हैं। यह ग्रन्थ संस्कृत के छः महाकाव्यों में अपना स्थान रखता है जिसमें कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा का वर्णन है। शिशुपालवध में 4-48 पर मल्लिनाथ ने अपनी टीका में पिङ्गल का समय लगभग चौदहवीं सदी स्वीकार है (शाह, 2010 तथा उपाध्याय, 1969)। महर्षि

[35] पिङ्गल कृत छन्द:सूत्रम्(वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित), पृष्ठ सङ्ख्या (भूमिका- 19)।

कात्यायन रचित सर्वानुक्रमणी पर षड्गुरुशिष्य द्वारा वेदार्थदीपिका नाम से एक सुन्दर व्याख्या प्राप्त होती है जिसमें पिङ्गल का काल बारहवीं सदी स्वीकार किया गया है (मिश्र, 2006; मिश्र, 2002; शाह, 2010 तथा उपाध्याय, 1969)। 'काव्यमीमांसा' कविराज राजशेखर कृत काव्यशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ है। राजशेखर का समय 880-920 ई. स्वीकार किया गया है। 'काव्यमीमांसा' का अभी तक केवल प्रथम अधिकरण 'कविरहस्य' ही प्राप्त है और इसके भी मात्र 18 अध्याय ही मिलते हैं। 19वाँ अध्याय 'भुवनकोश' अप्राप्त है। इसमें राजशेखर ने आचार्य पिङ्गल का समय ईसा की दसवीं सदी स्वीकार किया है (मिश्र, 2002)। महर्षि शौनक द्वारा रचित ऋक्प्रातिशाख्य है जिस पर यजुर्वेद के भाष्यकार उव्वट ने ऋक्प्रातिशाख्य पर लिखी अपनी टीका में आचार्य पिङ्गल का काल ईसा की आठवीं सदी स्वीकार किया है (मिश्र, 2002 तथा शाह, 2010)। आचार्य विष्णुशर्मा द्वारा लिखित पञ्चतन्त्र में पाँच भाग प्राप्त होते हैं। इन्होंने आचार्य पिङ्गल का काल प्राय: ईसा की चौथी सदी स्वीकार किया है (गुप्त एवं झा, 2011)। उपनिदानसूत्र में भी छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है तथा इसके रचयिता महर्षि गार्ग्य है (मिश्र, 2002; शाह, 2010 तथा उपाध्याय, 1969)। यह एक प्राचीन ग्रन्थ है लेकिन इसका समय अज्ञात है। तथा पिङ्गलाचार्य के बाद लिखे गये छन्द के विविध ग्रन्थों एवं व्याख्या ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर पिङ्गलाचार्य के नाम का उल्लेख हुआ है। यह एक दृष्टि से देखा जाये तो उनकी लोकप्रियता को बताता है तथा वहीं दूसरी ओर पिङ्गलाचार्य का समय उन सब आचार्यो से पूर्व है यह सिद्ध करता है। निष्कर्षत: 'छन्दसूत्र' के लेखक का समय, सूत्रकाल में ईसा पूर्व द्वितीय या तृतीय शताब्दी स्वीकृत किया जा सकता है। मेरा स्वयं का मत भी यही है तथा प्रस्तुत लघु-अनुसन्धान में इसी मत का अनुसरण किया गया है (मिश्र, 2006; शाह, 2010 तथा उपाध्याय, 1969)।

पिङ्गलाचार्य का जन्मस्थल एवं निवासस्थान कहाँ था। यह निश्चित रूप से बता पाना मुश्किल है। वेदार्थदीपिकाटीका के रचयिता षड्गुरुशिष्य ने अपनी इस टीका में आचार्य पिङ्गल को महर्षि पाणिनि के छोटे भाई के रूप में स्वीकार किया है (शाह, 2010 तथा मिश्र, 2002)। षड्गुरुशिष्य की इस बात का समर्थन अनेक विद्वानों के द्वारा किया गया है इस आधार पर पिङ्गल

को पाणिनि के अनुज के रूप में स्वीकार करने वाले विद्वान् उनको शालातुर ग्राम का निवासी स्वीकार करें या इनको महर्षि पतञ्जलि के साथ अभिन्न स्वीकार करने वाले (पिङ्गल को) गोनर्दीय स्वीकार कर लें यह उन सबका अपना-अपना मत है। यदि गोनर्द प्रदेश के बारे में देखा जाये तो यह अयोध्या से उत्तर या पश्चिम दिशा में सरयू नदी के निकट कान्यकुब्ज देश के अन्तर्गत आया हुआ प्रदेश था[36] (मीमांसक, 1984) । आचार्य पिङ्गल कृत छन्दसूत्र में दो छन्दों के नाम भौगोलिक संकेत को प्रकट करते हैं । आचार्य पिङ्गल के द्वारा दिये गये 'वानवासिका[37]' और 'अपरान्तिका[38]' छन्दों के नाम के आधार पर अनन्त यज्ञेश्वर धूपकर पिङ्गल को महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश का स्वीकार करते हैं (शाह, 2010) । पश्चिम समुद्र के पास एक प्रदेश है जिसका नाम अपरान्त प्रदेश है। उस प्रदेश की स्त्री को अपरान्तिका कहा जा सकता है । कोंकण के पूर्व में वनवास प्रदेश है । इस प्रदेश की स्त्री वानवासिका कही जा सकती है (शाह, 2010) । इस तरह दोनों प्रदेशों की स्त्रियों की सङ्ज्ञा पर से इन दोनों छन्दों के नाम पिङ्गल ने दिये ऐसा धूपकर स्वीकार करते हैं[39] (मीमांसक, 1984) । पिङ्गल को समुद्र तट पर मगर ने मारा था यह निर्देश भी वे समुद्र के निकट रहने वाले थे इस बात को पुष्ट करता है[40] (गुप्त एवं झा, 2011) । अत: इस आधार पर छन्दसूत्रकार आचार्य पिङ्गल को पश्चिमसमुद्र के तट तथा दक्षिणीकोङ्कण के निवासी स्वीकार किया जा सकता है ।

5. पिङ्गलकृतछन्दसूत्र पर प्रमुख टीकाएँ एवं भाष्य

आचार्य पिङ्गल के द्वारा रचित छन्दसूत्र पर बहुत समय से विद्वानों के द्वारा वृत्ति, टीका तथा भाष्यों (जो दूसरे ग्रन्थों के अर्थ की बृहद व्याख्या या टीका प्रस्तुत करते हैं । उन्हें भाष्य कहते हैं । मुख्य रूप से सूत्र ग्रन्थों पर भाष्य लिखे गये हैं ।) की रचना की जा रही है । छन्दशास्त्र पर लगभग 14 टीकाओं का उल्लेख प्राप्त होता है । छन्दसूत्र पर प्राप्त टीकाओं में 'मृतसञ्जीवनी' टीका सबसे अधिक प्रसिद्ध है । इसके कर्ता भट्ट हलायुध हैं । हलायुध का समय 10वीं शती ई. स्वीकार

---

[36] संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ सङ्ख्या (5) ।

[37] छन्दसूत्र (4/43) ।

[38] छन्दसूत्र (4/41) ।

[39] संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ सङ्ख्या (5) ।

[40] पिंगलाचार्य के आसन्नपूर्वोत्तरकालिक संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त लौकिक छन्द, पृष्ठ सङ्ख्या (5) ।

किया गया है। इस टीका का बंगला भाषा में भी अनुवाद प्राप्त होता है तथा इसका पहला संस्करण 1835 में छात्रपुस्तकालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ है । जिसके सम्पादनकर्ता श्री सीतानाथ सामाध्यायी भट्टाचार्य हैं (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997) । भट्ट हलायुध का एक और ग्रन्थ 'कविरहस्य' नाम से प्राप्त होता है । उनके प्रथम आश्रयदाता राष्ट्रकूटवंशीय कृष्णराज अकालवर्ष द्वितीय (ई.स. 945-966) थे । उनके दूसरे आश्रयदाता खुडिगदेव (ई.स. 966-975) थे जो कृष्णराज के वैमात्रेय भ्राता थे। उनके तीसरे आश्रयदाता धारा नगरी के राजा वाक्पतिराज मुञ्ज थे। हलायुध की टीका संक्षिप्त तथा प्रामाणिक है । छन्दसूत्र पर दूसरा भाष्य 'पिङ्गलनागच्छन्दोविचितिभाष्य' नाम से प्राप्त होता है । इस भाष्य के कर्ता विशिष्टाद्वैत मत के प्रवर्तक रामानुजाचार्य (1017-1137 ई.स.) के गुरु यादवप्रकाश है । यादवप्रकाश का काल 10वीं शताब्दी के अन्तिम चरण और 11वीं शताब्दी के प्रथम चरण के मध्य विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)। यादवप्रकाश के द्वारा अन्य दो ग्रन्थों की भी रचना की गई है जिनके नाम वैजयन्तीकोष (इस ग्रन्थ में वैदिक शब्दों का संकलन है) तथा यतिधर्मसूत्र (इसमें संन्यासियों के क्रिया-कलापों के विषय में बताया है यह ग्रन्थ अभी तक हस्तलेखों में ही प्राप्त हुआ है) हैं। अपने ग्रन्थ में यादवप्रकाश ने वैदिक तथा लौकिक छन्दों का वर्णन करते हुए उदाहरण स्वयं के द्वारा रचित पद्यों से दिये हैं । नवीन छन्दों की कल्पना भी उन्होंने की है और उनके लक्षण पिङ्गल की ही शैली में दिये हैं । पिङ्गलच्छन्दसूत्र के तीसरे टीकाकार के रूप में आचार्य भास्कर्राय को जाना जाता है। भास्कर्राय का काल 1680-1745 ई. के लगभग स्वीकार किया गया है। वह मूल रूप से महाराष्ट्र के रहने वाले थे तथा बाद में काशी में रहने लगे। इन्होंने सत्रह वर्ष की आयु में छन्द:कौस्तुभ ग्रन्थ की रचना की तथा बीस वर्ष की अवस्था में वृत्तरत्नाकर पर मृतसञ्जीवनी टीका की व्याख्या लिखी। इनके अलावा वृत्तचन्द्रोदय तथा भाष्यराज इत्यादि ग्रन्थों की भी रचना की (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)। इनका एक ग्रन्थ वादकुतूहल भी प्राप्त होता है (मिश्र, 2002)। ये तीनों पिङ्गलच्छन्दसूत्र के प्रमुख आचार्य हैं। लेकिन और भी आचार्यों के द्वारा छन्दों के ग्रन्थों की रचना की गयी है जिनका विस्तार से वर्णन आगे किया गया है।

6. छन्द-प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय

संस्कृत वाङ्मय में प्राप्त छन्दशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के द्वारा बहुत सारे ग्रन्थों की रचना की गई । इनका विस्तृत विवरण तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा रहा है । प्रथम श्रेणी में वैदिक छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों का, द्वितीय श्रेणी में लौकिक छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों का तथा तृतीय श्रेणी में वैदिक और लौकिक दोनों छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों के विषय में बताया गया है।

6.1 वैदिक छन्द प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय

संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में वेदों को किसी व्यक्ति-विशेष की रचना न मानकर अपौरुषेय शब्दराशि के रूप में स्वीकार किया है तथा वैदिक शब्दराशि में प्राप्त छन्दों का प्रतिपादन मुख्य रूप से वेदाङ्ग, वेदों के उप अङ्ग तथा अनुक्रमणिका ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्राप्त होता है । वैदिक छन्द से सम्बन्धित प्रतिपाद्य ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है:

6.1.1 ऋक्-प्रातिशाख्य

ऋक्प्रातिशाख्य के रचनाकार आचार्य आश्वलायन के गुरु महर्षि शौनक हैं (उपाध्याय, 1955)। इसमें लगभग सभी वैदिक छन्दों के लक्षण के साथ-साथ उदाहरण का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसका आधार भी ब्राह्मण ग्रन्थ ही है। इसमें वर्णित छन्दों का विवरण कात्यायन द्वारा रचित ऋक्सर्वानुक्रमणी से प्राचीन है तथा यास्क से नवीन है (वर्मा, 1992 तथा शास्त्री, 1931)। ऋक्प्रातिशाख्य में ऋग्वेद की शाकल शाखा की एकमात्र उपलब्ध शैशिरीय उपशाखा का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। ऋक्प्रातिशाख्य के छन्द:प्रकरण की एक विशेषता प्रगाथ छन्दों का विवरण है। ऋक्प्रातिशाख्य में 23 प्रगाथ छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है (वर्मा, 1992 तथा शास्त्री, 1931)। जब किसी याज्ञिक क्रिया की सिद्धि के लिए या किसी अन्य कारण से दो-तीन छन्दों का समूह बनाया जाता है, तब उस छन्द समूह को प्रगाथ कहते हैं। इस शब्द का मुख्यत: प्रयोग सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों में किया गया है। ऋक्प्रातिशाख्य का विभाजन पटलों में हुआ है। इसमें कुल 18 पटल हैं। सभी पटलों में स्वर, वर्ण, सन्धि, तथा छन्दों का विवेचन किया

गया है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997) । इसके सोलह से लेकर अठारह पटल (अन्तिम तीन पटलों में) तक छन्दों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है । इसमें कुल 188 छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण प्राप्त होते हैं । इन 188 छन्दों में से शौनक ने 64 छन्दों का लक्षण स्वयं दिया है तथा अन्य छन्दों के लक्षण पूर्व ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं । इन्होंने पहले से लक्षित कुछ छन्दों के नाम भी परिवर्तित कर दिये हैं (वर्मा, 1992; शास्त्री, 1931 तथा मिश्र, 2006) ।

6.1.2 निदानसूत्र

निदानसूत्र सामवेद की प्राप्त तीन शाखाओं में से कौथुमीयशाखा से सम्बन्धित है । निदानसूत्र के रचयिता महर्षि पतञ्जलि है । इनका काल 200 ई. पू. स्वीकार किया जाता है (भटनागर, 1971; मीमांसक, 2009; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा अग्निहोत्री, 1963) । निदानसूत्र में 10 प्रपाठक हैं एवं प्रत्येक प्रपाठक में 13 खण्ड हैं । प्रथम प्रपाठक के प्रथम सात खण्डों में छन्दों से सम्बन्धित वर्णन मिलते हैं । इस प्रकरण का नाम छन्दोविचिति है । प्रथम 6 खण्डों में छन्दों के लक्षण हैं एवं सातवें खण्ड में यतिविषयक वर्णन है । निदानसूत्र में 144 छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है । अध्ययन से स्पष्ट है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि के समय तक निदानसूत्र की रचना हो चुकी थी[41] (अग्निहोत्री, 1963) । अत: यह तृतीय शती ई.पू. से बाद का ग्रन्थ नहीं हो सकता । युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार निदानसूत्र के आचार्य पतञ्जलि शौनक के पूर्ववर्ती द्वापर काल से सम्बन्ध रखते हैं[42] (भटनागर, 1971; मीमांसक, 2009; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा अग्निहोत्री, 1963) । इस सूत्र में पतञ्जलि ने 27 छन्दों के भेदों-प्रभेदों की चर्चा की है । निदानसूत्र के जिन प्रपाठकों में छन्दों का उल्लेख हुआ है उस भाग पर तातप्रसाद द्वारा रचित तत्त्वसुबोधिनी नामक वृत्ति उपलब्ध होती है । निदानसूत्र में अर्थ को प्रधानता दी गई है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997; भटनागर, 1971; मीमांसक, 2009 तथा अग्निहोत्री, 1963) ।

---

[41] प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पतञ्जलिकालीन भारत पृष्ठ सङ्ख्या 465.

[42] वैदिकच्छन्दोमीमांसा, पृष्ठ सङ्ख्या - 59.

6.1.3 ऋक्सर्वानुक्रमणी

आचार्य कात्यायन के द्वारा रचित ऋक्सर्वानुक्रमणी है । आचार्य कात्यायन ने महर्षि पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिकों की रचना की है । इनका एक नाम वररुचि भी जाना जाता है ये नौ शुल्बसूत्रों में से एक के रचयिता भी हैं । संस्कृत के विद्वानों के द्वारा आचार्य कात्यायन का स्थितिकाल लगभग 700 ई. के पूर्व स्वीकार किया जा सकता है[43] (मिश्र, 2006) । इस ग्रन्थ में 68 छन्द के भेदों का वर्णन है । कात्यायन ने पाँच प्रगाथों का उल्लेख किया है । ऋक्सर्वानुक्रमणी के छन्दसूत्रों पर आचार्य षड्गुरुशिष्य का भाष्य प्राप्त होता है ऋक्सर्वानुक्रमणी में ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त का प्रतीक, ऋक्सङ्ख्या, ऋषि तथा देवता के निर्देश के साथ प्रत्येक सूक्त अथवा उसके भागों के छन्दों का भी पूर्ण विवरण दिया गया है । ऋक्सर्वानुक्रमणी ऋक्प्रातिशाख्य के छन्द:प्रकरण से बाद की रचना है और अधिकतर ऋक्प्रातिशाख्य के द्वारा निर्दिष्ट छन्दों का अनुसरण करती है । किन्तु कहीं-कहीं उससे भिन्न मत भी व्यक्त करती है । इसमें छन्द का लक्षण इस प्रकार किया गया है[44] । कात्यायन ने ऋग्वेद में गायत्री से अतिधृति छन्द तक कुल चौदह छन्द स्वीकार किये हैं (मिश्र, 1990) । उन्होंने प्राय: शौनकीय प्रातिशाख्य के छन्द:प्रकरण का अनुसरण किया है[45] (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा मिश्र, 2006) ।

6.2 लौकिक छन्द प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय

लौकिक साहित्य में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को लौकिक छन्द कहते हैं । लौकिक छन्दों से सम्बन्धित प्रमुख शास्त्रों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है:-

6.2.1 नाट्यशास्त्र

नाट्यशास्त्र के रचयिता आचार्य भरतमुनि हैं । भरत के काल-निर्धारण के विषय में निश्चित रूप से स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती है किन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार भरतमुनि का

---

[43] छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार, प्रथम अध्याय, पृष्ठ सङ्ख्या (31) ।

[44] यदक्षरपरिमाणं तच्छन्द: । ऋक्सर्वानुक्रमणि- 2/6.

[45] आचार्य कात्यायन के कालनिर्धारण हेतु द्रष्टव्य ग्रन्थ—वाजसनेय प्रातिशाख्य—एक परिशीलन (प्रो. युगलकिशोर मिश्र) सं. सं. वि. वि., वाराणसी से प्रकाशित तथा कात्यायनीय-मूल्याध्याय-परिशिष्टम् की भूमिका (आचार्य गोपालचन्द्र मिश्र—ग्रन्थमाला, तृतीय पुष्प, 2047 वि. में वाराणसी से प्रकाशित) ।

काल 200 ई. पूर्व के आसपास स्वीकार किया गया है (चतुर्वेदी, 2011; नागर, 1989 तथा शुक्ल, 1975)। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में स्वीकृत 36 मूल तत्वों के प्रतीक स्वरूप नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ में मूलत: 12,000 पद्य तथा कुछ गद्यांश भी थे, इसी कारण इसे 'द्वादशसाहस्त्री संहिता' भी कहा जाता है (शर्मा, 1980; उपाध्याय, 1980; बन्द्योपाध्याय, 1985; शिरोमणि एवं नगेन्द्र, 1960 तथा शास्त्री, 1975)। परन्तु कालक्रमानुसार इसका संक्षिप्त संस्करण प्रचलित हो गया जिसमें 6000 पद्य ही रह गये और यह संक्षिप्त संहिता 'षट्साहस्त्री' के नाम से प्रचलित हुई (बन्द्योपाध्याय, 1985; शिरोमणि एवं नगेन्द्र, 1960 तथा शास्त्री, 1975)। भरतमुनि उभय (द्वादशसाहस्त्री तथा षट्साहस्त्री) संहिता के प्रणेता स्वीकार किये जाते हैं तथा प्राचीन टीकाकारों द्वारा उनका 'द्वादश साहस्त्रीकार' और 'षट्साहस्त्रीकार' की उपाधि से परामर्श यत्र-तत्र किया गया है। इसके वाक्य 'भरतसूत्र' कहे जाते हैं (शुक्ल, 1975; बन्द्योपाध्याय, 1985; शिरोमणि एवं नगेन्द्र, 1960 तथा शास्त्री, 1975)। इसमें वैदिक छन्दों का वर्णन नहीं किया गया है। नाट्यशास्त्र में सभी छन्दों के लक्षण संस्कृत में कारिका के रूप में प्राप्त होते हैं। अधिकांश कारिकाएँ अनुष्टुप् छन्द में लिखी गयी हैं। नाट्यशास्त्र के 36 अध्यायों में से दो अध्यायों 15वें तथा 16वें में छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है। 15वें अध्याय में छन्दों के प्रथमादि तीन सप्तकों को क्रमश: दिव्य, दिव्येतर और दिव्यमानुष सङ्ज्ञा से व्यवहृत किया गया है। यहाँ 1 से 26 अक्षरों तक के छन्दों का भेदोपभेद देते हुए विवेचन किया गया है और अन्त में लघु, गुरु, यति तथा मात्रा आदि पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या दी गयी है। 16वें अध्याय का नाम छन्दोविचिति है। इसमें वाचिकाभिनय में उपयोगी वृत्तों का सोदाहरण विवेचन है और अन्त में सम तथा विषम वृत्त छन्दों के साथ-साथ आर्या के प्रभेदों का विवरण दिया गया है (नागर, 1989; शास्त्री, 1975; शर्मा, 1980; उपाध्याय, 1980 तथा शुक्ल, 1975)।

6.2.2 श्रुतबोध

महाकवि कालिदास द्वारा रचित श्रुतबोध लौकिक छन्दों को जानने के लिए सर्वाधिक लोकप्रचलित तथा एक लघु ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ साहित्यिक दृष्टि से अति सरल है। इसमें गणों के नाम तथा स्वरूप का उल्लेख है (पद्य 3), परन्तु गणपद्धति का उपयोग लक्षण-विन्यास के लिए नहीं किया गया है। लघु-गुरु पद्धति ही इसमें प्रयुक्त है, तथा लक्षण एवं लक्ष्य दोनों का वर्णन एक ही पद्य में किया गया है। श्रुतबोध में कुल 43 पद्य हैं, अगर प्रथम मंगल पद्य को छोड़ दिया जाये तो सब पद्यों का सम्बन्ध विषय-प्रतिपादन से है (जोशी, 2003 तथा कृष्णदास, 1988)। श्रुतबोध में केवल तीन मात्रिक छन्दों आर्या, गीति तथा उपगीति इनका ही लक्षण दिया है और इसमें वार्णिक छन्दों में 27 वृत्तों का वर्णन प्राप्त होता है। दोनों को मिलाकर छन्दों की सङ्ख्या 40 है। इस ग्रन्थ में जिस छन्द का उल्लेख जिस पद्य में लक्षण के रूप में हुआ है उस छन्द का वही पद्य उदाहरण भी है। लोक व्यवहार की दृष्टि की प्रधानता को ध्यान में रखते हुए कालिदास ने न तो वैदिक छन्दों का वर्णन किया है और न ही दण्डक तथा न षट्प्रत्ययों का प्रतिपादन है। सरलता से छन्दों का ज्ञान कराने में श्रुतबोध अपना अग्रणी स्थान रखता है। ग्रन्थ की शैली सरल तथा हृदयग्राहिणी है। इस लघु ग्रन्थ पर लगभग 10 टीकाओं की रचना हुई है। जिनमें मनोहर शर्मा की सुबोधिनी टीका प्रसिद्ध है[46] (जोशी, 2003 तथा कृष्णदास, 1988)।

6.2.3 छन्दोऽनुशासन

इस ग्रन्थ के मंगलाचरण में जयकीर्त्ति ने वर्धमान (जैन तीर्थकार) की वन्दना की है। जिससे इनका जैनत्व प्रकट होता है। छन्दोऽनुशासन के रचयिता जैनमतावलम्बी जयकीर्त्ति हैं।

---

[46] श्रुतबोध की अन्य टीकाओं में – माधवकृत(ज्योत्स्ना), ताराचन्द्र(बालविवेकिनी), तथा हर्षकीर्ति, वासुदेव, भोलानाथ, एकदन्त, वरशर्मा आदि की टीकायें प्रचलित हैं। नवीन टीकाओं में कुशेश्वर शर्मा कुमर रचित (संस्कृतटीका) (1849 शक में दरभंगा से प्रकाशित), कनकलाल ठक्कुर रचित (विमला संस्कृतटीका) (चौखम्भा, वाराणसी से 1949 ई. में प्रकाशित समास, व्याकरणादि विवेचन से युक्त), गौरीनाथ पाठक रचित (सुबोधिनी) टीका (वाराणसी से प्रकाशित) आदि छात्रोपयोगी तथा हिन्दी अनुवाद से संवलित हैं।

यह ग्रन्थ केवल लौकिक छन्दों का विवरण है[47] (वेलणकर, 1949) । इनका समय ईसा की 10वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्वीकार किया गया है । इसका विभाजन अधिकारों में हुआ है । इस ग्रन्थ में कुल आठ अधिकार हैं, जिनमें केवल लौकिक छन्दों का ही विवरण है । छन्दोऽनुशासन के सप्तम अधिकार में कन्नड़भाषा के छन्दों का भी उल्लेख प्राप्त होता है, इस आधार पर ग्रन्थकार के कन्नड़-भाषाभाषी होने का अनुमान भी लगाया जा सकता है । जयकीर्त्ति का समग्र ग्रन्थ आर्या तथा अनुष्टुप् छन्दों में ही निबद्ध है । जयकीर्त्ति ने कन्नड़भाषा के कवि असग (10वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) का अपनी रचना में उल्लेख किया है (वेलणकर, 1949; मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002) । प्रथम अधिकार में गुरु-लघु वर्ण गण, यति विवेचन के साथ उक्ता से उत्कृति-पर्यन्त 26 छन्दों का उल्लेख है । द्वितीय अधिकार में 273 समवृत्तों, तृतीय अधिकार में 26 अर्धसमवृत्तों, चौथे अधिकार में 32 विषमवृत्तों, पाँचवें अधिकार में 26 मात्रावृत्तों, छठे अधिकार में 32 मिश्रितवृत्तों एवं 18 दण्डकों के लक्षण दिये गये हैं । सातवें अधिकार में कन्नड़ भाषा के 14 छन्दों के लक्षण और आठवें अधिकार में छन्दों की प्रस्तार प्रक्रिया का विवेचन है । इस ग्रन्थ में कुल 271 सूत्र, 215 पद्य एवं 403 संस्कृतवृत्त तथा 14 छन्द कन्नड़भाषिक प्राप्त होते हैं । 403 छन्दों में से जयकीर्त्ति के नवीन लक्षित 161 छन्द प्राप्त होते हैं (वेलणकर, 1949; मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002) ।

6.2.4 सुवृत्ततिलक

इसके रचयिता आचार्य क्षेमेन्द्र हैं । विद्वानों के द्वारा इन्हें व्यासदास, सर्वमनीषिशिष्य और परममहेश्वर इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है । सुवृत्ततिलक एक प्रसिद्ध छन्दों से सम्बन्धित रचना है । विद्वान् इन्हें कश्मीर के महाकवि के रूप में स्वीकार करते हैं । इनका समय 11वीं शती का मध्यकाल (लगभग 1025 ई. से 1075 ई. तक) स्वीकार किया

[47] एच.डी. वेलणकर द्वारा सम्पादित तथा जयदामन (हरितोषमाला 1) के अन्तर्गत हरितोष समिति, बम्बई द्वारा प्रकाशित (केवल मूल संस्कृत, पृष्ठ सङ्ख्या 42-70) 1949 ई.।

गया है[48] (उपाध्याय, 1969) । क्षेमेन्द्र की कुल तीन रचनाएँ हैं- समयमातृका, दशावतारचरित और बृहत्कथामञ्जरी । क्षेमेन्द्र ने इस ग्रन्थ में पहले छन्द का लक्षण दिया है और उसके पश्चात् अपने ग्रन्थों से उदाहरण दिये हैं । इसमें छन्दों के नाम दो बार प्रयोग हुए हैं, एक बार लक्षण में तथा दूसरी बार उदाहरण में । इस ग्रन्थ का विभाजन विन्यासों में हुआ है । यह ग्रन्थ तीन विन्यास में विभक्त है । पहले विन्यास में छन्दों का लक्षण श्लोकों में तथा उदाहरण स्वरचित पद्यों में दिया हुआ है । सुवृत्ततिलक में 27 छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण दिये गये हैं तथा इसमें प्रसिद्ध वार्णिक छन्दों का वर्णन भी प्राप्त होता है । द्वितीय विन्यास में साहित्यकारों तथा महाकवियों (कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, राजशेखर, श्रीहर्ष) इत्यादि की रचनाओं के कुछ अंश प्राप्त होते हैं (झा, 1968; मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002) । जिनमें छन्दशास्त्र के नियमों का पालन नहीं किया गया है इसलिये इसमें 19 छन्दों के गुण-दोष के विषय में विचार किया गया है । तृतीय विन्यास में 12 छन्दों के प्रयोग विषय बताये गये हैं । क्षेमेन्द्र के इस ग्रन्थ के तीनों विन्यासों में 124 कारिकायें और 90 उदाहरण पद्य मिलते हैं । इसमें ग्रन्थकार द्वारा नवीन लक्षित छन्दों का प्रयोग नहीं किया गया है । इस ग्रन्थ में मात्रिक छन्दों का अभाव है । इस ग्रन्थ पर प्रभा नामक छात्रोपयोगी संस्कृतटीका पं. व्रजमोहन झा द्वारा लिखी गई है (झा, 1968 तथा मिश्र, 2006) ।

6.2.5 वृत्तरत्नाकर

वृत्तरत्नाकर के रचयिता कश्यप वंशीय आचार्य पब्येकभट्ट (पब्बेक) के पुत्र केदारभट्ट हैं । आचार्य पब्बेक शैवसिद्धान्त के वेत्ता थे । विद्वानों के द्वारा इनका काल 11वीं शती का पूर्वार्ध स्वीकार किया है (भट्ट, 1949; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012; शास्त्री, 2014 तथा मिश्र, 2006) । वृत्तरत्नाकर में केवल पद्य ही प्राप्त होते हैं । केदारभट्ट द्वारा छन्दों का लक्षण गणों के द्वारा किया गया है । वृत्तरत्नाकर की सबसे पुरानी हस्तलिखित प्रति राजस्थान के जैसलमेर के पुस्तकालय में सुरक्षित रखी है । इसकी अनेक पाण्डुलिपियाँ भी प्राप्त होती हैं । केदारभट्ट मध्यकाल के प्रसिद्ध छन्दशास्त्री रहें हैं । इन्होंने छन्दों के वर्णन में न तो अधिक विस्तार किया है

[48] बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहिय का इतिहास, पृ. 274-281.

और न ही संक्षिप्त रूप रखा है। उनका परिचय मध्यम मार्ग का प्रतीत होता है। इस ग्रन्थ के छः अध्यायों में 63 कारिकाएँ, 28 अर्धकारिकाएँ, 120 लक्षणसूत्र एवं 172 छन्दों के लक्षण किये गये हैं। पूरा ग्रन्थ 136 पद्यों में प्राप्त होता है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मगण आदि पर विचार हुआ है। द्वितीय अध्याय में मात्रिक छन्दों के 39 लक्षण तथा उदाहरण प्राप्त हैं। तृतीय अध्याय में 26 छन्दोजातियों में 110 छन्द वर्णित हैं। चतुर्थ अध्याय में 11 अर्धसमवृत्तों के लक्षण तथा पाँचवें अध्याय में 12 विषमवृत्त वर्णित हैं। अन्तिम षष्ठ अध्याय में छन्द से सम्बन्धित नष्टादि प्रत्ययों की चर्चा हैं (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012; शास्त्री, 2014 तथा मिश्र, 2006)।

6.2.6 छन्दोमञ्जरी

इस ग्रन्थ के रचयिता गङ्गादास परम वैष्णव थे। इन्होंने अपनी रचनाओं का आधार श्रीकृष्ण को बनाया है। इनका काल 15वीं शती स्वीकार किया गया है (तैलङ्ग, 2013; भट्ट, 1935 तथा मिश्र, 2002)। छन्दोमञ्जरी का विभाजन स्तवकों में हुआ है। इसमें छः स्तवक प्राप्त होते हैं। इस ग्रन्थ के लक्षणों की पद्धति वृत्तरत्नाकर के समान ही है। इस पर छः से अधिक टीकाएँ मिलती हैं। इनमें चन्द्रशेखर की छन्दोमञ्जरी-जीवन नामक टीका प्राप्त होती है। छन्दोमञ्जरी में केवल व्यवहारप्रसिद्ध छन्दों का ही वर्णन प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ के छः स्तवकों में कुल 45 कारिकाएँ, 7 अर्धकारिकाएँ एवं 132 लक्षण सूत्र हैं। इस ग्रन्थ में 159 छन्दों का वर्णन है। जिनमें 131 समवृत्त, 6 अर्धसमवृत्त, 5 विषमवृत्त, 14 मात्रावृत्त एवं 3 गद्यखण्ड प्राप्त होते हैं। इस प्रकार यह ग्रन्थ छन्दशास्त्रीय लक्षण ग्रन्थ होने के साथ श्रीकृष्ण के लीला वर्णन द्वारा संस्कृत का एक गीतिकाव्य भी है। इसमें गङ्गादास ने अपने 14 नवीन छन्दों का योगदान दिया है। (तैलङ्ग, 2013; त्रिपाठी, 2012 तथा मिश्र, 2006)।

6.3 वैदिक तथा लौकिक दोनों छन्दों के प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय

जिन शास्त्रों में वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया हैं। उन शास्त्रों का सामान्य परिचय निम्नलिखित है:-

6.3.1 छन्द:सूत्र

पिङ्गलछन्दसूत्र' अथवा 'पिङ्गलछन्दशास्त्र' के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं । इनके सबसे प्रसिद्ध वृत्तिकार हलायुध हैं । यह ग्रन्थ सूत्रों में प्राप्त होता है । यह ग्रन्थ 8 अध्यायों में विभाजित है, जिनमें 308 सूत्र हैं । प्रथम अध्याय से चतुर्थ अध्याय के 7वें सूत्र तक 119 वैदिक छन्दों का विवेचन प्राप्त होता है (नाथ, 1957; शर्मा, 1969 तथा मिश्र, 2002) । और अधिक जानकारी इसी अध्याय में छन्दशास्त्र के परिचय में विस्तार से बता दी गयी है । चतुर्थ अध्याय के 8वें सूत्र से ग्रन्थ की समाप्ति तक लौकिक छन्दों का विवरण मिलता है जिसमें गण व्यवस्था, मात्रिक, वर्णिक तथा गाथा छन्दों के विभाजन के साथ 162 लौकिक छन्दों के लक्षण प्राप्त होते हैं किन्तु इनके उदाहरण नहीं दिये गये हैं (नाथ, 1957 तथा शर्मा, 1969) ।

6.3.2 अग्निपुराण

अग्निपुराण पुराण साहित्य में अपनी व्यापक दृष्टि तथा विशाल ज्ञान भण्डार के कारण विशिष्ट स्थान रखता है । इसमें परा-अपरा विद्याओं का वर्णन, महाभारत के सभी पर्वों की संक्षिप्त कथा, रामायण की संक्षिप्त कथा, मत्स्य, कूर्म आदि अवतारों की कथाएँ, सृष्टि-वर्णन, दीक्षा-विधि, वास्तु-पूजा, विभिन्न देवताओं के मन्त्र आदि अनेक उपयोगी विषयों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है । अग्निपुराण में वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों की चर्चा है। इसके छन्द प्रकरण में श्लोक के लक्षण तो दिये गये हैं किन्तु उदाहरण प्राप्त नहीं होते । इस पुराण में प्रत्ययों पर भी थोड़ा बहुत विचार हुआ है (कीथ, 1967 तथा शास्त्री, 1978-1986) । अग्निपुराण में नवीन रूप से लक्षित 32 लौकिक छन्द प्राप्त होते हैं । अग्निपुराण में छन्दों का विवरण 'आग्नेय छन्द:सार' शीर्षक से हुआ है । अग्निपुराण में 383 अध्याय हैं जिनमें 11457 अनुष्टुप् छन्द के श्लोक हैं । अग्निपुराण के 328 से 335 तक के आठ अध्यायों में क्रमश: परिभाषा, दैवी आदि सङ्ज्ञाएँ, पादादि अधिकार, उत्कृति आदि छन्द और आर्या आदि मात्रावृत्त, विषमवृत्त, अर्द्धसमवृत्त, समवृत्त, प्रस्तार आदि का वर्णन मिलता है । इनमें प्रथम तीन अध्यायों

में वैदिक छन्दों का तथा शेष पाँच अध्यायों में लौकिक छन्दों का विवरण प्राय: 100 अनुष्टुप् छन्द के पद्यों में है। अग्निपुराण में प्राप्त छन्द:प्रकरण आचार्य पिङ्गल के छन्दसूत्र के आधार पर लिखा गया है[49] (तर्करत्न, 1999; शर्मा, 1985; ज्ञानी, 1964 तथा धरन, 1984)। आचार्य बलदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित अग्निपुराण के प्रथम तीन अध्यायों में क्रमश: 3, 5 तथा 22 श्लोक प्राप्त होते हैं और शेष पाँच अध्यायों में क्रमश: 19, 10, 6, 30, तथा 5 श्लोक प्राप्त होते हैं। अग्निपुराण के स्वतन्त्र रूप से लक्षित चार वैदिक छन्द हैं, शेष छन्द पतञ्जलि, शौनक, भरत, पिङ्गल आदि पूर्ववर्ती छन्दशास्त्रकारों की रचनाओं में प्रयोग हो चुके हैं (शर्मा, 1985; ज्ञानी, 1964; धरन, 1984; उपाध्याय, 1966 तथा शर्मा, 1969)।

6.3.3 वृत्तमुक्तावली

इस ग्रन्थ के कर्ता का नाम तेलङ्गवंशीय कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट है। इस ग्रन्थ का विभाजन गुम्फ़ों में हुआ है। इसमें तीन गुम्फ़ प्राप्त होते हैं। ये सवाई जयसिंह के सभाकवि थे । इनकी संस्कृत में 7 रचनाएँ तथा व्रजभाषा में 13 रचनाएँ प्राप्त होती हैं। इनका समय विद्वानों के द्वारा 1788 – 1799 ई. के मध्य स्वीकार किया है। इसके तीन गुम्फ़ों में से पहले गुम्फ़ में वैदिक छन्द, दूसरे गुम्फ़ में मात्रिक छन्द तथा तीसरे गुम्फ़ में वार्णिक छन्दों का उल्लेख हुआ है। इनकी व्रजभाषा में वृत्तचन्द्रिका तथा संस्कृत में वृत्तमुक्तावली इत्यादि रचनाएँ प्राप्त होती हैं। इसमें श्रीकृष्णभट्ट के 4 नवीन छन्दों का उल्लेख है (भट्ट, 1953 तथा मिश्र, 2006)।

6.3.4 छन्दोऽनुशासन

इसके रचयिता श्री देवचन्द्र सूरि के शिष्य हेमचन्द्र हैं। इस ग्रन्थ में प्राकृत तथा अपभ्रंश छन्दों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इन्होंने छन्दोऽनुशासन पर छन्दश्चूडामणि नाम से स्वयं ही वृत्ति लिखी है (वेलणकर, 1949; मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002)। इस ग्रन्थ में आठ अध्याय प्राप्त होते हैं। छन्दोऽनुशासन मूलग्रन्थ 763 में सूत्र प्राप्त होते हैं। हेमचन्द्र ने पुराने छन्दों के नवीन भेदों का वर्णन भी अपने ग्रन्थ में किया है । इन्होंने स्वरचित छन्दों को

[49] छन्दो वक्ष्ये मूलजैस्तै (पा. मूलशब्दै:) पिङ्गलोक्तं यथाक्रमम्। अग्निपुराण 328/1.

उदाहरणों के रूप में दिया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ सूत्रबद्ध है । इसमें 979 छन्दों के लक्षण हैं तथा संस्कृत के 625 छन्दों का वर्णन दूसरे, तीसरे तथा चौथे अध्याय में किया है । हेमचन्द्र के तीन ग्रन्थ अनुशासनत्रयी के अन्तर्गत आते हैं- छन्दोऽनुशासन, काव्यानुशासन तथा हैमशब्दानुशासन इत्यादि (वेलणकर, 1949) । हेमचन्द्रत्रयी ने क्रमश: छन्द, अलङ्कार तथा शब्दों का प्रयोग शास्त्रीय पद्धति से कर संस्कृत-साहित्य में ख्याति प्राप्त की है । इनको चाङ्गदेव तथा हेमाचार्य नामों से भी जाना जाता है । ये श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते थे । इनके जैनधर्म सम्बन्धी ग्रन्थ योगशास्त्र तथा त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित इत्यादि हैं । इनका प्राकृतभाषा में कुमारपालचरित महाकाव्य प्राप्त होता है । हेमचन्द्राचार्य ने पद्य काव्यों के अन्तर्गत ही छन्द स्वीकार किये हैं[50] । हेमचन्द्र ने पूर्वाचार्यों में सबसे अधिक उल्लेख भरत का किया है । छन्दोऽनुशासन के द्वितीय, तृतीय तथा चौथे अध्यायों में जिन 625 संस्कृत छन्दों के लक्षण दिये गये हैं, उनमें भरत तथा पिङ्गलाचार्य के ग्रन्थों में छन्दों का प्रयोग हो चुका है । इनका संस्कृत–साहित्य में केवल 91 छन्दों में योगदान है । इनका काल लगभग वि.सं. 1145-1229 स्वीकार किया गया है । (वेलणकर, 1949) ।

6.3.5 जयदेवच्छन्द

जयदेवच्छन्द के रचयिता जैन आचार्य जयदेव हैं । जयदेव आचार्य पिङ्गल के टीकाकार भट्टहलायुध (10वीं सदी का अन्तिम चरण) ने इनके मत का खण्डन दो स्थानों पर किया है तथा भट्टहलायुध ने जयदेव[51] के मत का खण्डन श्वेतपट नाम से किया है (हर्षट, 1949 तथा मिश्र, 2006) । अभिनवगुप्त ने इनके मत का उल्लेख अभिनवभारती[52] (शिरोमणि एवं नगेन्द्र, 1960) में किया है । वृत्तरत्नाकर के टीकाकार सुल्हण (रचनाकाल, 1190 ई., 1246 सं.) ने भी 'श्वेतपट' के नाम से इनके मत का खण्डन किया है । जैन ग्रन्थकार जयकीर्त्ति,

---

[50] गद्यकाव्ये न छन्दसामुपयोग: (छन्दोऽनुशासन- 1/1, वृत्तिभाग) ।

[51] पिंगलसूत्र 1/10 तथा 5/8 पर ।

[52] अभिनवभारती, 14/83 – 84 (बडौदा) ।

नमिसाधु तथा हेमचन्द्र इन्हें आदरपूर्वक उद्धृत करते हैं । अत: जयदेव का समय 850 ई. से अर्वाचीन नहीं हो सकता (हर्षट, 1949 तथा मिश्र, 2006) । परवर्ती छन्दशास्त्र के रचयिताओं में त्रिविक्रमभट्ट[53], जयकीर्ति[54], हेमचन्द्र[55] आदि ने जयदेव का नामोल्लेख अपनी रचनाओं में किया है । अत: जयदेव का समय सप्तम शताब्दी स्वीकार किया जाता है । आचार्य जयदेव ने अपनी रचना के लिये पिङ्गलछन्दसूत्र को प्रमुख्य स्वीकार किया है । जयदेवच्छन्द 8 अध्यायों में विभक्त है, इसके प्रथम अध्याय में लघु-गुरु वर्ण, गण, यति आदि विचार हैं । द्वितीय तथा तृतीय अध्याय में वैदिक छन्दों का विवेचन, चतुर्थ से सप्तम अध्याय पर्यन्त लौकिक छन्दों का विवरण और आठवें अध्याय में छन्दों की प्रस्तार-प्रक्रिया के विषय में वर्णन प्राप्त होता है । इस टीका के हस्तलेख का समय 1124 ईस्वी स्वीकार किया गया है । जयदेवच्छन्द के टीकाकार मुकुलभट्ट के पुत्र हर्षट हैं, जिसमें ग्रन्थ के षष्ठ अध्याय में 39वें सूत्र तक और सप्तम अध्याय में 34वें सूत्र[56] तक छन्दों का विवरण प्राप्त होता है, परन्तु जयदेवच्छन्द के छठे अध्याय में 46 सूत्र तथा सप्तम अध्याय में 37 सूत्र हैं (हर्षट, 1949 तथा मिश्र, 2006) । जयदेव द्वारा लक्षित वैदिक छन्दों में स्वतन्त्र 13 छन्द हैं । अत: इस प्रकार वैदिक छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों में छन्दों का प्रयोग मिलता है । इनके अतिरिक्त और भी ग्रन्थ प्राप्त होते हैं यथा- शांखायन श्रौतसूत्र, उपनिदानसूत्र (गार्ग्य), छन्दोऽनुक्रमणी, छन्दसूत्र तथा वृत्तमुक्तावली इत्यादि (हर्षट, 1949 तथा मिश्र, 2006) ।

इस प्रकार संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में संस्कृत वैदिक तथा लौकिक छन्दों से सम्बन्धित बहुत सारे ग्रन्थ प्राप्त होते हैं । छन्दविषयक सभी शास्त्रों का विस्तार से वर्णन करना तो सम्भव नहीं है । किन्तु ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण, उपयोगी तथा प्रचलित पुस्तकों का

---

[53] त्रिविक्रमकृत वृत्तरत्नाकर-व्याख्या (द्रष्टव्य—पिटरसन की चतुर्थ रिपोर्ट पृष्ठ- 27 P. 27, B. of ms. No. 12, of BBRAS, Bombay) ।

[54] जयकीर्तिकृत छन्दोऽनुशासन 8/19.

[55] हेमचन्द्रकृत छन्दोऽनुशासन वृत्तिभाग 3/52/1.

[56] ह. दा. वेलणकर द्वारा सम्पादित जयदामन में जयदेवच्छन्द-विवृति षष्ठ अध्याय समाप्ति पृष्ठ- 31, सप्तम अध्याय समाप्ति पृष्ठ सङ्ख्या -36.

उल्लेख संक्षिप्त रूप से करने का प्रयास किया गया है। छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों की सूची (मिश्र, 2006 तथा मिश्र, 2002) तालिका सङ्ख्या 1.2 दी गई है।

ग्रन्थ का नाम	**कर्ता या अध्याय का नाम**
शांखायनश्रौतसूत्र	छन्द:प्रकरण
उपनिदानसूत्र	गार्ग्य
यजुस्सर्वानुक्रमणी-छन्द:सूत्र	कात्यायन
ऋगर्थदीपिका-छन्द:प्रकरण	वेङ्कटमाधव
बृहत्संहिता-छन्दोविवेचन	वराहमिहिर
छन्दोविचिति	जनाश्रय
बृहत्संहितावृत्ति	उत्पलभट्ट
वृत्तजातिसमुच्चय-पञ्चमनियम	विरहाङ्क
छन्द:शेखर	राजशेखर
रत्नमञ्जूषा	अज्ञातकर्तृक
छन्दोरत्नावली	अमरचन्द्र सूरि
सुकविहृदयानन्दिनी टीका	सुल्हण
अजितशान्तिस्तवटीका	जिनप्रभ
कविकल्पलता	देवेश्वर
सङ्गीतराज-पाठ्यरत्नकोश	राणाकुम्भा
वाणीभूषण	दामोदर मिश्र
छन्दोगोविन्द	पुरुषोत्तम भट्ट
वृत्तवार्तिक	रामपाणिवाद
वृत्तरत्नावली	वेङ्कटेश
वृत्तमौक्तिक-प्रथमखण्ड	चन्द्रशेखर भट्ट
वृत्तमौक्तिक-द्वितीयखण्ड	लक्ष्मीनाथभट्ट
वृत्तमौक्तिक-दुर्गमबोधटीका	मेघविजय गणि
मन्दारमरन्दचम्पू	श्रीकृष्णकवि
सुगमा वृत्ति	समयसुन्दर
प्रस्तारचिन्तामणि	चिन्तामणि दैवज्ञ
सेतुटीका	हरिभास्कर
नारायणी टीका	नारायणभट्ट
छन्दोरत्नावली	रघुनाथ पण्डित
छन्द:कौस्तुभ	भास्करराय

भावार्थदीपिका टीका	जनार्दन
छन्द:कौस्तुभ	राधादामोदर
छन्द:पीयूष	जगन्नाथ मिश्र
छन्द:प्रस्तारसरणि	कृष्णदेव त्रिपाठी
छन्द:सुधाकर	कृष्णराम
छन्द:सुधाचिल्लहरी	जानी महापात्र
वृत्तप्रत्ययकौमुदी	रामचरण शर्मसूरि
छन्दोङ्कुर	गङ्गासहाय
छन्दोगणितम्	कृष्णराम भट्ट
छन्दश्चिह्नप्रकाशनम्	आत्मस्वरूप उदासीन
छन्द:सारसंग्रह	चन्द्रमोहन घोष
स्वयम्भूच्छद:	स्वयम्भू
छन्द:कोश	रत्नशेखर
छन्द:सन्दोह	दीनेशचन्द्र दत्त
गाथालक्षण	नन्दिताढ्य

तालिका 1.2: छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों की सूची

द्वितीय अध्याय
संस्कृत छन्दों का परिचय, विभाजन, अवयव तथा शोध सर्वेक्षण एवं अनुसन्धान हेतु छन्द चुनाव

1. संस्कृत छन्दों का परिचय

सम्पूर्ण विश्व में प्राप्त होने वाले लगभग सभी साहित्य गद्यात्मक एवं पद्यात्मक भेद से दो प्रकार के हैं। पद्यात्मक साहित्य लेखन में लय, तुक, वर्ण, सङ्ख्या इत्यादि विभिन्न अवयवों की आवश्यकता पड़ती है, इन्हीं सभी अवयवों का अध्ययन छन्दशास्त्र में किया जाता है। संस्कृत ही नहीं अपितु विश्व की अन्य भाषाओं में भी परम्परागत रूप से कविता एवं काव्य के लिए छन्द के नियम प्राप्त होते हैं। यथा, बंगाली, उर्दू, फारसी, मलयालम, कन्नड़, अंग्रेजी तथा अरबी इत्यादि। हिन्दी साहित्य में भी परम्परागत रचनाएँ छन्द के नियमों का पालन करते हुए रची जाती थीं अर्थात् किसी न किसी छन्द में होती थीं। आधुनिक हिन्दी काव्य को देखा जाये तो विद्वानों के द्वारा काव्य रचना करते समय छन्दों पर ध्यान न देकर लय पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है जिसको छन्द के एक अवयव के रूप में स्वीकार किया गया है। छन्द संस्कृत वाङ्मय में सामान्यतया लय को बताने के लिए प्रयोग किया गया है। विशिष्ट अर्थों में कविता या गीत में वर्णों की सङ्ख्या और स्थान से सम्बन्धित नियमों को छन्द कहते हैं। छन्दों से ही काव्य में लय और माधुर्यता आती है। काव्य में ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनियाँ एवं इनकी मात्रायें क्रमशः लघु तथा गुरु के रूप में उच्चारण को बताती हैं। जब किसी काव्य रचना की यही सारी प्रक्रिया एक व्यवस्था के रूप में प्राप्त होती है तब उसे एक शास्त्रीय नाम दे दिया जाता है। लघु तथा गुरु मात्राओं के अनुसार वर्णों की इसी व्यवस्था को छन्द कहते हैं। छन्दों के भी कई भेद होते हैं जैसे- गायत्री, आर्या, इन्द्रवज्रा इत्यादि। इस प्रकार की व्यवस्था में मात्रा अथवा वर्णों की सङ्ख्या, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के नियमों को भी निर्धारित किया जाता है जिनका पालन कवि को करना ही होता है। संस्कत छन्द पर उपलब्ध आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित छन्दशास्त्र सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। पिङ्गल ने अपने ग्रन्थ में वैदिक एवं लौकिक दोनों साहित्य ग्रन्थों में प्राप्त होने वाले छन्दों को समान महत्त्व दिया है साथ ही साथ दोनों

प्रकार के छन्दों का विवरण किया है । (शास्त्री, 1969; सागर, 1928; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1968; नाथ, 1957 तथा शर्मा, 1969)।

2. छन्दों का विभाजन

प्राचीन काल के ग्रन्थों में कई प्रकार के छन्द प्राप्त होते हैं। वेद के सूक्त भी छन्दों से युक्त हैं (नाथ, 1957)। पिङ्गल द्वारा रचित छन्दशास्त्र इस विषय का मूल ग्रन्थ है। छन्द की सबसे पहले चर्चा ऋग्वेद में हुई है । यदि गद्य काव्य के लिए 'व्याकरण' महत्त्वपूर्ण है तो पद्य काव्य या कविता के लिए 'छन्दशास्त्र' है। आचार्य पिङ्गलकृत छन्दसूत्र में 119 वैदिक छन्द तथा 162 लौकिक छन्दों का वर्णन किया गया है (पाठक, 2015)।

3. साहित्य के आधार पर छन्दों के भेद

संस्कृत वाङ्मय दो भागों में विभक्त है वैदिक और लौकिक। इस आधार पर छन्द भी मुख्य रूप से वैदिक और लौकिक भेद से दो प्रकार के स्वीकार किये गये हैं। उपनिदानसूत्र (देव, 1931) में आर्ष और लौकिक के भेद से दो प्रकार के छन्दों के नाम स्वीकार किये गये हैं[57] । यहाँ आर्ष का अर्थ वैदिक है (शास्त्री, 1969 तथा मिश्र, 2006) । आचार्य पिङ्गल (शर्मा, 1969), आचार्य गंगादास (त्रिपाठी, 2012) तथा वृत्तरत्नाकर (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012) के टीकाकार श्रीनारायणभट्ट (शास्त्री, 1972) ने भी वैदिक तथा लौकिक भेद ही स्वीकार किये हैं । पिङ्गलच्छन्दशास्त्र पर हलायुध (शर्मा, 1969) की 'मृतसञ्जीवनी' टीका प्राप्त होती है। इस टीका में हलायुध ने छन्दों के वैदिक, लौकिक तथा लोकवेद साधारण इस प्रकार तीन भेद स्वीकार किये हैं[58] (पाठक, 2015) । आचार्य भरतमुनि ने अपनी कृति नाट्यशास्त्र में छन्दों के दिव्य, दिव्येतर

[57] 'छन्दसामार्षं लौकिकं च' उपनिदानसूत्र 1/5.

[58] छन्दसूत्रभाष्य 4/8.

तथा दिव्यमानुष तीन प्रकार से विभाजन किया हैं[59] (चतुर्वेदी, 2011; नागर, 1989; शुक्ल, 1975; तथा शुक्ल, 1975)।

3.1 वैदिकछन्द

वैदिक साहित्य में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को वैदिक छन्द कहते हैं। इनमें ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और स्वरित आदि चार प्रकार के स्वरों का विचार किया जाता है। वैदिक छन्दों के प्रत्येक पाद में अक्षरों की सङ्ख्या गिनी जाती है। वैदिक छन्द एकपादी, द्विपादी, त्रिपादी, चतुर्पादी एवं चार से अधिक पादों वाले हो सकते हैं (पाठक, 2015)। इस प्रकार वैदिक छन्दों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें अक्षरों की गणना होती है तथा साथ ही साथ एक या एक से अधिक अक्षरों की कमी या वृद्धि होने पर भी छन्द परिवर्तित नहीं होता है परन्तु उनकी सञ्ज्ञा बदल जाती है, जैसे यदि गायत्री छन्द में एक अक्षर कम होगा तो उसे 'निचृत गायत्री' कहेगें[60] (पाठक, 2015; शास्त्री, 1969 तथा नाथ, 1957) और यदि किसी छन्द में उसके नियताक्षरों से एक सङ्ख्या अधिक हो जाये तो उसे 'भूरिक् गायत्री' कहते हैं। इसी प्रकार दो अक्षर कम होने पर उस छन्द को 'विराट् गायत्री' कहते हैं, दो अक्षर अधिक होने पर 'स्वराट् गायत्री' कहते हैं[61]। अर्थात् छन्द के नाम से पहले विराट् एवं स्वराट् सञ्ज्ञा जुड़ जाएगी।

आचार्य पिङ्गल ने छन्दशास्त्र (पाठक, 2015) में गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती आदि मुख्य सात वैदिक छन्दों का उल्लेख किया है। छन्दशास्त्र में इनमें से प्रत्येक के आठ-आठ भेद प्राप्त होते हैं। जिन्हें क्रमशः आर्षी, दैवी, आसुरी, प्राजापत्य, याजुषी, साम्नी, आर्ची तथा ब्राह्मी कहा जाता है। इनमें से प्रथम गायत्री छन्द एवं इसके आठों भेदों का विवेचन पिङ्गलछन्दशास्त्र के द्वितीय अध्याय के प्रथम 13 सूत्रों में किया गया है। इस प्रकार गायत्री आदि सभी सात छन्दों के आठ भेदों को मिलाकर कुल 56 (7*8=56) भेद हो जाते हैं। इन मुख्य सात छन्दों के अतिरिक्त अतिजगती, शक्करी, अतिशक्करी, अष्टि, अत्यष्टि, धृति, अतिधृति आदि अन्य और

---

[59] दिव्यो दिव्येतरश्चैव दिव्यमानुष एव च। नाट्यशास्त्र 14/113.

[60] ऊनाऽधिकेनैकेन निचृद्भुरिजौ। छन्दसूत्र- 3.59.

[61] द्वाभ्यां विराट्स्वराजौ। वही- 3.60.

सात छन्द[62] (पाठक, 2015) भी प्राप्त होते हैं जो "अतिछन्द" के नाम से भी जाने जाते हैं। इस प्रकार ऋग्वेद में कुल चौदह छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है। इन चौदह ऋग्वैदिक छन्दों के अतिरिक्त आचार्य पिङ्गल तथा जयदेव ने कृति, प्रकृति, आकृति, विकृति, संस्कृति, अभिकृति, उत्कृति आदि नाम से अन्य सात छन्दों को स्वीकार किया है जो अन्य वेदों में प्राप्त होते हैं। अतः वेद में कुल 21 वैदिक छन्दों प्रयोग किया गया है (पाठक, 2015; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1968 तथा शर्मा, 1969)। ऋग्वेद के भाष्यकार वेंकटमाधव[63] ने अपने भाष्य में बताया है कि कात्यायन, शौनक आदि आचार्यों ने प्रथम 14 छन्दों को ही वैदिक छन्द स्वीकार किया है (स्वरूप, 1939)। वेदों में इन 21 छन्दों के अतिरिक्त मा, प्रमा, प्रतिमा, उपमा तथा समा आदि अन्य पाँच छन्दों (मीमांसा, 2009 तथा पाठक, 2015) के नाम प्राप्त होते हैं। इन छन्दों में क्रमशः 4, 8, 12 और 20 अक्षर होते हैं (नाथ, 1957 तथा शर्मा, 1969)। ये पाँचों छन्द गायत्री से पूर्ववर्ती स्वीकार किये गये हैं। लेकिन आचार्य पिङ्गल ने छन्दशास्त्र में इन पाँच छन्दों का उल्लेख नहीं किया है। इन 21 छन्दों में प्रथम छन्द गायत्री तथा अन्तिम उत्कृति है। इन्हीं 21 छन्दों को तीन सप्तकों में विभक्त किया गया है प्रत्येक सप्तक में 7-7 छन्द हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर सभी वेदों में मुख्य रूप से 26 वैदिक छन्द स्वीकार किये गये हैं (नाथ, 1957 तथा शर्मा, 1969)। आचार्य भरत (चतुर्वेदी, 2011) ने छन्दशास्त्र में प्राप्त तीनों सप्तकों में विभक्त वैदिक छन्दों को क्रमशः दिव्य, दिव्येतर और दिव्यमानुष भेद से तीन प्रकार का स्वीकार किया है। प्रथम सप्तक के छन्दों से सम्बन्धित मन्त्रों के माध्यम से देवों की स्तुति की जाती है अतः इन्हें दिव्य कहा जाता है। द्वितीय सप्तक में मनुष्य की स्तुति से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं अतः इन्हें दिव्येतर अथवा मानुष नाम से जाना जाता है। अन्तिम सप्तक में देवों के साथ-साथ मनुष्यों की स्तुति से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं अतः इन्हें दिव्यमानुष कहा जाता है। इन तीनों प्रकारों का उल्लेख आचार्य अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती में किया है[64]

---

[62] छन्दशास्त्रम्, पृष्ठसङ्ख्या- 107.

[63] चतुर्दशेत्थं कविभिः पुराणैश्छन्दांसि दृष्टानि समीरितानि।
इयन्ति दृष्टानि तु संहितायामन्यानि वेदेष्वपरेषु सन्ति॥

[64] अभिनवभारती (भाग 2, पृष्ठ 247)।

(शिरोमणि एवं नगेन्द्र 1960)। वेदों में मुख्य रूप से दैव आदि आठ छन्दों का प्रयोग हुआ है। इन्हीं के भेदों-प्रभदों को मिलाकर अन्य भेद प्राप्त होते हैं। इन आठ छन्दों का विवरण निम्नलिखित है-

1. दैव

दैवी गायत्री छन्द का प्रारम्भ 1 अक्षर से स्वीकार किया जाता है। इसमें एक के बाद एक छन्दों में 1-1 अक्षर की वृद्धि होती जाती है, यथानुसार गायत्री 1 अक्षर, उष्णिक् 2 अक्षर, अनुष्टुप् 3 अक्षर, बृहती 4 अक्षर, पंक्ति 5 अक्षर, त्रिष्टुप् 6 अक्षर और जगती 7 अक्षरों की होती है (शर्मा, 1969)।

2. आसुर

आसुरी गायत्री के एक पाद में 15 अक्षर होते हैं अर्थात् इस छन्द का आरम्भ 15 अक्षरों से होता है। यह दैव छन्द का विपरीत छन्द है। अत: इसमें उत्तरोत्तर 1-1 अक्षर कम होता जाता है। तदनुसार गायत्री 15 अक्षर, उष्णिक् 14 अक्षर, अनुष्टुप् 13 अक्षर, बृहती 12 अक्षर, पंक्ति 11 अक्षर, त्रिष्टुप् 10 अक्षर और जगती 9 अक्षरों की होती है (शर्मा, 1969 तथा मिश्र, 2006)।

3. प्राजापत्य

इस छन्द का आरम्भ 8 अक्षरों से होता है और प्रत्येक छन्द में 4-4 अक्षरों की वृद्धि होती है। यथा- गायत्री 8 अक्षर, उष्णिक् 12 अक्षर, अनुष्टुप् 16 अक्षर, बृहती 20 अक्षर, पंक्ति 24 अक्षर, त्रिष्टुप् 28 अक्षर और जगती 32 अक्षरों की होती है (मिश्र, 2006)।

4. आर्ष

आर्ष छन्द की अक्षर सङ्ख्या स्ववर्गीय दैव 1 अक्षर, आसुर 15 अक्षर और प्राजापत्य 8 अक्षर इत्यादि तीनों छन्दों के कुल 24 अक्षरों के बराबर होती है, यथा- आर्षी गायत्री 24 अक्षर, उष्णिक् 28 अक्षर, अनुष्टुप् 32 अक्षर, बृहती 36 अक्षर, पंक्ति 40 अक्षर, त्रिष्टुप् 44 अक्षर और जगती 48 अक्षरों की होती है पिङ्गल के मत में आर्ष छन्द लोक में भी प्रयुक्त होते हैं (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

5. याजुष

यह छन्द आर्ष छन्द के एक चरण के बराबर स्वीकार किया गया है । याजुष् छन्द का आरम्भ 6 अक्षरों से होता है और उत्तरोत्तर 1-1 अक्षर की वृद्धि होती है[65], यथा- गायत्री 6 अक्षर, उष्णिक् 7 अक्षर, अनुष्टुप् 8 अक्षर, बृहती 9 अक्षर, पंक्ति 10 अक्षर, त्रिष्टुप् 11 अक्षर और जगती 12 अक्षरों का होता है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा मिश्र, 2006) ।

6. साम्न

यह छन्द आर्ष छन्द के दो पादों के बराबर स्वीकार किया जाता है । अत: इसका आरम्भ 12 अक्षरों से होता है और प्रत्येक पाद में उत्तरोत्तर 2-2 अक्षरों की वृद्धि होती जाती हैं[66], यथा- गायत्री 12 अक्षर, उष्णिक् 14 अक्षर, अनुष्टुप् 16 अक्षर, बृहती 18 अक्षर, पंक्ति 20 अक्षर, त्रिष्टुप् 22 अक्षर और जगती 24 अक्षरों का होता है (शर्मा, 1969 तथा मिश्र, 2006) ।

7. आर्च

यह छन्द आर्ष छन्द के तीन पादों के बराबर स्वीकार किया गया है तथा इस छन्द का आरम्भ 18 अक्षरों से होता है और प्रत्येक छन्द में उत्तरोत्तर 3-3 अक्षर की वृद्धि होती है[67] । यथा- गायत्री 18 अक्षर, उष्णिक् 21 अक्षर, अनुष्टुप् 24 अक्षर, बृहती 27 अक्षर, पंक्ति 30 अक्षर, त्रिष्टुप् 33 अक्षर और जगती 36 अक्षरों की होती है (पाठक, 2015 तथा मिश्र, 2006) ।

8. ब्राह्म

इस छन्द का आरम्भ याजुष् 6 अक्षर, साम्न 12 अक्षर और आर्च 18 अक्षर इन तीनों छन्दों की कुल अक्षर सङ्ख्या 36 के बराबर होती है, यथा- गायत्री 36 अक्षर, उष्णिक् 42 अक्षर, अनुष्टुप् 48 अक्षर, बृहती 54 अक्षर, पंक्ति 60 अक्षर, त्रिष्टुप् 66 अक्षर और जगती 72 अक्षरों की होती है ।

---

[65] यजुषां षट् (छन्दसूत्र- 2.6) ।

[66] साम्नां द्वि: (छन्दसूत्र- 2.7) ।

[67] त्रींस्त्रीनृचाम् (छन्दसूत्र- 2.10) ।

गायत्री आदि प्रत्येक छन्द के दैवी आदि भेदों को पिङ्गल के लक्षित छन्दों की तालिका में उल्लिखित किया गया है[68] (शर्मा, 1969)।

3.1.1 वैदिक छन्दों का वर्गीकरण

संस्कृत छन्दशास्त्र में वैदिक छन्दों के बहुत बड़ी सङ्ख्या में भेद-प्रभेद प्राप्त होते हैं। इस आधार पर वैदिक छन्दों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

3.1.1.1 केवल अक्षरगणनानुसारी

जिन छन्दों में केवल अक्षरों की गणना की जाती है उन छन्दों को केवल अक्षरगणनानुसारी छन्द कहते है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)। इन छन्दों का उल्लेख यजुर्वेद में प्राप्त गद्य मन्त्रों में किया जाता है[69] (मीमांसक, 2009)। इन छन्दों के 8 भेद स्वीकार किये गये हैं– दैव, आसुर, प्राजापत्य, आर्ष, याजुष, साम्न, आर्च और ब्राह्म (नाथ, 1957 तथा शर्मा, 1969)। इन 8 छन्दों को दो भागों विभक्त किया गया है। (1) दैव, आसुर, प्राजापत्य और आर्ष आदि 4 छन्द तथा (2) याजुष, साम्न, आर्च और ब्राह्म आदि 4 छन्द। दैव छन्द का 1 अक्षर, आसुर के 15 अक्षर और प्राजापत्य के 8 अक्षर इन तीनों छन्दों के मिलकर कुल 24 अक्षर होते हैं, उतने ही अक्षर आर्ष छन्दों में होते हैं। इसी प्रकार याजुष की अक्षर सङ्ख्या 6, साम्न छन्द के 12 अक्षर और आर्च की अक्षर सङ्ख्या 18 इन तीनों छन्दों के मिलकर 36 अक्षर होते हैं, उतने ही अक्षर ब्राह्म छन्द में होते हैं।

3.1.1.2 पादाक्षरगणनानुसारी

जिन छन्दों में अक्षर-गणना के साथ-साथ पादों की गणना भी आवश्यक हो, उनको 'पादाक्षर-गणनानुसारी' छन्द कहते हैं। अक्षर का तात्पर्य यहाँ स्वर से है। इस प्रकार के छन्दों का प्रयोग केवल ऋग्वेद के पद्य मन्त्रों में ही प्राप्त होता है (मीमांसक, 2009)।

---

[68] तिस्त्रस्तिस्त्र: सनाम्न्य: एकैका ब्राह्म्य: (छन्दसूत्र- 2.15)।

[69] वैदिक-छन्दोमीमांसा (पृष्ठ सं. 88)।

पिङ्गल से पूर्व आचार्यों ने मुख्य रूप से 26 वैदिक छन्द स्वीकार किये हैं। इन छन्दों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है । इस विभाजन के आधार पर वैदिक छन्दों को निम्नलिखित चार वर्गों विभाजित किया गया है-

1. प्राग्-गायत्रीपञ्चक (पाँच गायत्री-पूर्व छन्द)

ऋक्प्रातिशाख्य[70] (वर्मा, 1992) के अनुसार मा, प्रमा, प्रतिमा, उपमा और समा संज्ञक पाँच प्राग्गायत्री अर्थात् गायत्री से पूर्व प्रयोग हुए छन्द हैं। जिनमें क्रमश: 4, 8, 12, 16 और 20 अक्षर प्राप्त होते हैं (शास्त्री, 1931) । इन पाँच छन्दों के नाम विभिन्न ग्रन्थों जैसे ऋक्प्रातिशाख्य (वर्मा, 1992), निदानसूत्र (भटनागर, 1971), उपनिदानसूत्र (देव, 1931), नाट्यशास्त्र (शास्त्री, 1975) तथा पादाक्षर में अलग-अलग हैं। जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.1 में दिया गया है। 2-2 अक्षर कम होने पर अर्थात् विराट् स्थिति होने पर इनके नाम क्रमश: हर्षीका, सर्षीका, मर्षीका, सर्वमात्रा और विण्ड्कामा हो जाते हैं। लेकिन इन छन्दों का प्रयोग पिङ्गल छन्दसूत्र में प्राप्त नहीं होता है। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र[71] में बतलाया है कि इन छन्दों का सामान्यत: व्यवहार नहीं होता (चतुर्वेदी, 2011; नागर, 1989; शुक्ल, 1975; शर्मा, 1980; उपाध्याय, 1980; बन्द्योपाध्याय, 1985, तथा शुक्ल, 1975)।

[70] ऋक्प्रातिशाख्य (17.19)।

[71] प्रयोगजानि पूर्वाणि प्रायशो न भवन्ति हि' (14.54)।

अक्षर संख्या	ग्रन्थ एवं उनमें प्राप्त होने वाले छन्दों के नाम					पादाक्षर [72] अक्षर
	ऋक्प्राति-शाख्य	निदानसूत्र[73]	उपनिदान-सूत्र[74]	जानाश्रयी[75]	नाट्यशास्त्र[76]	
4	मा	कृति	उक्ता	उक्त	उक्त	1
8	प्रमा	प्रकृति	अत्युक्ता	अत्युक्त	अत्युक्त	2
12	प्रतिमा	संस्कृति	मध्या	मध्यम	मध्य	3
16	उपमा	अभिकृति	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा	4
20	समा	आकृति	सुप्रतिष्ठा	सुप्रतिष्ठा	सुप्रतिष्ठा	5

तालिका 2.1: प्राग्गायत्री छन्द एवं उनके अन्य नाम

पाँच प्राग्गायत्री छन्दों के अतिरिक्त अन्य 21 छन्दों को तीन सप्तकों में विभाजित किया गया है। जिसमें प्रत्येक सप्तक में कुल सात छन्द होते हैं। इन सप्तकों का विवरण निम्नलिखित है-

2. प्रथम सप्तक

छन्द के तीन सप्तकों में से प्रथम सप्तक में गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती कुल 7 छन्द प्राप्त होते हैं। जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.2 में दिया गया है। इन सभी छन्दों के प्राजापत्य, दैव, आसुर, आर्ष, याजुष, साम्न, आर्च, और ब्राह्मसञ्ज्ञक प्रभेद होते हैं। इनमें से ऋग्वेद संहिता में केवल आर्ष छन्दों का प्रयोग हुआ है, जिनमें गायत्री छन्द से लेकर जगती तक 4–4 अक्षरों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; शर्मा, 1969; उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा पाठक, 2015)।

3. द्वितीय सप्तक

इस सप्तक में प्राप्त छन्दों को 'अतिच्छन्द' कहते हैं। इन छन्दों की अक्षर-सङ्ख्या प्रथम सप्तक से 4 अधिक होती हैं। इस सप्तक में भी अतिजगती, शक्करी, अतिशक्करी, अष्टि, अत्यष्टि, धृति

---

[72] नाट्यशास्त्र 14.4-47.

[73] निदानसूत्र (1.5, पृष्ठ- 8)।

[74] उपनिदानसूत्र पृष्ठ- 6।

[75] जानाश्रयी छन्दोविचिति (1.2, 3)।

[76] नाट्यशास्त्र 14.46.

तथा अतिधृति इस प्रकार कुल 7 छन्द प्राप्त होते हैं (शर्मा, 1969 तथा उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)। जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.3 में दिया गया है।

प्रथम सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**अक्षर सङ्ख्या**
1	गायत्री	24
2	उष्णिक्	28
3	अनुष्टुप्	32
4	बृहती	36
5	पंक्ति	40
6	त्रिष्टुप्	44
7	जगती	48

तालिका 2.2 : प्रथमसप्तक

द्वितीय सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**अक्षर सङ्ख्या**
1	अतिजगती	52
2	शक्करी	56
3	अतिशक्करी	60
4	अष्टि	64
5	अत्यष्टि	68
6	धृति	72
7	अतिधृति	76

तालिका 2.3: द्वितीयसप्तक

4. तृतीय सप्तक

तृतीय सप्तक में प्राप्त 7 छन्दों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं- कृति, प्रकृति, आकृति, विकृति, संस्कृति, अभिकृति तथा उत्कृति (पाठक, 2015 तथा उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)। इस सप्तक के छन्दों का विवरण तालिका सङ्ख्या 2.4 में दिया गया है।

तृतीय सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**अक्षर सङ्ख्या**
1	कृति	80
2	प्रकृति	84
3	आकृति	88
4	विकृति	92
5	संस्कृति	96
6	अभिकृति	100
7	उत्कृति	104

तालिका 2.4: तृतीयसप्तक

इन तीनों सप्तकों में से प्रथम सप्तक के आर्ष प्रभेदों को छोडकर, अन्य सभी के उदाहरण ऋग्वेद में नहीं मिलते। यजुर्वेद में इन सभी के उदाहरण मिल जाते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; शर्मा, 1969 तथा उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)।

3.1.2. वैदिक छन्दों की विभिन्न विधियाँ

वेदों में वैदिक छन्दों से सम्बन्धित भिन्न-भिन्न विधियों का वर्णन प्राप्त होता है। जिसका विवरण निम्नलिखित है-

3.1.2.1. व्यूहन या पृथक्करण की प्रक्रिया

किसी छन्द में एक अक्षर की कमी होने पर, पाद की पूर्ति के लिए सन्धियों को तोडकर एक अक्षर के स्थान पर दो अक्षरों की स्थिति बना लेना व्यूहन[77] प्रक्रिया कहलाती है (उपाध्याय एवं

[77] व्यूहेदेकाक्षरीभावान् पादेषूनेषु सम्पदे।

पाण्डेय, 1997) । आचार्य कात्यायन ने भी ऋक्सर्वानुक्रमणी (पाल, 1984) के आरम्भ में लिखा है कि जिन दो स्वरों की सन्धि होकर एक अक्षर हो जाता है, उसे एकाक्षरीभाव सन्धि कहते हैं, यथा- 'पिबाति सौम्यं मधु' में 'सौम्यम्' के स्थान पर 'सौमिअम्' का तथा 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' में 'वरेण्यम्' के स्थान पर 'वरेणिअम्' का उच्चारण किया जाता है । कम अक्षर वाले पादों की अक्षर-सङ्ख्या की पूर्ति हेतु अनेक स्थलों पर 'स्वः' के स्थान पर 'सुअः', 'इन्द्र' के स्थान पर 'इन्दर' (रेफ़ का पृथक्करण), 'ज्येष्ठ' के स्थान पर 'ज्ययिष्ठ' का उच्चारण इसी प्रक्रिया के अनुसार किया जाता है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997)।

3.1.2.2 व्यवाय

व्यवाय भी व्यूहन प्रक्रिया के समान है (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा मिश्र, 2006) । ऋक्प्रातिशाख्य के ऊपर उद्धृत वचन के अनुसार जब किसी अन्तःस्थ वर्ण का किसी अन्य व्यञ्जन के साथ संयोग होता है और वह अन्तःस्थ वर्ण उस संयोग का अन्तिम व्यञ्जन होता है, तब पूर्ववर्ती अन्य व्यञ्जन और परवर्ती अन्तःस्थ वर्ण के मध्य में अन्तःस्थ वर्ण के समान उच्चारण-स्थानवाले स्वर वर्ण का उच्चारण किया जाता है, यथा- 'त्र्यम्बकं यजामहे' यह अनुष्टुप् छन्द है- अतः इसके प्रत्येक पाद में आठ अक्षर होने चाहिए, किन्तु 'त्र्यम्बकं यजामहे' में केवल सात अक्षर ही हैं, इसकी पूर्ति के लिए 'त्र्यम्बकम्' का उच्चारण 'त्रियम्बकम्' रूप में कर लिया जाता है । व्यवाय केवल अन्तःस्थ संयोगों में ही स्वीकार किया जाता है[78] (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा मिश्र, 2006) ।

3.1.2.3 सङ्ख्यासूचक शब्द

पिङ्गलाचार्य ने कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है, जिनसे सङ्ख्याओं का ग्रहण होता है । ऐसे शब्दों को सङ्ख्यासूचक शब्द कहते हैं (उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997 तथा मिश्र, 2006) । पिङ्गल ने वसु शब्द के प्रयोग से 8 सङ्ख्या के ग्रहण की ओर संकेत किया है, यथा– गायत्र्या

क्षैप्रवर्णांश्च संयोगान् व्यवेयात् सदृशैः स्वरैः ॥(ऋक्प्रातिशाख्य- 17.22-23)।

[78] संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (पृष्ठसङ्ख्या- 412)।

वसव:[79], जगत्या आदित्या:[80], विराजोदिश:[81] और त्रिष्टुभोरुद्रा:[82] । इस प्रकार छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों में ईश्वर, पक्ष, काल, वेद, भू, ऋतु, ऋषि, वसु, ग्रह, दिशा, रुद्र, आदित्य, विश्वेदेव, भुवन, तिथि तथा कलादि शब्दों के द्वारा क्रमश: 1 से 16 तक की सङ्ख्या का ग्रहण किया जाता है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा उपाध्याय एवं पाण्डेय, 1997) ।

3.1.2.4 इय आदि भाव

गायत्री आदि छन्दों के किसी पाद में यदि अक्षर सङ्ख्या कम हो तो उस अक्षर की पूर्ति इय्, उव आदि पदों से करनी चाहिए[83] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा शर्मा, 1969) । यथा– आर्षी गायत्री के प्रथम पाद में आठ अक्षर होते हैं । परन्तु गायत्री मन्त्र के इस 'तत्सवितुवरेण्यम्' पाद में 7 ही अक्षर प्राप्त होते है, इसलिए 'तत्सवितुवरेणियम्' ऐसा पाठ करना चाहिए । इससे गायत्री के इस पाद में आठ अक्षर हो जाते हैं (शर्मा, 1969) ।

वैदिक छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों में छन्दों के गोत्र, देवता, स्वर और वर्णों का विवेचन भी किया गया है[84] । यास्क ने निरुक्त[85] में देवतात्रयी का वर्णन किया है । तदनुसार देवता, लोक, सवन, ऋतु, छन्द तथा सोम आदि का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है[86] (बन्द्योपाध्याय, 1985; शिरोमणि एवं नगेन्द्र, 1960 तथा शास्त्री, 1975) ।

1. छन्दगोत्र

छन्दों के गोत्रों का उल्लेख केवल पिङ्गलछन्दशास्त्र के प्रथमसप्तक में उपलब्ध होता है[87] । गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती आदि छन्दों के 7 गोत्र प्राप्त होते हैं

---

[79] छन्दसूत्र- 3/3.

[80] छन्दसूत्र - 3/8.

[81] छन्दसूत्र - 3/5.

[82] छन्दसूत्र - 3/6.

[83] इयादिपूरण: (छन्दसूत्र-3/2) ।

[84] रसानां वर्णा दैवतानि च । (नाट्यशास्त्र – 6/42-45) ।

[85] निरुक्त (7/8-11) ।

[86] वैदिक-छन्दोमीमांसा (पृष्ठसङ्ख्या - 203) ।

[87] अग्निवेश्य-काश्यप-गौतम-आङ्गिरस-भार्गव-कौशिक-वसिष्ठानि-गोत्राणी । छन्दसूत्र- 3/66.

(पाठक, 2015; द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा शर्मा, 1969) । जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.5 में दिया गया है ।

प्रथम सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**गोत्र**
1	गायत्री	अग्निवेश्य
2	उष्णिक्	काश्यप
3	अनुष्टुप्	गौतम
4	बृहती	आङ्गिरस
5	पंक्ति	भार्गव
6	त्रिष्टुप्	कौशिक
7	जगती	वसिष्ठ

तालिका 2.5 छन्दगोत्र

प्रथम सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**देवता**
1	गायत्री	अग्नि
2	उष्णिक्	सविता
3	अनुष्टुप्	सोम
4	बृहती	बृहस्पति
5	पंक्ति	मित्रावरुण
6	त्रिष्टुप्	इन्द्र
7	जगती	विश्वेदेव

तालिका 2.6 छन्ददेवता

2. छन्ददेवता

छन्दों के देवताओं का उल्लेख ऋग्वेद, पिङ्गलसूत्र, ऋक्प्रातिशाख्य, उपनिदानसूत्र, बृहदेवता और भरत-नाट्यशास्त्र (चतुर्वेदी, 2011; नागर, 1989; शुक्ल, 1975; शर्मा, 1980) में

मिलता है[88] । पूर्व निर्देशित गायत्री आदि छन्दों के अग्नि, सविता, सोम, बृहस्पति, मित्रावरुण, इन्द्र तथा विश्वेदेव ये 7 देवता होते हैं (शर्मा, 1969) । जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.6 में दिया गया है । वैदिक छन्दों में देवता निर्देश का मुख्य प्रयोजन यह है कि सन्दिग्ध छन्दों में प्राप्त मन्त्रों का उल्लेख करना है[89] (शर्मा, 1969) ।

3. छन्दस्वर

छन्दों के स्वरों का वर्णन केवल पिङ्गलसूत्र में उपलब्ध होता है । आचार्य पिङ्गल ने प्रथमसप्तक में प्राप्त गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती छन्दों के स्वरों का ही उल्लेख किया है[90] (शर्मा, 1969) । जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.7 में दिया गया है ।

प्रथम सप्तक		
क्र.सं.	**छन्द**	**स्वर**
1	गायत्री	षड्ज
2	उष्णिक्	ऋषभ
3	अनुष्टुप्	गान्धार
4	बृहती	मध्यम
5	पंक्ति	पञ्चम
6	त्रिष्टुप्	धैवत
7	जगती	निषाद

तालिका 2.7 छन्दस्वर

स्वरों का वर्णन करने का भी मुख्य प्रयोजन यही है कि किस छन्द का किस स्वर में गान करना चाहिए[91]।

4. छन्दवर्ण

छन्द के वर्णों का उल्लेख पिङ्गलसूत्र (शर्मा, 1969), ऋक्प्रातिशाख्य (पाल, 1984), उपनिदानसूत्र (देव, 1931) और भरतनाट्यशास्त्र (शुक्ल, 1975) में उपलब्ध होता है । आचार्य

---

[88] अग्नि: सविता सोमो बृहस्पतिर्मित्रावरुणाविन्द्रो विश्वेदेवा: । वही 3/63.

[89] आदित: सन्दिग्धे देवतादिश्च । वही – 3/61, 62.

[90] स्वरा: षड्जर्षभगांधारमध्यमपञ्चमधैवतनिषादा: । वही– 3/64.

[91] यस्य यस्य मन्त्रस्य येन येन स्वरेण वादित्रवादनपूर्वकं गानं कर्तुं योग्यमस्ति, तत्तदर्थं षड्जादिस्वरोल्लेखनं कृतमस्ति । (दयानन्द, ऋ.भा. भू.) ॥

पिङ्गल ने केवल प्रथम सप्तक में प्राप्त गायत्री आदि छन्दों के वर्णों का ही उल्लेख किया हैं[92] (पाठक, 2015; द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा शर्मा, 1969) । जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.8 में दिया गया है ।

प्रथम सप्तक		
	छन्द	**वर्ण**
1	गायत्री	सित (श्वेत)
2	उष्णिक्	सारङ्ग (हरित)
3	अनुष्टुप्	पिशङ्ग (पीला)
4	बृहती	कृष्ण
5	पंक्ति	नील
6	त्रिष्टुप्	लोहित
7	जगती	गौर

तालिका 2.8: छन्दवर्ण

3.2 लौकिक छन्द

लौकिक संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त होने वाले छन्द लौकिक छन्द कहलाते हैं । लौकिक संस्कृत साहित्य में एक किंवदन्ती है कि आदिकवि महर्षि वाल्मीकि तथा उनके द्वारा रचित रामायण आदिकाव्य के नाम से प्रचलित है । लौकिक छन्दों का विकास किस प्रकार हुआ यह एक घटना के माध्यम से स्वीकार किया गया है । क्रीडासक्त क्रौञ्च पक्षियुगल में व्याध (शिकारी) द्वारा नर क्रौञ्चपक्षी को बाण से बींधे जाते हुए देखा उसके बाद उनका शोक (करुणा) छन्दोयुक्त हो गया और करुण रस के साथ ही आठ अक्षरों वाले अनुष्टुप् छन्द का लौकिक संस्कृत काव्य में प्रथम अवतरण हुआ[93]। आदिकवि वाल्मीकि के मुखमण्डल से जो पद्य छन्द रूप में निकला उसको ये श्लोक भी कहते है[94] (तैलङ्ग, 2013)। आचार्य पिङ्गल ने लौकिक छन्दों का उल्लेख आर्या छन्द से आरम्भ किया है (मिश्र, 2006) ।

---

[92] सितसारङ्गपिशङ्गकृष्णनीललोहितगौरावर्णा: । पिङ्गल छन्दसूत्र – 3/65.

[93] मा निषाद ! प्रतिष्ठा: त्वमगम: शाश्वती: समा: । यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी: काममोहितम् ॥ (रामायण) ।

[94] "शोक: श्लोकत्वमागत:" छन्दोमञ्जरी – पृष्ठसङ्ख्या (प्रस्तावना भाग - थ) ।।

3.2.1 लौकिक छन्दों का विभाजन

लौकिक छन्द मात्रा और वर्ण का नियामक होता है। अतः यह भी मात्रा और वर्ण के भेद से दो प्रकार छन्द का है। जिसे क्रमशः मात्रिक एवं वर्णिक कहा जाता है। वृत्तरत्नाकर में भी मात्रा और वर्ण के भेद से लौकिक छन्दों के दो विभाग किये गये हैं[95] (उपाध्याय, 2012)।

छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में वृत्त और जाति के रूप में छन्दों को दो भागों में विभाजित किया गया हैं[96]। आचार्य पिङ्गल ने अपने ग्रन्थ में केवल वृत्त का ही अधिकार स्वीकार किया है[97] (पाठक, 2015 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008) जाति का नहीं।

कुछ आचार्य गण, मात्रा और अक्षर के रूप में छन्दों के तीन भेद स्वीकार करते हैं[98] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। आचार्य पिङ्गलकृत छन्दशास्त्र के टीकाकार हलायुध ने तीन प्रकार के छन्दों का विभाजन किया है। इस प्रकार मात्रा और वर्ण के रूप में छन्दों का विभाजन करने पर मात्राछन्द में ही गणच्छन्दों का भी संग्रह होता है। छन्दसूत्र के चतुर्थ अध्याय के 15वें सूत्र से लेकर 32वें सूत्र तक गणछन्द का उल्लेख प्राप्त होता हैं[99]। चतुर्थ अध्याय के 33वें सूत्र से लेकर 53वें सूत्र तक मात्रा छन्दों का वर्णन किया गया हैं[100] (पाठक, 2015)। भास्कराय के अनुसार छन्द के गद्य, पद्य तथा मिश्र भेद से छन्द के तीन भेद हैं तथा इनमें से प्रत्येक में सम, अर्धसम तथा विषम भेद प्राप्त होते हैं[101] (मिश्र, 2006)।

3.2.2 लौकिक छन्दों के प्रकार

लौकिक छन्दों का विभाजन संरचना के अनुसार वर्णों और मात्राओं के आधार पर किया गया है। इस प्रकार से लौकिक छन्द मुख्यतः दो प्रकार होते हैं।

---

[95] पिङ्गलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लौकिकं द्विधा। मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते॥ (1/4)।

[96] पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा। वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्॥ (1/4)।

[97] छन्दसूत्र- 5/1.

[98] आदौ तावद् गणच्छन्दो मात्राच्छन्दस्ततः परम्। तृतीयमक्षरच्छन्द-श्छन्दस्त्रेधा तु लौकिकम्॥ पि. छन्दसूत्र– 4/11 भाष्य।

[99] आर्याद्युद्गीतिपर्यन्तं गणच्छन्दः समीरितम्। पि.छन्दसूत्र– 4/15 से 32.

[100] वैताल्यादि चूलिकान्तं मात्राच्छन्दः प्रकीर्तितम्। वही– 4/33 से 53.

[101] गद्यं पद्यं मिश्रकं चेति त्रिविधमपि छन्दों विषमार्धसमसमभेदात् प्रातिस्विकम् त्रिविधम्। भास्कराय 4.17.

3.2.2.1 वर्णिक छन्द

वर्णिक को वर्णवृत्त छन्द भी कहते हैं। जिसमें अक्षरों की नियत सङ्ख्या में छन्दों की रचना की जाती है अर्थात् इसमें प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार वर्णों की गणना की जाती है, यथा- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा आदि। वर्णिक छन्द भी दो प्रकार के होते हैं।

3.2.2.2 गणात्मक

गणात्मक वर्णिक छन्दों को वृत्त भी कहते हैं। जिन छन्दों में पाद की व्यवस्था होती है, उन्हें वृत्त कहते हैं। पाद की व्यवस्था होने के कारण ही वृत्त को पद्य भी कहते हैं। इनकी रचना तीन लघु और दीर्घ गणों से बने हुए गणों के आधार पर होती है। लघु तथा दीर्घ के विचार से यदि वर्णों की प्रस्तार-व्यवस्था की जाये तो 8 रूप बनते हैं। इन्हीं को "8 गण" कहते हैं, इनमें भगण, नगण, मगण एवं यगण शुभ गण स्वीकार किये गये हैं और जगण, रगण, सगण एवं तगण को अशुभ गण के रूप में स्वीकार किया गया हैं। वाक्य के आदि में प्रथम चार गणों का प्रयोग उचित है, अन्तिम चार का प्रयोग निषिद्ध है। यदि शुभ गणों से प्रारम्भ होने वाले छन्द का ही प्रयोग करना है, तो देवतावाची या मंगलवाची वर्ण अथवा शब्द का प्रयोग प्रथम करना चाहिए, इससे गणदोष दूर हो जाता है। इन गणों में परस्पर मित्र, शत्रु और उदासीन भाव स्वीकार किया गया है। छन्द के आदि में दो गणों का मेल स्वीकार किया गया है। वर्णों के लघु एवं दीर्घ मानने का भी नियम है। लघु स्वर अथवा एक मात्रा वाले वर्ण लघु अथवा ह्रस्व स्वीकार किये गये और इसमें एक मात्रा मानी गई है। दीर्घ स्वरों से युक्त संयुक्त वर्णों से पूर्व का लघु वर्ण भी विसर्ग युक्त और अनुस्वार वर्ण तथा छन्द का वर्ण दीर्घ स्वीकार किया जाता है। पद्य में पदों की व्यवस्था होती है। इसके दो भेद प्राप्त होते हैं[102] वृत्त और जाति। आचार्यों द्वारा छन्द का एक नाम वृत्त भी स्वीकार किया गया है तथा यह छन्द का एक प्रकार भी है। उस गणात्मक या वृत्त के तीन भेद प्राप्त होते हैं- समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त[103] (तैलङ्ग, 2013 तथा त्रिपाठी, 2012)।

---

[102] पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्॥ छन्दोमञ्जरी- 1.4.

[103] सममर्धसमं वृत्तं विषमं चेति तत् त्रिधा ।
समं समचतुष्पादं भवत्यर्धसमं पुनः॥ 1/5॥

1. समवृत्त

जिस पद्य के चारों चरणों में अक्षर या वर्ण सङ्ख्या समान हो, एक ही लक्षण से युक्त हों छन्दशास्त्री लोग उसे समवृत्त के रूप में स्वीकार करते हैं, जैसे– उपेन्द्रवज्रा यह एक समवृत्त छन्द है क्योंकि इसके चारों चरणों में 11-11 अक्षर होते हैं और उनमें गुरु-लघु का नियम भी एक ही समान होता है[104] । छन्दसूत्र में तनुमध्या[105] से लेकर उत्कृति[106] तक कुल 73 समवृत्त छन्दों का उल्लेख किया गया है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012; तैलङ्ग, 2013 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ।

2. अर्धसमवृत्त

जिस छन्द का प्रथम चरण तृतीय चरण के समान और द्वितीय चरण चतुर्थ चरण के समान हों तथा अक्षर और स्वरों की सङ्ख्या समान हो वह अर्धसमवृत्त छन्द कहलाता है, जैसे– पुष्पिताग्रा क्योंकि इस छन्द में पहला तथा तीसरा, दूसरा तथा चौथा चरण अक्षरों की सङ्ख्या एक समान होती हैं[107] । उपचित्रक[108] से लेकर शिखाखञ्जा[109] तक कुल 13 अर्धसमवृत्त छन्दों का विवेचन किया गया है (पाठक, 2015 तथा उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012) ।

3. विषमवृत्त

जिस छन्द के चारों चरणों में वर्णों एवं स्वरों की सङ्ख्या तथा लक्षण भिन्न-भिन्न हो वह विषमवृत्त कहलाता है, जैस– उद्गाता और गाथा आदि छन्द विषमवृत्त हैं[110] (तैलङ्ग, 2013 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008) । ये वर्ण परस्पर पृथक होते हैं । वर्णों और मात्राओं की निश्चित सङ्ख्या के बाद बहुसङ्खयक वर्णों और स्वरों से युक्त छन्द दण्डक कहे जाते है इनकी सङ्ख्या बहुत अधिक

आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत् ।
भिन्नचिह्न-चतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम् ॥ 1/6 ॥ (छन्दोमञ्जरी) ।

[104] अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिता: । तत् छन्द:शास्त्रतत्त्वज्ञा: समं वृत्तं प्रचक्षते ॥ (1.14) ।

[105] छन्दसूत्र- 6/2.

[106] छन्दसूत्र- 7/30.

[107] प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत् । द्वितीयस्तुर्यवत् वृत्तं तदर्धसममुच्यते ॥ (1.15) ।

[108] छन्दसूत्र- 5/32.

[109] छन्दसूत्र - 5/44.

[110] यस्य पादचतुष्केऽपि लक्ष्म भिन्नं परस्परम्, तदाहु: विषमं वृत्तं छन्द:शास्त्रविशारदा: ॥ (1.16) ।

है। समानी[111] से लेकर शुद्ध विराड्-ऋषभ[112] तक कुल 25 विषमवृत्त छन्दों का वर्णन किया गया है (मिश्र, 2006 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

3.2.2.3 अगणात्मक

अगणात्मक मात्रिक छन्दों को जाति भी कहते हैं। इस छन्द में गुरु-लघु मात्राओं की सङ्ख्या गिनी जाती है अर्थात् जिस छन्द में ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों की 1, 2, 3 इस प्रकार मात्राओं की तथा व्यञ्जन की अर्धमात्रा की गणना की जाती है, उसे जाति छन्द कहते हैं अर्थात् इसमें प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार मात्राओं की गणना की जाती है, यथा– आर्या, गीति आदि मात्रावृत्त हैं। इसके प्रत्येक श्लोक में चार पाद या चार चरण होते हैं। और यह एक विशेष लय अथवा गति (पाठप्रवाह अथवा पाठपद्धति) पर आधारित रहते हैं (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012; तैलङ्ग, 2013 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। इसलिये ये छन्द लय प्रधान होते हैं। उस जाति के भी तीन भेद प्राप्त होते हैं- समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त इत्यादि[113] (तैलङ्ग, 2013)।

1. समवृत्त

जिस पद्य के चारों चरणों में अक्षर या वर्ण सङ्ख्या समान हो, एक ही लक्षण से युक्त हों छन्दशास्त्री लोग उसे समवृत्त के रूप में स्वीकार करते हैं, जैसे– उपेन्द्रवज्रा यह एक समवृत्त छन्द है क्योंकि इसके चारों चरणों में 11-11 अक्षर होते हैं और उनमें गुरु-लघु का नियम भी एक ही समान होता है[114] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012; तैलङ्ग, 2013 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

---

[111] छन्दसूत्र- 5/6.

[112] छन्दसूत्र - 5/30.

[113] सममर्धसमं वृत्तं विषमं चेति तत् त्रिधा ।
समं समचतुष्पादं भवत्यर्धसमं पुन: ॥ 1/5 ॥
आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत् ।
भिन्नचिह्न-चतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम् ॥ 1/6 ॥ (छन्दोमञ्जरी)।

[114] अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिता: । तत् छन्द:शास्त्रतत्त्वज्ञा: समं वृत्तं प्रचक्षते ॥ (1.14)।

2. अर्धसमवृत्त

जिस छन्द का प्रथम चरण तृतीय चरण के समान और द्वितीय चरण चतुर्थ चरण के समान हों तथा अक्षर और स्वरों की सङ्ख्या समान हो वह अर्धसमवृत्त छन्द कहलाता है, जैसे– पुष्पिताग्रा क्योंकि इस छन्द में पहला तथा तीसरा, दूसरा तथा चौथा चरण अक्षरों की सङ्ख्या एक समान होती हैं[115] (तैलङ्ग, 2013 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

3. विषमवृत्त

जिस छन्द के चारों चरणों में वर्णों एवं स्वरों की सङ्ख्या तथा लक्षण भिन्न-भिन्न हो वह विषमवृत्त कहलाता है। उद्गाता और गाथा आदि छन्द विषमवृत्त हैं[116]। ये वर्ण परस्पर पृथक होते हैं (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा तैलङ्ग, 2013)। वर्णों और मात्राओं की निश्चित सङ्ख्या के बाद बहुसङ्खयक वर्णों और स्वरों से युक्त छन्द दण्डक कहे जाते हैं इनकी सङ्ख्या बहुत अधिक है (मिश्र, 2006 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

4. छन्द के अवयव

छन्दशास्त्र में छन्दों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इन छन्दों को समझने के लिये सबसे पहले छन्द के अवयवों को समझना आवश्यक होता है। अत: छन्द के निम्नलिखित अङ्ग होते हैं-

4.1 चरण या पाद

छन्दसूत्र में आचार्य पिङ्गल ने चरण या पाद छन्द के चतुर्थांश अर्थात् ¼ भाग को पाद या चरण कहते हैं[117] (पाठक, 2015 तथा शास्त्री, 1972)। छन्द में प्राय: चार चरण या पाद होते हैं। दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहा जाता है। यह लक्षण समवृत्त छन्दों के लिए हैं। पहले और

---

[115] प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत्। द्वितीयस्तुर्यवत् वृत्तं तदर्धसममुच्यते॥ (1.15)।

[116] यस्य पादचतुष्केऽपि लक्ष्म भिन्नं परस्परम्, तदाहु: विषमं वृत्तं छन्द:शास्त्रविशारदा:॥ (1.16)।

[117] पादश्चतुर्थभाग:। (छन्दसूत्रम् 4/10), पृष्ठसङ्ख्या-85.

तीसरे चरण को विषम चरण कहते हैं। अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त छन्दों के लिये दूसरा सूत्र प्राप्त होता है[118] अथवा छन्द के अक्षरों या लक्षण के अनुसार पाद व्यवस्था की जाती है (पाठक, 2015)।

4.2 मात्रा

किसी वर्ण के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है। मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं– (1) लघु (।) (2) गुरू (S)। जिनके उच्चारण में थोड़ा कम समय लगता है उन्हें लघु (ह्रस्व) मात्रा कहा जाता है जैसे– अ, इ, उ, अं की मात्राएँ। मात्राओं की गणना के समय लघु अक्षर का चिह्न सीधी रेखा (लकीर) " । " से अंकित किया जाता है, और जिनके उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हे गुरु मात्रा कहा जाता है अर्थात् उच्चारण में लघु मात्राओं की अपेक्षा दुगुना अथवा तिगुना समय लगता हैं, जैसे– ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ आदि मात्राएँ। मात्राओं की गणना के समय गुरु अक्षर का चिह्न टेढी रेखा " ऽ " से अंकित किया जाता है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

4.3 वर्ण

भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। छन्दसूत्र में 'ल' वर्ण से लघु और 'ग' वर्ण से गुरु का ज्ञान होता है[119]। छन्द में दो प्रकार के वर्ण होते हैं। लघु वर्ण– ह्रस्व स्वर और उसकी मात्रा से युक्त व्यञ्जन वर्ण को लघु वर्ण कहा जाता है। इसको "।" चिह्न से अंकित किया जाता है, उदाहरणार्थ– क, कि, कु, कॅ – लघु मात्राएँ हैं। गुरू वर्ण– दीर्घ स्वर और उसकी मात्रा से युक्त व्यञ्जन वर्ण को गुरू वर्ण कहा जाता है। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती है इसको "ऽ" चिह्न से अंकित किया जाता है, उदाहरणार्थ:– का, की, कू, के, कै, को, कौ आदि दीर्घ मात्राएँ हैं (शर्मा, 1969 तथा पाठक, 2015)।

---

[118] यथावृत्तसमाप्तिर्वा। (छन्दसूत्र - 4/11), पृष्ठसङ्ख्या-85.

[119] ग्लौ। (छन्दसूत्र - 1/14), पृष्ठसङ्ख्या-19.

4.4 सङ्ख्या

मात्राओं एवं वर्णों की गणना को सङ्ख्या कहते हैं। छन्द की पहचान करने में यह अवयव बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छन्द का निर्णय सङ्ख्या के आधार पर किया जाता है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

4.5 क्रम

लघु-गुरु के स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं। छन्दशास्त्र के कुछ आचार्य पाद के आदि में होने वाले अक्षरसंयोग को 'क्रम' कहते हैं। पाद के आगे रहने पर कहीं-कहीं लघु वर्ण भी गुरु बन जाता है परन्तु आवश्यकतानुसार वह गुरु भी लघु हो जाता है[120]। (त्रिपाठी, 2012)।

4.6 गति

पद्य के पाठ में जो बहाव होता है उसे गति कहते हैं। छन्दोबद्ध रचना को लय में आरोह - अवरोह के साथ पढ़ा जाता है। छन्द की इसी लय को गति कहते है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

4.7 यति या विराम

आचार्य पिङ्गल ने छन्दसूत्र में यति का विधान किया है। श्लोक के उच्चारण के समय जीभ जहाँ अपनी इच्छा से रुक जाती है, उसे 'यति' कहते हैं[121] (मिश्र, 2006; द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा त्रिपाठी, 2012)। अथवा पद्य या श्लोक को पढने में आवश्यकतानुसार कुछ अक्षरों के बाद अल्पविराम होता है, इसी अल्पविराम को गद्य में विराग और पद्य में यति कहते हैं। यति शब्द का अर्थ अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी मत के अनुसार किया हैं[122]। विश्राम, विच्छेद, विराम, विरति आदि पर्यायशब्दों से यति को जाना जाता है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

---

[120] पादादाविह वर्णस्य संयोग: क्रमसंज्ञक:। (वृत्तरत्नाकर 1/10)।

[121] 'यतिर्विच्छेद:' (पिं. सू. 6/1)।

[122] भरत:- नियत: पादविच्छेदो यतिरित्यभिधीयते (नाट्यशास्त्र 15/90) ।
जनाश्रय:- यति: पदच्छेद: (छ. वि. 1/40) ।।
दण्डी- श्लोकेषु नियतस्थाने पदच्छेदं यतिं विदु: (काव्यादर्श)।।

4.8 तुक

पद्य–रचना में चरणान्त के साम्य को तुक कहते हैं अर्थात् पद के अन्त में एक से स्वर वाले एक या अनेक अक्षर आ जाते हैं, उन्हीं को तुक कहते हैं। समान उच्चारण वाले शब्दों के प्रयोग को तुक कहा जाता है। पद्य प्रायः तुकान्त ही होते हैं (मिश्र, 2006; पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

4.9 गण

प्रत्येक पद्य को गणों में विभाजित किया जाता है। मात्राओं तथा वर्णों की सङ्ख्या और क्रम की सुविधा के लिए तीन वर्णों के समूह को एक गण मान लिया जाता है। गण दो प्रकार के होते हैं (1) वर्णगण और (2) मात्रागण।

4.9.1. वर्ण गण

छन्द में कुल आठ गण होते हैं[123] (शास्त्री, 1998 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008) तथा प्रत्येक गण में तीन-तीन वर्ण होते हैं। छन्दशास्त्र में इन्ही आठ गणों को सूत्रवत् तरीके से य-म-त-र-ज-भ-न-स-ल-ग के रूप में व्यक्त किया गया है[124] (पाठक, 2015 तथा शास्त्री, 1972)। सूत्र के प्रथम आठ वर्ण आठ गणों को बताते हैं और अन्तिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' लघु और गुरु वर्ण को प्रकट करते हैं। वक्र (ऽ) और ऋजु (।) रेखाओं द्वारा गणों को बताया जाता है। वक्ररेखा को गुरु और ऋजुरेखा को लघु स्वीकार किया गया है। आठ गणों का विस्तृत वर्णन एवं मात्रा गणना तथा सांकेतिक चिन्ह तालिका सङ्ख्या 2.9 में दर्शायी गई है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा शास्त्री, 1972)।

भामहः- यतिश्छन्दोऽधिरूढानां शब्दानां या विधारणा (काव्यालङ्कार 4/24) ।

केदारः- यतिर्विच्छेदसंज्ञिता (वृत्तरत्नाकर 1/12), पृष्ठसङ्ख्या – 261।

गङ्गादास- यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते। (छन्दोमञ्जरी 1/12)।

[123] मगणो यगणश्चैव रगणः सगणस्तथा।

तगणो जगणश्चैव भगणो नगणस्तथा॥ (श्रुतबोध- पृष्ठसङ्ख्या- 4)।

[124] यमाताराजभानसलगाः,(छन्दसूत्र- पृष्ठसङ्ख्या- 4-5)।

नाम	स्वरूप	उदाहरण	सांकेतिक
यगण	।ऽऽ	यमाता	य
मगण	ऽऽऽ	मातारा	मा
तगण	ऽऽ।	ताराज	ता
रगण	ऽ।ऽ	राजभा	रा
जगण	।ऽ।	जभान	ज
भगण	ऽ।।	भानस	भा
नगण	।।।	नसल	न
सगण	।।ऽ	सलग	स

तालिका 2.9 छन्द के गण

अन्य आचार्यों ने भी इन्ही आठ गणों को अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया है[125] (शास्त्री, 1998 तथा मिश्र, 2006)। वर्ण गणों के स्वरूप को निम्न प्रकार से प्रकट किया जाता है।

4.9.1.1 यगण (।ऽऽ):

जहाँ पहला अक्षर लघु और शेष दो अक्षर गुरु होते हैं, उस स्थान पर यगण होता है। जो एक लघु और दो गुरु वर्णों के समूह (व रा सा) को प्रकट करती है, जिनकी 5 मात्राएँ होती हैं। इस गण का देवता जल है। श्लोक के आरम्भ में इस इस गण का प्रयोग करने से कवि की वंशवृद्धि होती है। यह भृत्यगण के रूप में स्वीकार किया गया है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

4.9.1.2 मगण (ऽऽऽ):

जिस स्थान पर तीनों अक्षर गुरु होते हैं, वहाँ पर मगण होता है। छन्दसूत्र में मगण को 'धी श्री स्त्री म्' इस सूत्र[126] के माध्यम से बताया है। मगण की 6 मात्राएँ गिनी जाती हैं। छन्दसूत्र में इस गण की देवता भूमि स्वीकार की जाती है। किसी पद्य की रचना कवि यदि मगण से करता है तो

---

[125] मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ॥ 8 ॥ (छन्दोमंजरी (तैलङ्ग), पृष्ठसङ्ख्या – 6)।
आदि मध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ॥ (छन्द:सूत्रम्, पृष्ठसङ्ख्या– 4)।

[126] छन्दसूत्र- 1/1.

उसको श्री की प्राप्ति होती हैं। इस गण को मित्रगण के रूप में स्वीकार किया गया है (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

4.9.1.3 रगण (ऽ।ऽ):

जिस गण में तीन अक्षरों के समूह में से बीच का अक्षर लघु हो और उसके दोनों ओर एक-एक गुरु वर्ण हो तो वहाँ रगण होता है, अर्थात् जो मध्य में एक लघु और उसके दोनों ओर एक-एक गुरु वर्णों के समूह (का गुहा) को बताती है। इसकी भी 5 मात्राएँ होती हैं। इस गण का देवता अग्नि है। किसी श्लोक के प्रारम्भ में इस गण का प्रयोग करने से प्रयोक्ता को मृत्यु प्राप्त होती है। इसको उदासीन गण कहते हैं (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

4.9.1.4 सगण (॥ऽ):

अर्थात् जो प्रारम्भ में दो लघु और अन्त में एक गुरु वर्ण के समूह (वसुधा) को प्रकट करती है। इसकी 4 मात्राएँ होती हैं। इस गण का देवता वायु है। इसका प्रयोग करने से प्रयोक्ता का दूरजाने वाला होता है। इस गण को नीच (शत्रु) गण स्वीकार किया जाता है (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

4.9.1.5 तगण (ऽऽ।):

जहाँ पर त्रिक में अन्तिम अक्षर लघु होता है और शेष दो अक्षर गुरु होते हैं, उस स्थान पर तगण होता है। तगण की 5 मात्राएँ होती हैं। यह इस तगण के समूह (सा ते क्ष) को प्रकट करता है। इस गण का देवता व्योम है। कवि द्वारा अपने काव्य में इस गण का प्रारम्भ में प्रयोग करने पर वह शून्यत्व को प्राप्त होता है। इस गण को नीच स्वीकार किया जाता है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

4.9.1.6 जगण (।ऽ।):

जिस गण का बीच का अक्षर गुरु हो तथा प्रारम्भ और अन्त में एक-एक लघु वर्ण के समूह (कदा स) को प्रकट करता है, वह जगण कहलाता है। जगण की 4 मात्राएँ होती हैं। इस गण का

देवता सूर्य है। इसका श्लोक के शिरु में प्रयोग करने पर प्रयोक्ता को रोग की प्राप्ति होती हैं। यह एक उदासीन गण है (पाठक, 2015; शर्मा, 1969 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

4.9.1.7 भगण (ऽ।।):

इस गण में 4 मात्राएँ होती हैं। जो प्रारम्भ में एक गुरु और बाद में दो लघु वर्णों के समूह (किं वद) को प्रकट करती हैं, इसलिये इसको भगण कहते है। इस गण का देवता चन्द्र है। आरम्भ में इसका प्रयोग करने से प्रयोक्ता को यश प्राप्त होता है। इसे भृत्य (दास) गण स्वीकार किया गया है (शर्मा, 1969)।

4.9.1.8 नगण (।।।):

इस गण में तीनों अक्षर लघु होते हैं। जो तीन लघु वर्णों के समूह (न हस) को प्रकट करती हैं। इस गण की 3 मात्राएँ होती है। इस गण का देवता नाक (स्वर्ग) है। पद्य के आरम्भ में इसके प्रयोग से प्रयोक्ता को सुख प्राप्त होता है। इसे मित्र गण स्वीकार किया गया है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा शर्मा, 1969)। इस प्रकार छन्दसूत्र के प्रथम अध्याय में आठ गणों का वर्णन किया गया है। वर्ण छन्द के अवान्तर भेद गण छन्द तथा अक्षर छन्द हैं। इनमें सभी गणों के अक्षर-घटित होने के कारण गण छन्द को अक्षर छन्द भी कहा जा सकता है (मिश्र, 2006)।

4.9.2 मात्रिक गण

जिस प्रकार आचार्य पिङ्गल ने वर्णिक छन्दों के लिए 8 गणों का उल्लेख किया है, उसी प्रकार मात्रिक छन्दों का उल्लेख भी अपने छन्दशास्त्र में किया है। इसमें 4 अक्षरों वाले गण का विवेचन किया है अर्थात् चार लघु अक्षरों का भी एक गण होगा जिसे 'नगणल' स्वीकार किया जा सकता है, इसका तात्पर्य है नगण (।।।) के साथ एक लघु (।) वर्ण आ गया है[127] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। मात्रिक छन्दों में प्रत्येक पाद या चरण की मात्राएँ गिनी जाती हैं। प्रत्येक मात्रिक गण में चार मात्राएँ होती हैं। लघु (ह्रस्व) अक्षर की 1 मात्रा मानी जाती है और गुरु (दीर्घ) की 2 मात्राएँ।

[127] पिङ्गल छन्दसूत्र, ल: समुद्रा गण: - 4.12.

मात्रा छन्दों के गण चार लघु अक्षरों के बराबर होते हैं। मात्रागण 5 हैं[128] (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)। इनके नाम और चिह्न इस प्रकार हैं-

(1) गौ, मगण- ऽ ऽ (दो गुरु अक्षर),

(2) गन्त, सगण- । । ऽ (अन्त गुरु, शेष दो लघु),

(3) ग्-मध्य, जगण- । ऽ । (मध्यगुरु, शेष दो लघु),

(4) ग् आदि, भगण- ऽ । । (आदि गुरु, दो लघु),

(5) लः, नगण- । । । । (चार लघु अक्षर), (पाठक, 2015 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

4.10 प्रत्यय विवेचन

संस्कृत छन्दशास्त्र का एक प्रमुख अङ्ग प्रत्यय विधान है। आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दशास्त्र में सम, अर्धसम तथा विषम आदि आवश्यक वृत्तों का वर्णन किया है। लेकिन अनेक छन्दशास्त्र के विद्वानों ने इनके अतिरिक्त भी छन्दों का उल्लेख किया है। उन अतिरिक्त छन्दों के ज्ञान के लिए प्रत्ययों का वर्णन किया गया है (शर्मा, 1909)। इसी आधार छन्दों से युक्त ग्रन्थों के रचयिता तथा शास्त्रों में निपुण आचार्यों ने अपनी कृतियों में प्रत्ययों का वर्णन किया है।

4.10.1 प्रत्यय

छन्दशास्त्र में प्रयुक्त जिन नियम विधियों के द्वारा छन्दों के भेदादि का ज्ञान कराया जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं[129]। प्रत्ययों से सम्बन्धित एक और परिभाषा प्राप्त होती है, वे विधियाँ जिनके माध्यम से छन्दों की सङ्ख्या और भेदों का ज्ञान कराया जाता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं[130] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। वृत्तरत्नाकर के रचयिता आचार्य केदारभट्ट (जन्म 1000 ई. पूर्व) ने प्रत्ययों के 6 भेदों का वर्णन किया है। वृत्तरत्नाकर में 6 प्रत्यय क्रमानुसार इस प्रकार बताये गये

---

[128] छन्दसूत्र, गौ गन्तमध्यादिर्लश्च- 4.13.

[129] छन्दसां भेदादि-प्रत्यायकत्वात् प्रत्ययाः। पृष्ठ सङ्ख्या- 235.

[130] प्रतीयते संख्यादिकम् एभिस्ते प्रत्ययाः। पृष्ठ सङ्ख्या- 235.

हैं[131]- प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट, लगक्रिया, सङ्ख्यान तथा अध्वयोग (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)। जिनका विवरण निम्नलिखित है-

4.10.2. प्रस्तार

प्रस्तार का सामान्य अर्थ विस्तार है। छन्दशास्त्र में किसी भी छन्द का किस-किस तरह से विभाजन हो सकता है या किस क्षेत्र तक हम उसका विस्तार कर सकते है, अर्थात् समसङ्ख्या में प्राप्त अक्षर या मात्रा वाले छन्द के कितने भेद हो सकते हैं। इस प्रकार उन सब भेदों को जानने की विधि का विवेचन करना प्रस्तार कहलाता है[132] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने छन्दोऽनुशासन में प्रस्तार को इस प्रकार परिभाषित किया गया है[133] (मिश्र, 2006)। वृत्तरत्नाकर में उक्ता, अत्युक्ता, मध्या तथा प्रतिष्ठा भेद से यह प्रस्तार विधि अनेक प्रकार की होती है (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)।

4.10.3 नष्ट

अज्ञात भेद के स्वरूप का ज्ञान जिस प्रत्ययविधि के द्वारा हो तो उसको नष्ट कहते हैं[134], अर्थात् किसी छन्द की किस सङ्ख्या का भेद किस प्रकार का होगा अर्थात् कौन-सा अक्षर गुरु है तथा कौनसा लघु है, कौन-कौन गणों का इस छन्द में प्रयोग हुआ हैं। नष्ट शब्द का अर्थ है- अज्ञात, अप्रकट या अव्यक्त, यथा- गायत्री अक्षरजाति के समवृत्त में षष्ठ भेद क्या है, यह नष्ट-प्रत्यय द्वारा समाधान किया जाता है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)।

---

131 प्रस्तारो नष्टमुद्दिष्टम्, एकद्-व्यादि-लग-क्रिया।
संख्या चैवाध्वयोगश्च षडेते प्रत्यया: स्मृता: ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.1)।

132 पादे सर्वगुरावाद्याल्लघुं न्यस्य गुरोरध:।
यथोपरि तथा शेषं भूय: कुर्यादमुं विधिम् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.2)।
ऊने दद्याद् गुरूनेव यावत्सर्वलघुर्भवेत्।
प्रस्तारोऽयं समाख्यातश्छन्दोविचितिवेदिभि: ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.3)।

133 प्रस्तीर्यते इति प्रस्तार:, वृत्तानां विस्तारतो विन्यास: ॥ (छन्दोऽनुशासन, पृ. 46, पं. 4, निर्णयसागर संस्करण 1912)।

134 नष्टस्य यो भवेदङ्कस्तस्यार्धेऽर्धे समे च ल:।
विषमे चैकमादाय तस्यार्धेऽर्धे गुरुर्भवेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.4)।

4.10.4 उद्दिष्ट

इस प्रत्यय के अनुसार जब किसी छन्द के दिये हुए रूप की क्रम सङ्ख्या का बोध जिस प्रत्ययविधि के द्वारा होता है तब वह उद्दिष्ट कहलाता है[135] । अथवा किस छन्द का कौनसा भेद है इस प्रक्रिया का समाधान उद्दिष्ट के द्वारा किया जाता है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012) ।

4.10.5 एकद्वयादिलगक्रिया

इस प्रत्ययविधि के माध्यम से यह बताया गया है कि प्रस्तारों के अनेक भेद प्राप्त होते हैं, उन भेदों में कितने लघु अक्षर होते हैं और कितने गुरु, इसको जानने के लिए एकद्वयादिलगक्रिया का उल्लेख किया है[136] । यदि सरल अर्थ में कहा जाये तो इस विधि से किसी भी छन्द के लघु-गुरु अक्षरों के विषय में जाना जाता है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972) ।

4.10.6 सङ्ख्यान

जिस विधि के माध्यम से छन्दों की पूर्ण सङ्ख्या का ज्ञान प्राप्त होता है उस विधि को सङ्ख्यान कहते हैं[137] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972) । इस विधि में शून्य (0) और दो (2) अंकों का उपयोग किया जाता है । उनके आधार पर उस वृत्त के भेदों का पता लगाया जाता है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ।

4.10.7 अध्वयोग

इस विधि के माध्यम से यह जाना जाता है कि किसी छन्द की सङ्ख्या को दुगुना करके एक घटा देने से जो शेष बचे, उसे छन्दशास्त्र के विद्वानों ने अध्वयोग कहा है[138] अथवा प्रस्तार को

---

[135] उद्दिष्टं द्विगुणानङ्कानुपर्याद्यात् समालिखेत् ।
लघुस्थाने तु येऽङ्का: स्युस्तै: सैकैर्मिश्रितै: भवेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.5) ।

[136] वर्णान् वृत्तभवान् सैकानौत्तराधर्यत: स्थितान् ।
एकादिक्रमतश्चैतानुपर्युपरि निक्षिपेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.6) ।
उपान्त्यतो निवर्तेत त्यजेदेकैकमूर्ध्वत: ।
उपर्याद्याद् गुरोरेवमेकद्वयादिलगक्रिया ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.7) ।

[137] लगक्रियाङ्कसन्दोहे भवेत् सङ्ख्याविमिश्रिते ।
उद्दिष्टाङ्कसमाहार: सैको वा जनयेदिमाम् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.8) ।

[138] सङ्ख्यैव द्विगुणैकोना सद्भिरध्वा प्रकीर्तित: ।
वृत्तस्याङ्गुलिकी व्याप्तिरध: कुर्यात्तथाङ्गुलिम् ॥ (वृत्तरत्नाकर- 6.9) ।

लिखने का तरीका प्रदर्शित करने वाले मार्ग को अध्वयोग कहा गया है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)। यथा- 4 अक्षर के वृत्त के भेद 16 हुए।

इस प्रकार आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दशास्त्र में प्रस्तारादि विधियों का विस्तार से वर्णन किया है। इसी क्रम में आचार्य केदारभट्ट ने भी अपनी कृति वृत्तरत्नाकर में प्रत्ययों का विवेचन किया है। इस अध्याय में छन्द के प्रकार, विभाजन, भेदों तथा अवयवों को विस्तार से विवेचन किया गया है।

5. छन्द के क्षेत्र में हुए शोधकार्यों का संक्षिप्त सर्वेक्षण

संस्कृत साहित्य का प्रथम आद्य स्त्रोत तथा मूलाधार वेद है तथा इस अपौरुषेय शब्दराशि को 'छन्द' शब्द से जाना जाता है। सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय का आध्यात्मिक ज्ञान छन्दों में ही सुरक्षित है। संस्कृत साहित्य के दोनों रूपों में वैदिक और लौकिक के प्रथम ग्रन्थ "ऋग्वेद" तथा महर्षि वाल्मीकिकृत "रामायण" छन्द में ही निबद्ध है। सर्वप्रथम आचार्य पिङ्गल ने छन्दों को शास्त्र के रूप में स्वीकार कर "छन्दसूत्र" की रचना की जिसमें वैदिक और लौकिक छन्दों पर विस्तार से विवरण दिया गया है। पिङ्गलछन्दशास्त्र में कुल 119 वैदिक तथा 162 लौकिक छन्दों का लक्षण एवं उदाहरण सविस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इनमें से 100 छन्द आचार्य पिङ्गल के नवीन छन्द है तथा अन्य छन्द आचार्य पिङ्गल से पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों में प्रयोग हो चुके है। विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा छन्दशास्त्र पर परम्परागत रूप से बहुत से शोधकार्य किये गये हैं तथा आधुनिक काल में छन्दों में समाहित ज्ञान संचित एवं लोगों तक आसानी से पहुंचाने के लिये ऑनलाइन टूल्स का निर्माण किया जा रहा है। पारम्परिक शिक्षण को और अधिक सशक्त बनाने के लिए ई-शिक्षण टूल्स का भी निर्माण एवं इसमें नवीनता लाने हेतु संगणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न कार्य किए जा रहें हैं।

5.1 छन्द विषयक पारम्परिक अनुसन्धानों का परिचय

पारम्परिक कार्य में टीकाएं, सम्पादित ग्रन्थ, अनुसंधान पत्र, अनुसंधान कार्य आदि शामिल हैं। जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं-

1. मधुसूदन मिश्र (1977) कालिदास के ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्दों पर अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया है। इन्होंने कालिदास के ग्रन्थों में प्रयुक्त सभी छन्दों को न लेकर प्रमुख छन्दों का ही विश्लेषण किया है। इन्होंने यह कार्य अंग्रेजी भाषा में किया है। महाकवि कालिदास द्वारा प्रयुक्त किये गये सभी छन्द पिङ्गलाचार्य के छन्दसूत्र में हैं। लेकिन कहीं-कहीं इन छन्दों के नाम अलग-अलग भी प्राप्त होते हैं तथा छन्दसूत्र में जो स्वरूप इन छन्दों का है उनका कहीं-कहीं विकसित स्वरूप भी प्राप्त होता है।
2. इस क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कार्य मञ्जुला सहदेव (1997) द्वारा 'वाल्मीकि रामायण का छन्द विश्लेषण' इस विषय पर किया गया है। जिसमें इन्होंने सबसे पहले छन्द की उत्पत्ति, विकासक्रम एवं छन्दशास्त्र के आचार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया है। इन्होंने वाल्मीकि रामायण में प्राप्त कुल छन्दों के विषय का विश्लेषण किया गया है तथा इन्होंने इन छन्दों के उदाहरण रामायण से ही दिये है।
3. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को आधार बनाकर श्रीरामकिशोर मिश्र (2002) द्वारा बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। इसमें संस्कृत छन्दों के उद्भव एवं विकास इस विषय का मुख्य आधार है। जिसमें छन्दों के इतिहास, उत्त्पत्ति एवं विकास पर चर्चा की गई है। इसमें कुल तीन अध्याय प्राप्त होते हैं। इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में वैदिक छन्द के पूर्वाचार्यों के विषय में थोडी जानकारी तथा छन्दशास्त्र की परम्परा, वैदिक छन्दों का विभाजन और छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों का परिचय दिया है। द्वितीय अध्याय में संस्कृत के लौकिक छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों का परिचय तथा आचार्य पिङ्गल के देशकाल के विषय में उल्लेख किया है। इसमें अलग-अलग ग्रन्थों के आधार पर छन्दों के विषय में बताया है। तृतीय अध्याय में छन्दों का वर्गीकरण और दण्डक एव गाथा छन्दों का वर्णन भी प्राप्त होता है। इसमें छन्द के गण, अवयव लय, गति, तुक् इत्यादि के साथ प्रत्ययों के विषय में भी बताया गया है। इस समय इस पुस्तक का प्रकाशन बन्द हो गया है।
4. 'नाट्यशास्त्र में छन्दोयोजना एवं पिंगल के छन्द:सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन' नामक शोधकार्य दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा लघुशोध के रूप में कराया गया है। इस शोध में दो आधारभूत आचार्यों की छन्दोविषयक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया

गया है (मीणा, 2003)। इस लघुशोध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। जिसके प्रथम अध्याय में छन्दशास्त्र का इतिहास के अन्तर्गत वैदिकछन्दशास्त्रीय, लौकिक छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों तथा लौकिक छन्दशास्त्रीय टीका ग्रन्थों का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आचार्य पिङ्गल एवं भरतमुनि के अन्तर्गत दोनों आचार्यों के काल, स्थान, रचनाएँ तथा छन्दोविषयक अवधारणाओं का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में पिङ्गल एवं भरत के छन्दों विषयक मतों की तुलना की है तथा चतुर्थ अध्याय में उपसंहार तथा निष्कर्ष दिया गया है। निष्कर्ष स्वरूप इन्होंने आचार्य पिङ्गल तथा भरतमुनि द्वारा वर्णित छन्दों में समानताओं एवं विषमताओं का अध्ययन किया है।

5. छन्द के क्षेत्र में आधुनिक विद्वानों में श्रीकिशोर मिश्र (2006) का योगदान सराहनीय है। इन्होंने छन्दशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास का उल्लेख बड़े ही सरलता एवं सहज भाषा में किया है। इसमें इन्होंने छन्दशास्त्र के वैदिक आधार, साहित्यिक विस्तार तथा शास्त्रीय परिधि का विश्लेषण के लिए छन्दशास्त्र के उद्भव एवं विस्तार पर कार्य किया है। इसमें कुल तीन अध्याय प्राप्त होते हैं। जिसके प्रथम अध्याय में वैदिक छन्दशास्त्र के पूर्वाचार्यों की परम्परा, वैदिक छन्दों का परिचय तथा विभाजन, वैदिक छन्दों के प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय, वैदिक छन्दों व्यवस्था के मुख्य नियम तथा लौकिक छन्दों के विकास की परम्परा का विवरण दिया गया है। द्वितीय अध्याय में संस्कृत के लौकिक छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय, आचार्य पिङ्गल की प्राचीनता तथा देश-काल के विषय में मतभेद, पिङ्गलछन्दसूत्र की टीकाओं का परिचय, विषय क्रम तथा लौकिक छन्द के भेद–प्रभेदों एवं पिङ्गल के नवीन छन्दों के विषय का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय में छन्दों का शास्त्रीय प्रकार, उनकी सांगीतिक लयात्मकता, पद्यछन्दों का वर्गीकरण, मात्रा एवं वर्ण छन्दों का विभाजन, गाथा छन्दों का विवरण, वर्णिक तथा मात्रिक गणों की व्यवस्था तथा प्रत्ययों के विषय में बताया है। इसी अध्याय में पिङ्गलाचार्य के बाद के छन्दशास्त्रकारों के सम्बन्ध में भी बताया है। अन्तिम परिशेषभाग में प्रमुख वैदिक छन्दों की वर्णानुक्रमश: सूचिका, वैदिक छन्दों की अक्षर सङ्ख्यानुसार तालिका तथा गाथादि छन्दों के लक्षण एवं नाम भेदों का विवरण दिया गया है। यह पुस्तक छन्दशास्त्र में प्रवेश हेतु बहुत ही उपयोगी है।

6. पिङ्गलछन्दशास्त्र को आधार बनाकर गोविन्दलाल एस. शाह (2010) द्वारा बहुत ही उत्तम कार्य किया गया है । इन्होंने 'पिङ्गलाचार्य के आसन्नपूर्वोत्तरकालिक संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त लौकिक छन्द' विषय को आधार बनाकर किया है । जिसमें इस शोध को कुल 8 प्रकरणों में विभाजित किया है । जिसके प्रथम प्रकरण में आचार्य पिङ्गल के जीवन काल, जन्मस्थान, संस्कृत साहित्य में पिङ्गल का उल्लेख तथा छन्दसूत्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । द्वितीय प्रकरण में व्याकरणकार पाणिनि की छन्द के सम्बन्ध में अवधारणाएँ, तथा व्याकरणशास्त्र के मुनित्रय अष्टाध्यायीकार महर्षि पाणिनि, वार्तिककार आचार्य कात्यायन तथा महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि के ग्रन्थों प्राप्त उदाहरणों को दिया गया है । तृतीय प्रकरण में आचार्य पिङ्गल के द्वारा बताये गये अनुष्टुप् छन्द के भेदों का विवरण दिया गया है । चतुर्थ प्रकरण में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रयुक्त छन्दों के सन्दर्भ में जानकारी दी गई है । पाँचवें प्रकरण में वाल्मीकि रामायण में प्रयोग हुए छन्दों का विवरण दिया गया है । छठवें प्रकरण में महाभारत में प्रयोग हुए छन्दों का सामान्य परिचय दिया गया है । सातवें प्रकरण में भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र का छन्द के सन्दर्भ में संक्षिप्त परिचय दिया गया है । आठवें प्रकरण में अश्वघोष, भास, कालिदास इन सभी आचार्यों का छन्द के सम्बन्ध में मतों का विश्लेषण किया है । इस प्रकार इनके द्वारा छन्द के क्षेत्र में यह कार्य बहुत महत्त्व रखता है ।

7. आचार्य पिङ्गल के छन्दशास्त्र को आधार बनाकर ऊषा द्विवेदी (2013) द्वारा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से भी शोधकार्य किया गया है । जिसका विषय 'छन्द:शास्त्र का शास्त्रीय एवं विकासात्मक अध्ययन' को लेकर किया गया है । इस शोध प्रबन्ध को कुल सात अध्यायों में विभक्त किया गया है । जिसके प्रथम अध्याय में वेदों के छ: अङ्गों में छन्दशास्त्र की उपादेयता छन्दस् का उद्भव एवं स्वरूप, वैदिक एवं संस्कृत वाङ्मय में छन्द और शास्त्र के स्वरूप की मीमांसा छन्दस् और संगीत की एकात्मकता, वेद मन्त्रों में ऋषि देवता के साथ छन्द की उपादेयता बतायी है । द्वितीय अध्याय में वैदिक छन्दोमीमांसा को आधार बनाकर वेदों में छन्दों की उपयोगिता पर प्राच्य एवं पाश्चात्य विद्वानों में मतभेद का वर्णन दिया है । तृतीय अध्याय में छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय तथा वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों का विवेचन दिया गया है । चतुर्थ अध्याय में लौकिक संस्कृत छन्दों का विवरण रामायण तथा महाभारत के आधार पर दिया गया है । पाँचवें अध्याय में छन्दशास्त्र की विनियोग पद्धति के विषय में

बताया गया है। छठवें अध्याय में संस्कृत छन्दों के विकासक्रम में परवर्ती छन्दों का योगदान बताया है। सातवें अध्याय में उपसंहार दिया गया है। इस प्रकार छन्दों से सम्बन्धित यह बहुत ही सराहनीय कार्य है।

8. संस्कृत छन्द पर बहुत कार्य हुए हैं किन्तु छन्दों के विकासक्रम से सम्बन्धित बहुत कम कार्य हुआ है। संस्कृत छन्दों का विकासक्रम इस विषय को लेकर हीरानाथ झा (2014) द्वारा कार्य किया गया है। जिसमें कुल पाँच अध्याय प्राप्त होते है। इसमें अध्यायों को तरंग नाम से बताया है। जिसके प्रथम तरंग में छन्द शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ, छन्द की परिभाषा तथा छन्दों का प्रयोजन बताया गया है। द्वितीय तरंग में छन्दों की उत्पत्ति और विकास में वैदिक तथा लौकिक छन्दों का विकास के सम्बन्ध में बताया है। तृतीय तरंग में छन्दशास्त्र की प्राचीनता एवं छन्दशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास के विषय में विस्तार से बताया है। चतुर्थ तरंग में छन्दशास्त्र के गणिताध्याय तथा प्रत्ययों का विवेचन किया गया है। पाँचवें तरंग में आधुनिक दृष्टि से छन्दों की लयात्मकता तथा गद्यात्मकता के विषय में बताया गया है। अन्त में परिशिष्ट दिया गया है।
9. संस्कृत छन्दों को लेकर काव्यदीपिका नाम से रूपनारायण त्रिपाठी (2015) द्वारा कार्य किया गया है। जिसमें इन्होंने कुल 24 छन्दों का विवरण दिया है। सर्वप्रथम इसमें छन्दशास्त्र का सामान्य परिचय, छन्दशास्त्र की परम्परा, आचार्य पिङ्गल के सम्बन्ध में जानकारी, छन्दशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय तथा छन्द के अवयवों को बताया है। इसमें इन्होंने मात्रिक, समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त चारों प्रकार के छन्दों का विवरण दिया है। जिसमें सबसे पहले छन्द का लक्षण, उसकी संस्कृत व्याख्या तथा उदाहरण के साथ-साथ उसका विश्लेषण भी दिया है।
10. संस्कृत भाषा से सम्बन्धित बहुत ग्रन्थों की रचना प्राप्त होती है। इसी क्रम में उमाशंकर शर्मा ऋषि (2012) ने संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखा है। जिसमें कुल 21 अध्याय प्राप्त होते हैं। जिसके अन्तिम अध्याय 'अन्य शास्त्रों के मुख्य ग्रन्थ' में छन्दशास्त्र का संक्षिप्त परिचय तथा छन्द से सम्बन्धित प्रमुख ग्रन्थों का परिचय दिया है।
11. वैदिक संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित कपिलदेव द्विवेदी (2010) द्वारा यह कार्य किया गया। जिसका नाम वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति है जिसमें कुल 13 अध्यायों में से छठवा अध्याय

वेदाङ्ग नाम से प्राप्त होता हैं। इसमें छ: वेदाङ्गों का सामान्य परिचय दिया गया है। छन्द वेदाङ्ग में छन्द शब्द का अर्थ, छन्द से सम्बन्धित ग्रन्थों का नाम, छन्दों का महत्त्व, ऋग्वेद में छन्दोविधान, वैदिक छन्दों से सम्बन्धित नियम, मुख्य वैदिक छन्दों का परिचय तथा उन छन्दों की वर्ण सङ्ख्या दी है।

12. आचार्य बलदेव उपाध्याय एवं ओमप्रकाश पाण्डेय (1997) ने संस्कृत-वाङ्मय का बृहद इतिहास नामक एक पुस्तक की रचना की है जिसका द्वितीय खण्ड वेदाङ्ग है। इसमें प्रत्येक वेदाङ्ग का विस्तार से वर्णन किया गया है। छन्द वेदाङ्ग में छन्द का विभिन्न शास्त्रों के आधार पर सामान्य जानकारी दी है। वैदिक छन्दों की आधार सामाग्री, छन्दोविज्ञान की सम्प्रेषण परम्परा, वैदिक छन्दों की प्रमुख और सामान्य विशेषताएँ तथा वैदिक छन्दों की अनेक प्रकार की विधियों का वर्णन किया है। वैदिक छन्दों का वर्गीकरण, ऋग्वेद-संहिता में विभिन्न छन्दों की स्थिती, छन्दों में प्रगाथ की प्रक्रिया तथा प्रमुख वैदिक छन्दों का नाम उनकी वर्ण सङ्ख्या पिङ्गल छन्दशास्त्र का परिचय तथा वैदिक छन्दों के विषय में पाश्चात्त्य विद्वानों के विचारों का उल्लेख किया है।

5.2 संगणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित शोधकार्यों का सर्वेक्षण

सूचना एवं संचार के इस युग में ऑनलाइन शिक्षण टूल्स की महत्ता तेजी से बढ़ रही है। तेजी से बढ़ते हुए एलेक्ट्रॉनिक्स डेवाइसेस् जैसे मोबाइल, कम्प्यूटर, टेबलेट के प्रयोग तथा बहुत सारे सरकारी, निजी, शैक्षिक, व्यापारिक आदि कार्यों को आसान करने तथा जन सामान्य तक सभी सुविधाओं को पहुंचाने के लिये भारत सरकार द्वारा भारत को 'डिजिटल इंडिया' बनाने का संकल्प लिया गया है। जिसके तहत देश के प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षा संस्थानों तक संचार एवं प्रौद्योगिकी को बढावा दिया जा रहा है। जिसमें संगणकीय भाषाविज्ञान की अहम् भूमिका हो सकती है। संस्कृत भाषा को जनसाधारण तक पहुचाने हेतु व इसके विकास के लिए आईटी क्षेत्र के विद्वानों ने पिछले कुछ वर्षों से कम्प्यूटर की सहायता से इस क्षेत्र में काफी कार्य किया है। संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान-विज्ञान को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से संगणकीय टूल्स बनाकर अधिक से अधिक लोगों तक पहुचाने के लिये आईटी क्षेत्र के विद्वानों के द्वारा पिछले कुछ वर्षों से बहुत सारे अनुसंधान एवं विकास के कार्य किये जा रहें हैं। इस क्षेत्र को शोध के माध्यम से आगे

बढाने में आईआईटी मुम्बई (http://www.iitb.ac.in/), आईआईआईटी हैदराबाद (http://sanskrit.uohyd.ernet.in/), सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद (http://www.iith.ac.in/), जेएनयू, दिल्ली (http://sanskrit.jnu.ac.in/) आदि प्रमुख संस्थान हैं। भारतीय भाषा प्रसरण एवं विस्तारण केन्द्र (TDIL), इलेक्टॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (DeitY), संचार एवं सूचना मन्त्रालय, भारत सरकार भारतीय भाषाओं से सम्बन्धित अनुसंधान एवं विकास के लिये वित्तपोषण प्रदान करता है जिसके तहत संस्कृत भाषा के लिये बहुत सारे टूल्स बनाये गये हैं (http://tdil-dc.in/san)। भारतीय भाषाओं विशेष रूप से संस्कृत भाषा से सम्बन्धित कार्यों के लिये जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र ने डॉ. गिरीश नाथ झा (http://www.jnu.ac.in/faculty/gngha) के निर्देशन में संस्कृत भाषा से सम्बन्धित बहुत सारे कार्य किये हैं जिनमें से पाणिनीय संस्कृत व्याकरण के विभिन्न प्रकरण मुख्य हैं। इनमें से सुबन्त विश्लेषक (Chandra, 2006; Jha et al, 2006; Bhadra et al, 2009; Jha et al, 2009; Chandra & Jha, 2011 and Chandra, 2012), यह सिस्टम उदाहरण आधारित है (Agrawal, 2007 and Bhadra et al, 2009)। सुबन्त विश्लेषक सिस्टम बहुत ही उपयोगी सिस्टम है जो किसी वाक्य में सुबन्त की पहचान नियम एवं डेटा के आधार पर करता है अन्तिम पदों जैसे अव्यय एवं क्रिया पद को भी टैग करने के साथ पहचान करके इसका विश्लेषण (प्रकृति प्रत्यय का विभाग) करता है (Chandra, 2006; Jha et al, 2006; Bhadra et al, 2009; Jha et al, 2009; Chandra & Jha, 2011 and Chandra, 2012)। अन्य कार्य जैसे सन्धि विच्छेदक (Kumar, 2007), कृदन्त विश्लेषक (Singh, 2008 and Murali et al, 2014), कारक विश्लेषक (Mishra, 2007), स्त्रीप्रत्ययान्त विश्लेषक (Bhadra, 2007) तथा सुबन्त निर्मापक सन्धि निर्मापक (Kumar, 2008), तिङन्त निर्मापक (Mishra & Jha, 2007) भी उल्लेखनीय हैं। संस्कृत के लिये स्कूल स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण हेतु मल्टीमीडिया आधारित कार्य भी उल्लेखनीय है (Bhaumik, 2009)। संस्कृत व्याकरण के अतिरिक्त भी इस विभाग ने अन्य कार्यों पर बल दिया है जिसमें संस्कृत ग्रन्थों की ऑनलाइन अनुक्रमणिका (Tiwari, 2011) तथा अमरकोश एवं महाभारत (Tripathi, 2008) सर्च आदि मुख्य हैं। 2006 में इस केन्द्र द्वारा संस्कृत भाषा के लिये एक टैगर विकसित किया गया (Chadrashekar,

2006) । इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य संस्कृत से भारतीय भाषाओं में मशीनी अनुवाद करना है । इस क्षेत्र में हैदराबाद विश्वविद्यालय (http://sanskrit.uohyd.ernet.in/), प्रगत संगणन विकास केन्द्र (cdac.in), आईआईआईटी हैदराबाद, तिरूपति विद्यापीठ, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर का भी योगदान भी सराहनीय रहा है । दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने भी डॉ. सुभाष चन्द्र के निर्देशन में भी इस क्षेत्र में कार्य शुरू किया गया है । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बाइसवें वेदान्त कांग्रेस (SCSS, 2015) में इस विभाग द्वारा बहुत से शोधपत्र प्रस्तुत किए गये जिनमें से ई-शिक्षण हेतु छन्द विश्लेषक (Chandra, 2015), सुबन्त रूपसिद्धि (Chandra, Kumar, Kumar & Sakshi, 2015), तिङन्त रूपसिद्धि (Kumar & Chandra, 2015), सनद्यन्त विश्लेषक (Kumar & Chandra, 2015), तद्धितान्त विश्लेषक (Sakshi, 2015) आदि प्रमुख हैं (Department of Sanskrit, DU) । ये सभी अनुसंधान पत्र इसी सम्मेलन में प्रस्तुत किये गये हैं तथा सभी पत्र प्रकाशाधीन हैं । इस विभाग का मुख्य उद्देश्य संस्कृत भाषा के ऑनलाईन शिक्षण हेतु टूल्स बनाना है । इस क्षेत्र में संस्कृत ही नहीं अपितु अन्य भाषाओं के लिये छन्द से सम्बन्धित बहुत सारे कार्य प्राप्त होते हैं जिनमें से प्रमुख हैं-

1. संस्कृत छन्द क्षेत्र में आनन्द मिश्रा (http://sanskrit.sai.uni-heidelberg.de/Chanda/HTML) का योगदान बहुत ही सराहनीय है जिन्होनें 2006-07 में एक वेब आधारित सिस्टम का विकास किया है तथा उनका दावा है कि यह सिस्टम छन्द को पहचानने में समर्थ है । इन्होंने इस सिस्टम में कुल 1352 लौकिक छन्दों के विषय का विवरण दिया है । जिसमें देवनागरी क्रम में छन्दों की सूची भी दी है । आनन्द मिश्रा ने वर्णवृत्त छन्दों में समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त छन्दों को भी अपने सिस्टम में बताया है । किन्तु इन्होंने इन तीनों वृत्त छन्दों का मात्र एक या दो छन्दों के नाम दिये हैं उनकी कोई निश्चित सङ्ख्या नहीं दी है । लौकिक छन्दों के सम्बन्ध में भी इन्होंने किसी भी छन्द का लक्षण तथा उदाहरण के लिये कोई श्लोक भी नही दिया है । न ही गण व्यवस्था दी है । इन्होंने केवल प्रत्येक छन्द का नाम लिखकर उसके चारों पादों में लघु और गुरु चिह्न से चिह्नित कर दिया है । किस छन्द में उसके चारों पादों अर्थात्

समपाद, अर्धसमपाद तथा विषमपाद की अक्षर सङ्ख्या को छन्द के प्रारम्भ में बता दिया गया है।

2. अरबी भाषा (Alabbas et al., 2014) के लिये छन्द की पहचान हेतु एक तंत्र का विकास किया गया है जिसका दावा है कि इस सिस्टम की सहायता से अनुभवहीन लोग भी अरबी कविता में छन्द निर्धारण के सक्षम होगे। इन्होंने अरबी साहित्य में प्राप्त छन्दों की सहायता के लिये यह सिस्टम तैयार किया है। इस सिस्टम में एक टूल बाक्स दिया है। जिसमें यूजर को इनपुट के रूप में छन्द का नाम टाईप कर सर्च करने पर उस छन्द का अर्थ तथा अरबी साहित्य में प्रयोग एक पद्य भी प्राप्त होता है। इस सिस्टम के माध्यम से जिन लोगों को छन्द के विषय में ज्ञान नहीं है। वह भी आसानी से छन्द का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
3. अरबी साहित्यशास्त्र (Golston and Riad, 1995) में अध्ययन की सुविधा हेतु शास्त्रीय अरबी छन्दों के लिए स्वरविज्ञान उचारण को लेकर कार्य किया गया है। जिसमें इन्होंने स्वरविज्ञान को छन्द के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। यह हमें परम्परागत अरबी छन्दों का विश्लेषण करने में जो परेशानियाँ आती हैं उनको दूर कर अध्ययन में सहायता करता है। अरबी साहित्यशास्त्र में छन्दों को तीन भागों में विभाजित किया गया है यथा- लघु, गुरु तथा गुरु गुरु। इनके माध्यम से कविता और छन्द उसके दो पाद प्राप्त होते हैं। यह परम्परागत तथा आधुनिक अरबी कविता को जोड़कर उस पर प्रकाश ड़ालता है तथा उसको लयबद्ध तरीके से समझाने का प्रयास करता है। इस साहित्य में लघु तथा गुरु वर्ण वाला उत्तम छन्द स्वीकार किया गया है। अरबी स्वरविज्ञान तथा कविता के आकार को लेकर बहुत बाधा उत्पन्न होती है। एक कविता के लिए अच्छी प्रकार से निर्मित लयबद्धता उसको समझने में सहायता करती है।
4. बांग्ला गद्य पाठ से बांग्ला पद्य बनाने के लिये एक संगणकीय विधि विकसित करने के लिए शुरुआत की गई है (Das and Gamback, 2014)। भाषाविज्ञान के क्षेत्र में बांग्ला भाषा के लिये यह पहला कार्य है। बांग्ला भाषा वाक्य रचना के लिये बहुत प्रसिद्ध है। इस सिस्टम के द्वारा आधुनिक पीढ़ी के उपयोगकर्ता के लिये कविता को एक क्रम में तथा लयबद्ध तरीके से समझाया गया है। इस सिस्टम में यूजर के द्वारा इनपुट के रूप में बांग्ला भाषा में कोई शब्द डालने पर चाहे वह शब्द प्राकृतिक कविता का हो या आधुनिक कविता का उस शब्द का अर्थ बताने के साथ-साथ उच्चारण भी बतायेगा। बांग्ला भाषा के साहित्य में सामान्यत: तीन प्रकार के छन्द अक्षरवृत्त, मात्रावृत्त और स्वरवृत्त प्राप्त होते हैं। प्रथम दो छन्द तो संस्कृत भाषा में

प्राप्त हो जाते हैं किन्तु अन्तिम छन्द केवल बांग्ला भाषा में ही मिलता है। इस प्रकार बांग्ला भाषा-भाषिकों के लिये यह सिस्टम तैयार किया गया है।

5. तुर्की लोक साहित्य के दीवान पद्य में आर्द छन्द को पहचानने एवं विश्लेषित करने के लिये एल्गोरिथ्म (algorithm) प्रस्तावित की गई है जिसमें दीवान पद्यों का एक छोटा डेटाबेस की सहायता से विश्लेषण किया जाता है (Kurt and Kara, 2012)। शास्त्रीय तुर्की साहित्य की दीवान कविता बहुत प्रसिद्ध है। जिसकी रचना आर्द छन्द में की गई है। तुर्क के उच्च-शिक्षा संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों के साहित्य विभाग में इस शास्त्रीय कविता को आर्द छन्द में समझाने का प्रयास किया जा रहा है। आर्द छन्द का प्रयोग अरबी, उर्दू, फारसी तथा अन्य पूर्वी भाषाओं में किया जाता है। तुर्क भाषा में जो कविताएँ आर्द छन्द में लिखी गई हैं उनके पद्यों के अर्थ विद्यार्थियों के लिये पढ़ने में बहुत कठिन तथा अत्यधिक लम्बे है। यह सिस्टम एल्गोरिथ्म के द्वारा तुर्क कविताओं में आर्द छन्द को पहचान ने में सक्षम है। यह आर्द छन्द में लिखित कविताओं को एक सरल तरीके से समझने के लिये तैयार किया गया है। इस सिस्टम का परिक्षण या यूजर के द्वारा इनपुट के रूप में छन्द डाला गया जिसके परिणाम सही रहे है। अभी इसमें एक छोटी सी कविता डाल कर यूज किया जा रहा है। भाषाविज्ञान के क्षेत्र में तुर्की साहित्य का यह एक बहुत बड़ा योगदान है।
6. संस्कृत वृत्त छन्दों की पहचान के लिए एक अध्ययन तथा एक कम्प्यूटर प्रोग्राम विकसित किया गया है (Murthy, 2003)। जिसमें इन्होंने लघु-गुरु चिह्नों के द्वारा छन्द का विश्लेषण किया है। इस सिस्टम में समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त छन्दों का विवरण दिया है।
7. कलिप्पा नामक तमिल पद्य पहचान के लिए एक सिस्टम उपलब्ध है जिसका दावा है कि यह तमिल भाषा के पद्यों में 80% सटीकता के साथ कार्य करता है (Sridhar et al., 2013)।
8. मलयालम भाषा के लिए लघु एवं गुरु मात्राओं की पहचान के लिए उदाहरण आधारित एक सिस्टम भी विकसित किया गया है (Manu et al., 2013)। जो किसी भी मलयालम में नियम के आधार पर मात्राओं (लघु एवं गुरु) की पहचान करता है।
9. अरबी साहित्य में परम्परागत रूप से प्रचलित प्राचीन छन्दों को लेकर शोधकार्य किया गया है (Joan, 1973)। जिसमें प्राचीन छन्दों का विवरण विस्तार से बताया गया है।

10. अरबी साहित्य में हौसा कविता अपना बहुत महत्त्व रखती है। इस कविता में प्रयोग छन्दों पर आधारित एक शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है (Schuh, 1996)।
11. उर्दू साहित्य में प्राप्त छन्दों को आधार बनाकर एक शोध किया गया है। जिसमें उर्दू गजल में प्रयोग हुए छन्दों का विवरण दिया गया है (Pritchett and Khaliq, 1987)।
12. ग्रीक भाषा साहित्य में प्रयुक्त छन्द और लेटिन कविताओं के आधार पर एक सराहनीय कार्य किया गया है (Ostwald and Rosenmeyer, 1994)।
13. ग्रीक छन्दों का सामान्य परिचय पर एक सराहनीय कार्य किया गया है (Raven, 1962)।
14. अंग्रेजी साहित्य में प्राप्त छन्दों पर आधारित एक पत्र प्रस्तुत किया गया है। जिसमें छन्दों का परिचय अमेरिकन साहित्य में प्रयोग छन्दों की जानकारी दी है (Moore, 1992)।

6. अनुसन्धान हेतु छन्दचुनाव

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है पिङ्गलछन्दशास्त्र में कुल 119 वैदिक तथा 162 लौकिक छन्दों का लक्षण एवं उदाहरण सविस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इस अनुसन्धान के लिए 162 लौकिक छन्दों में से केवल 40 छन्दों का चुनाव किया गया है। इस चुनाव का आधार दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए एवं एम.ए. (संस्कृत) के पाठ्यक्रम में निश्चित की गई पाठ्यपुस्तकें हैं। जिसके लिए पद्य से सम्बन्धित सभी पाठ्यपुस्तकों का संकलन किया गया तथा शोधार्थी द्वारा उसमें प्रयुक्त सभी छन्दों की सूची विस्तृत सूची बनाई गई। इन्हीं पाठ्यक्रम में पद्य से सम्बन्धित बीए में कुल 9 तथा एमए के पाठ्यक्रम में कुल 4 पुस्तकों की सूची प्राप्त हुई। इस प्रकार कुल 13 पुस्तकों के आधार पर यह सर्वे किया गया। जिसमें हमें कुल 40 मौलिक छन्दों की सूची प्राप्त हुई। इससे यह उद्देश्य भी सिद्ध हो जाता है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में जो पुस्तके लगी है, उन्हीं पुस्तको को लगभग सभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। उन पुस्तकों में लगभग यही सारे छन्द प्रयोग होते हैं। सबसे पहले इन सभी पुस्तकों की सूची के साथ-साथ उनकी कुल अध्याय सङ्ख्या भी यहाँ दी गयी है। जिनका वर्णन तालिका सङ्ख्या 2.10 में इस प्रकार किया गया है।

क्र. सं.	चुनी हुई गन्थों की सूची	कुल अध्याय सङ्ख्या	कुल पद्य सङ्ख्या	प्रयुक्त हुए कुल छन्दों की संख्या
1.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क	226	23
2.	मुद्राराक्षसम्	7 अङ्क	168	18
3.	स्वप्नवासवदत्तम्	6 अङ्क	58/56	11
4.	रघुवंशम्	19 सर्ग	1539	15
5.	कुमारसम्भवम्	17 सर्ग	1113	13
6.	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग	1030	19
7.	नीतिशतकम्	--	121/125	15
8.	श्रीमद्भगवदगीता	18 अध्याय	700	1
9.	सौन्दरनन्दम्	18 सर्ग	1063	18
10.	मेघदूतम्	2 भाग	125	1
11.	नैषधचरितम्	22 सर्ग	2804/2830	18
12.	उत्तररामचरितम्	7 अङ्क	256	22
13.	मृच्छकटिकम्	10 अङ्क	380	28

तालिका 2.10: पुस्तकों की सूची

अब अनुसन्धान के लिये चुनी हुई प्रत्येक ग्रन्थ में प्राप्त छन्दों की सूची में इनके नाम तथा इनका प्रयोग कितनें पद्यों में हुआ है। इन सबका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.11 में दिया गया है।

क्र. सं.	छन्द का नाम	छन्द का प्रकार
1.	आर्या	मात्रिक
2.	उपगीति	मात्रिक
3.	गीति	मात्रिक
4.	मात्रासमक	मात्रिक
5.	विपुला	मात्रिक
6.	वैतालीय	मात्रिक
7.	अनुष्टुप्	समवृत्त
8.	इन्द्रवज्रा	समवृत्त
9.	उपजाति	समवृत्त
10.	उपेन्द्रवज्रा	समवृत्त
11.	तोटक	समवृत्त

12.	दोधक	समवृत्त
13.	द्रुतविलम्बित	समवृत्त
14.	पृथ्वी	समवृत्त
15.	प्रमिताक्षरा	समवृत्त
16.	प्रहर्षिणी	समवृत्त
17.	मञ्जुभाषिणी	समवृत्त
18.	मन्दाक्रान्ता	समवृत्त
19.	मालिनी	समवृत्त
20.	रथोद्धता	समवृत्त
21.	रुचिरा	समवृत्त
22.	वंशस्थ	समवृत्त
23.	वसन्ततिलका	समवृत्त
24.	विद्युन्माला	समवृत्त
25.	वैश्वदेवी	समवृत्त
26.	शार्दूलविक्रीडित	समवृत्त
27.	शालिनी	समवृत्त
28.	शिखरिणी	समवृत्त
29.	सुमधुरा	समवृत्त
30.	सुवदना	समवृत्त
31.	स्रग्धरा	समवृत्त
32.	हरिणी	समवृत्त
33.	भुजङ्गप्रयात	समवृत्त
34.	अपरवक्त्र	अर्धसमवृत्त
35.	पथ्यावक्त्र	अर्धसमवृत्त
36.	पुष्पिताग्रा	अर्धसमवृत्त
37.	मालभारिणी	अर्धसमवृत्त
38.	वियोगिनी	अर्धसमवृत्त
39.	उद्गता	विषमवृत्त
40.	गाथा	विषमवृत्त

तालिका 2.11: अनुसन्धान हेतु छन्दों की सूची

अब इन सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर इन छन्दों में से अनुसन्धान के लिए छन्दों का चुनाव किया गया। जिनकी कुल सङ्ख्या 40 हैं। जिनका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.11 में दिया जा चुका है। महाकवि कालिदासविरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 7 अङ्कों में कुल 196 पद्यों का प्रयोग किया गया है। जिसमें सबसे अधिक आर्या छन्द का प्रयोग 24 पद्यों में हुआ है, इसके पश्चात् यथाक्रम अनुष्टुप् का 23, वसन्ततिलका 20 तथा शार्दूलविक्रीडित में 15 पद्यों का प्रयोग हुआ है। कुल चार छन्दों (त्रिष्टुभ्, रथोद्धता, रुचिरा तथा शालिनी) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। महाकवि विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस के 7 अङ्कों में कुल 168 पद्यों का प्रयोग हुआ है। जिसमें सबसे अधिक 38 पद्यों में शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग प्राप्त होता है। आर्या 26, स्रग्धरा 24, अनुष्टुप् 22 तथा वसन्ततिलका और शिखरिणी छन्दों का कुल 19 पद्यों में प्रयोग प्राप्त होता है। कुल छः छन्दों (इन्द्रवज्रा, पुष्पिताग्रा, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता, वंशस्थ, तथा सुवदना) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। स्वप्नवासवदत्त नाटक में महाकवि भास ने 6 अङ्कों में कुल 58 (किसी-2 पुस्तक में 57) पद्य प्राप्त होते हैं। जिसमें सबसे अधिक 28 पद्यों में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग मिलता है। वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग केवल 11 पद्यों में प्राप्त होता है। कुल चार छन्दों (वैश्वदेवी, उपजाति, उपेन्द्रवज्रा तथा हरिणी) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। महाकवि कालिदासकृत रघुवंश महाकाव्य के 19 सर्गों में कुल 1539 पद्य प्राप्त होते हैं। जिनमें सबसे अधिक 574 पद्यों में उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है। अनुष्टुप् का 549, रथोद्धता 147, वियोगिनी 90, वंशस्थ 69, द्रुतविलम्बित 54 तथा 44 पद्यों में वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग प्राप्त होता है। कुल पाँच छन्दों (तोटक, मञ्जुभाषिणी, स्वागता, हरिणी तथा शालिनी) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। महाकवि कालिदासकृत कुमारसम्भव महाकाव्य के 17 सर्गों में कुल 1113 पद्यों का प्रयोग हुआ है। जिसमें सर्वाधिक 449 पद्यों में उपजाति छन्द का उल्लेख मिलता है। क्रमानुसार अनुष्टुप् का 264, वंशस्थ का 185, रथोद्धता का 91, वसन्ततिलका 58 तथा वियोगिनी छन्द का 44 पद्यों में प्रयोग प्राप्त होता है। कुल दो छन्दों (शार्दूलविक्रीडित तथा स्वागता) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ

है । किरातार्जुनीयम् महाकाव्य महाकवि भारवि की एकमात्र कृति है । इसमें कुल 19 सर्गों में 1030 पद्य प्राप्त होते हैं । जिसमें सर्वाधिक वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया है इसके अतिरिक्त उपजाति, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, स्वागता, मालिनी तथा पुष्पिताग्रा आदि वृत्तों का यथाक्रमानुसार सङ्ख्या में प्रयोग किया है। आचार्य भर्तृहरिविरचित नीतिशतक में कुल 121/125 पद्य प्राप्त होते हैं । जिसमें सबसे अधिक शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग 35 पद्यों में हुआ है, अनुष्टुप् और वसन्ततिलका 17-17, शिखरिणी 13 तथा उपजाति का 8 पद्यों में प्रयोग हुआ है । कुल चार छन्दों (मन्दाक्रान्ता, वंशस्थ, उपेन्द्रवज्रा तथा शालिनी) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। श्रीमद्भगवद्-गीता में कुल 7000 पद्य प्राप्त होते हैं। जिसमें सबसे अधिक अनुष्टुप् छन्द का ही प्रयोग मिलता है । यह महाकाव्य आर्यभदन्ताश्वघोष विरचित है, इसमें कुल 18 सर्गों में कुल 1063 पद्य प्राप्त होते हैं । जिसमें सर्वाधिक 459 पद्यों में उपजाति छन्द का प्रयोग मिलता है । अनुष्टुप् का 384, वंशस्थ का 78, वियोगिनी 56, उद्गता 41 तथा वसन्ततिलका का 10 पद्यों में प्रयोग प्राप्त होता है । कुल पाँच छन्दों (अपरवक्त्र, वैतालीय, सुवदना, रुचिरा तथा स्रग्धरा) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है । महाकवि कालिदास रचित इस मेघदूतम् खण्डकाव्य के दो भागों पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ में कुल 125 पद्य प्राप्त होते हैं। महाकवि ने इस सम्पूर्ण काव्य में केवल मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग किया है। महाकवि श्रीहर्षप्रणीत नैषधचरित महाकाव्य के 22 सर्गों में कुल 2830/2804 पद्य प्राप्त होते हैं। जिसमें उपजाति छन्द का प्रयोग सात सर्गों में सबसे अधिक हुआ है तथा उसके बाद वंशस्थ नामक छन्द चार सर्गों में, वसन्ततिलका तथा स्वागता नामक छन्दों का प्रयोग 2-2 सर्गों में प्रधान रूप से हुआ है । द्रुतविलम्बित, रथोद्धता, वैतालीय तथा हरिणी नामक छन्दों में से प्रत्येक का प्रयोग 1-1 सर्ग में किया गया है। इस प्रकार और भी छन्दों का प्रयोग प्राप्त होता है। महाकवि भवभूतिप्रणीत उत्तररामचरित में 7 अङ्कों में कुल 256 पद्य प्राप्त होते हैं। जिसमें सर्वाधिक अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग 86 पद्यों में, शिखरिणी छन्द 30, वसन्ततिलका छन्द 26, शार्दूलविक्रीडित छन्द 25, मालिनी छन्द 16 तथा मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग 13 पद्यों में प्राप्त

होता है। कुल चार छन्दों (मालभारिणी, वंशस्थ, उपेन्द्रवज्रा तथा श्लोक) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। महाकवि शूद्रक विरचित मृच्छकटिक एक प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें 10 अङ्कों में कुल 380 पद्य प्राप्त होते है। प्रस्तुत प्रकरण में सर्वाधिक पथ्यावक्त्र छन्द का प्रयोग 70 पद्य में उसके बाद यथाक्रम आर्या छन्द 63, वसन्ततिलका छन्द 44 तथा उपजाति छन्द का 33 पद्यों में प्रयोग प्राप्त होता है। कुल सात छन्दों (मात्रासमक, प्रमिताक्षरा, उपगीति, सुमधुरा, विद्युन्माला, रुचिरा तथा शालिनी) का प्रयोग एक-एक पद्यों में ही हुआ है। यह शोधकार्य इन्हीं 40 छन्दों को आधार बनाकर किया गया है तथा वेब आधारित ऑनलाइन सूचना तंत्र इन्हीं के लिये बनाया गया है। जिससे कोई भी शिक्षक एवं छात्र लाभान्वित हो सकते हैं।

तृतीय अध्याय

अनुसन्धान के लिए चुने हुये छन्दों का परिचय एवं मात्रा गणना के नियम

जैसाकि पिछले अध्याय में बताया गया है कि इस शोधकार्य के लिए कुल 40 छन्दों का चुनाव किया गया है जिसका विवरण तालिका सङ्ख्या 2.11 में दिया गया है। अब इस अध्याय में इन्हीं छन्दों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. अनुसन्धान के लिए चुने हुये छन्दों का परिचय

चुने हुए कुल 40 छन्दों में से कुल 6 मात्रिक, 27 समवृत्त, 5 अर्धसमवृत्त तथा 2 विषम वृत्त छन्द हैं। जिसका विस्तार से विवेचन किया जा रहा है।

मात्रिक छन्दों का परिचय

आचार्य पिङ्गल के अनुसार मात्रिक छन्द उन छन्दों को कहते हैं जिनमें मात्राओं की गणना के आधार पर छन्द निर्धारण किया जाता है। शोध के लिये चुने हुए 40 छन्दों में से केवल 6 मात्रिक छन्द हैं। जिनका विवेचन नीचे किया जा रहा है। मात्रिक छन्द के विषय में विस्तार से इसी लघुशोध के द्वितीय अध्याय में बता दिया गया है।

1.1 मात्रिक छन्द

जिन छन्दों में मात्राओं की गणना की जाती है उनको मात्रिक छन्द कहते है। इस शोध में 6 मात्रिक छन्दों का चुनाव किया गया है।

1.1.1 आर्या

आर्या एक मात्रिक छन्द है अर्थात् इसमें मात्राओं की गणना की जाती है। जिस छन्द के पहले और तीसरे पाद में 12-12 मात्राएँ हों और दूसरे चरण में 18 मात्राएँ तथा चौथे चरण में 15 मात्राएँ हों तो उस छन्द को आर्या छन्द कहते हैं।

लक्षण

श्रुतबोध (ठक्कुर एवं मिश्र, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या[139]।।

अर्थात् जिस छन्द के पहले और तीसरे पाद में 12-12 मात्राएँ हों और दूसरे चरण में 18 मात्राएँ तथा चौथे चरण में 15 मात्राएँ हों तो वह आर्या छन्द होता है। आर्या छन्द के कुल 16 भेद प्राप्त होते हैं। मात्रिक छन्दों में आर्या सबसे प्रमुख है (तैलङ्ग, 2013)।

उदाहरण

आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेत:[140] ॥ (शास्त्री, 2008)।

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ	12 मात्राएँ
	आ प रि तो षा द्वि दु षां	
द्वितीयपाद	। ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ	18 मात्राएँ
	न सा धु मन्ये प्र यो ग वि ज्ञा नम्।	
तृतीयपाद	। । । । । ऽ । ऽ ऽ	12 मात्राएँ
	ब ल व द पि शि क्षि ता ना-	
चतुष्पाद	ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ	15 मात्राएँ
	मा त्मन्य प्रत्य यं चे त: ॥	

[139] श्रुतबोध- 4.

[140] अभिज्ञानशाकुन्तल- 1.2.

1.1.2 उपगीति

उपगीति आर्या छन्द का एक भेद है। जिस छन्द के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनों ही भाग आर्या के उत्तरार्द्ध के समान हों, उसे महाकवियों ने उपगीतिछन्द कहा है। इसके कुल 16 भेद प्राप्त होते हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

आर्या-परार्ध-तुल्ये दलद्वये प्राहुरुपगीतिम्[141]।

अर्थात् जिसका पूर्वार्ध और उत्तरार्ध आर्या के उत्तरार्ध के समान होता है, उसे उपगीति छन्द कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

आर्याद्वितीयकेऽर्धे यद् गदितं लक्षणं तत् स्यात्।

यद्युभयोरपि दलयोरुपगीतिं तां मुनिर्ब्रूते[142] ॥

अर्थात् जिस छन्द के दोनों दलों में आर्या के उत्तरार्ध का लक्षण मिले तो पिङ्गलमुनि उसे उपगीति कहते हैं अथवा जिस छन्द के प्रथम दो पादों और अन्तिम दोनों पादों में 27-27 मात्राएँ प्राप्त हो तो उसे उपगीति छन्द कहते हैं (त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुरारातिम्।

अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीते:[143] (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) ॥

---

[141] छन्दोमञ्जरी- 5.9.

[142] वृत्तरत्नाकर- 2.9.

[143] वृत्तरत्नाकर- 2.9.

उदाहरण विश्लेषण

।। ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ	27 मात्राएँ
न व गो प सुन्द री णां रा सो ल्ला से मु रा रा तिम् ।	
ऽ ऽ । ।। । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽऽ	27 मात्राएँ
अस्मा र य दु प गी ति: स्वर्ग कु रङ्गी दृ शां गी ते: ॥	

1.1.3 गीति

गीति छन्द भी आर्या का एक भेद है। जिस छन्द के दोनों भागों में आर्या छन्द के प्रथम भाग का लक्षण किसी तरह से घटित हो अर्थात् जिस छन्द के प्रथम और द्वितीय तथा तृतीय और चतुर्थ चरणों में 30-30 मात्राएँ हों या जिस छन्द के प्रथम चरण में 12, द्वितीय में 18, तृतीय में 12 और चतुर्थ चरण में 18 मात्राएँ हों उसे आचर्य गीति छन्द कहते हैं (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012)।

लक्षण

केदारभट्टकृत वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है-

आर्याप्रथमदलोक्तं यदि कथमपि लक्षणं भवेदुभयोः।
दलयोः कृतयतिशोभां तां गीतिं गीतवान् भुजङ्गेशः[144] ।।

अर्थात् जिसके दोनों दलों में आर्या के पूर्वार्ध का लक्षण किसी तरह मिले उसे गीति छन्द कहते है।

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (त्रिपाठी, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

आर्या प्रथमार्द्धसमं यस्याः परार्द्धमाह तां गीतिम्[145]।

अर्थात् गीति का पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध आर्या के पूर्वार्ध के समान होता है। वृत्तरत्नाकर की नारायणी टीका के अनुसार गीति छन्द के 16 भेद प्राप्त होते हैं। (त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

---

[144] वृत्तरत्नाकर- 2.8.

[145] छन्दोमञ्जरी- 5.8, पृष्ठ सङ्ख्या- 290.

उदाहरण

केशबवंशजगीतिर्लोकमनोहरिणहारिणी जयति।

गोपीमानग्रन्थेर्विमोचनी दिव्यगायनाश्चर्या[146] (तैलङ्ग, 2013 तथा त्रिपाठी, 2012)॥

उदाहरण विश्लेषण

ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । । ऽ । ऽ । । ऽ

के श ब वं श ज गी तिर्लो क म नो ह रि ण हा रि णी ज य ति। 30 मात्राएँ

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ। ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ

गो पी मा नग्रन्थेर्वि मो च नी दि व्य गा य ना श्च र्या॥ 30 मात्राएँ

1.1.4 मात्रासमक

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं तथा 9वीं मात्रा लघु और अन्तिम मात्रा गुरु हो तो उसको मात्रासमक छन्द कहते है (शास्त्री, 2014 तथा त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

मात्रासमकं नवमो ल्गान्तम्[147]।

अर्थात् जिस छन्द में नवीं मात्रा लघु और अन्तिम मात्रा गुरु हो, उसे मात्रासमक वृत्त कहते हैं।

पिङ्गलछन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया है-

गन्ता द्विर्वसवो मात्रासमकं ल् नवम:[148]।

---

[146] छन्दोमञ्जरी- 5.8, पृष्ठ सङ्ख्या- 291.

[147] वृत्तरत्नाकर- 2.32.

[148] छन्दसूत्र- 4.42.

अर्थात् जिस छन्द के चारों पादों में अन्तिम अक्षर गुरु हो, 16-16 मात्राएँ हों और नौवीं मात्रा लघु अक्षर हो, उसे मात्रासमक छन्द कहते हैं।

उदाहरण

अश्मश्रुमुखो वि-रलैर्दन्तै-र्गम्भीराक्षो मि-तनासाग्र:।

निर्मोसहनु: स्फुटितै: केशै-र्मात्रासमकं ल-भते दु:खम्[149] (उपाध्याय तथा त्रिपाठी, 2012) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद		ल. गु.
	ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ	ऽ
	अश्म श्रु मु खो वि-र लै र्द	न्तै-
द्वितीयपाद		ल. गु.
	ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ	ऽ
	र्गम्भी रा क्षो मि त ना सा	ग्र:।
तृतीयपाद		ल. गु.
	ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ	ऽ
	निर्मो स ह नु: स्फु टि तै:	के शै-
चतुष्पाद		ल. गु.
	ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ	ऽ
	र्मा त्रा स म कं ल भ ते	दु:खम् ॥

1.1.5 विपुला

जिस आर्या छन्द के दोनों चरणों में प्रारम्भ के तीन गणों को छोड़कर शेष दो चरण हों तो उसको पिङ्गलनाग मुनि विपुला कहते हैं।

लक्षण

केदारभट्टकृत वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) तथा गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

---

[149] वृत्तरत्नाकर- 2.32.

संलङ्घ्य गणत्रयमादिमं, शकलयोर्द्वयोर्भवति पादः ।

यस्यास्तां पिङ्गलनागो, विपुलामिति समाख्याति[150] ॥

अर्थात् जिस आर्या के आदि के तीन चातुर्मात्रिक गणों को छोडकर पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में दोनों में कहीं दो स्थानों पर विराम होता है, उसे विपुला छन्द कहते हैं । इस छन्द के प्रथम भाग में 30 मात्राएँ तथा द्वितीय भाग में 27 मात्राएँ होती हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; शास्त्री, 2014 तथा त्रिपाठी, 2012) ।

उदाहरण

संलङ्घ्य गणत्रयमादिमं,शकलयोर्द्वयोर्भवति पादः ।

यस्यास्तां पिङ्गलनागो,विपुलामिति समाख्याति[151] (तैलङ्ग, 2013) ॥

उदाहरण विश्लेषण

ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ 30 मात्राएँ

सं लङ् घ्य ग ण त्र य मा दि मं, श क ल योर्द्व योर्भ व ति पा द: ।

ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ 27 मात्राएँ

यस्यास्तां पिङ्ग ल ना गो, वि पु ला मि ति स मा ख्या ति ॥

1.1.6 वैतालीय

वैतालीय एक मात्रिक छन्द है । जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में 14 मात्राएँ हों और द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में 16 मात्राएँ हों तथा चारों पादों के अन्त में यह क्रम हो रगण, 1 लघु, 1 गुरु उसको वैतालीय छन्द कहते हैं ।

---

[150] वृत्तरत्नाकर- 2.4. / छन्दोमञ्जरी- 5.4.

[151] वृत्तरत्नाकर- 2.4. / छन्दोमञ्जरी- 5.4.

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

षड् विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः ।

न समात्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः[152] ॥

अर्थात् इसके विषम पाद अर्थात् प्रथम एवं तृतीय पाद में क्रमश: 6-6 मात्राएँ, एक रगण एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होना चाहिए । इस प्रकार प्रथम और तृतीय पाद में 14-14 मात्राएँ होनी चाहिए। इस छन्द के द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमश: 8-8 मात्राएँ, एक रगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होता है और 16-16 मात्राएँ होती हैं। वैतालीय छन्द के कुल दस हजार आठसौ सोलह (10,816) भेद प्राप्त होते हैं (पाठक, 2015; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012 तथा त्रिपाठी, 2012)।

उदाहरण

घुसृणेन मदेन चर्चितं, तव यन्निन्दति राधिके कुचम् ।

मुदमाततनुतेऽत्र पाकिनं, तद् वैतालीयं फलं हरेः[153] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012) ॥

[152] वृत्तरत्नाकर- 2.12.

[153] वृत्तरत्नाकर- 2.12.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद रगण ल. गु.

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

घु सृ णे न म दे न चर्चि तं,

द्वितीयपाद रगण ल. गु.

। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

त व यन्निन्द ति रा धि के कु चम्।

तृतीयपाद रगण ल. गु.

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

मु द मा त नु तेऽत्र पा कि नं,

चतुष्पाद रगण ल. गु.

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ

तद् वै ता ली यं फ लं ह रे:॥

समवृत्त छन्दों का परिचय

आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दसूत्र में समवृत्त छन्द को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिस छन्द के चारों चरणों में अक्षरों या वर्णों की सङ्ख्या समान रहती है। शोध के लिये चुने हये 40 छन्दों में से केवल 27 समवृत्त छन्द हैं। जिनका विवेचन नीचे किया जा रहा है। समवृत्त छन्द को इसी शोधप्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में विस्तार से बता दिया गया है।

1.2 समवृत्त छन्द

जिस छन्द के चारों चरणों में वर्णों की सङ्ख्या एक समान रहती है उनको समवृत्त छन्द कहते है। इस शोध में कुल 27 समवृत्त छन्दों का चुनाव किया गया है।

1.2.1 अनुष्टुप्

अनुष्टुप् एक वार्णिक या समवृत्त छन्द है इसके चारों चरणों में छठा अक्षर गुरु तथा पाँचवां लघु होता है। दूसरे और चौथे चरणों में सातवां अक्षर लघु होता है तथा पहले और तीसरे चरणों में

सातवां अक्षर गुरु होता है अर्थात् प्रथम पाद में गुरु, द्वितीय पाद में लघु, तृतीय पाद में गुरु और चतुर्थ पाद में लघु।

लक्षण

श्रुतबोध (ठक्कुर एवं मिश्र, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।

द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः[154] ॥

अर्थात् जिस छन्द के चारों चरणों में छठा अक्षर गुरु तथा पाँचवां लघु होता है। दूसरे और चौथे चरणों में सातवां अक्षर लघु हो तथा पहले और तीसरे चरणों में सातवां अक्षर गुरु होता है। वाल्मीकि रामायण से ही इसका शुभारम्भ हुआ था। रघुवंश तथा गीता का आरम्भ भी इसी छन्द से हुआ है। अनुष्टुप् को श्लोक भी कहते हैं। अनुष्टुप् छन्द के अनेक भेद मिलते हैं परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग मिलता है उसके प्रत्येक चरण या पाद में आठ वर्ण प्राप्त होते हैं। इसका वेदों में भी प्रयोग हुआ है। (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)।

उदाहरण

गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।

कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः[155] (विद्यालङ्कार, 2008) ॥

---

[154] श्रुतबोध- 10.

[155] स्वप्नवासवदत्त- 4.10.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	। ऽ ऽ
	गुणानां वा वि शाला नां
द्वितीयपाद	। ऽ ।
	सत्काराणां च नि त्य शः ।
तृतीयपाद	। ऽ ऽ
	कर्तारः सु ल भा लो के
चतुष्पाद	। ऽ ।
	विज्ञातारस्तु दु र्लभाः ॥

1.2.2 इन्द्रवज्रा

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से दो तगण, एक जगण और दो गुरु हों, तो उस छन्द को इन्द्रवज्रा कहते हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) तथा केदारभट्टकृत वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः[156]।

अर्थात् प्रत्येक चरण में यथाक्रम अन्त्यलघु दो तगण, मध्यगुरु एक जगण और दो गुरुवर्ण होते हैं, उसे इन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

इन्द्रवज्रा तौ ज्-गौ ग्[157]।

---

[156] वृत्तरत्नाकर- 3.28 तथा छन्दोमञ्जरी- 2.28.

[157] छन्दसूत्र- 6.16.

अर्थात् इसके प्रत्येक पाद में 11-11 के क्रम से कुल 44 अक्षर प्राप्त होते हैं। इस छन्द में प्रत्येक चरण के अन्त में यति का प्रयोग हुआ है (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)।

उदाहरण

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा[158] (शास्त्री, 2008) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	तगण	तगण जगण गु.गु.
	ऽऽ । ऽ ऽ ।।ऽ । ऽऽ	
	अर्थो हि कन्या परकीय एव	
द्वितीयपाद	तगण	तगण जगण गु.गु.
	ऽऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽऽ	
	तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।	
तृतीयपाद	तगण	तगण जगण गु.गु.
	ऽऽ । ऽ ऽ ।।ऽ । ऽऽ	
	जातो ममायं विशदः प्रकामं,	
चतुष्पाद	तगण	तगण जगण गु.गु.
	ऽऽ । ऽ ऽ ।।ऽ । ऽऽ	
	प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥	

विशेष- प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः तगण, तगण, जगण, तथा दो गुरु वर्ण हैं, अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है। इन श्लोको के प्रथम चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्द पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः इस अन्तिम वर्ण को आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जाता है।

[158] अभिज्ञानशाकुन्तल- 4.22.

1.2.3 उपेन्द्रवज्रा

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 अक्षर हों और प्रत्येक चरण में क्रम से एक जगण, एक तगण और फिर एक जगण एवं दो गुरु हों तो उसे 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण के अन्त में यति होती है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से है-

उपेन्द्रवज्रा ज-त-जास्ततो गौ[159]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु हों तो वह उपेन्द्रवज्रा छन्द हैं।

आचार्य पिङ्गलकृत छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस का लक्षण इस प्रकार दिया है-

उपेन्द्रवज्रा ज्-तौ ज्-गौ ग्[160]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से एक जगण, एक तगण और फिर एक जगण एवं दो गुरु हों तो उसे 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं।

उदाहरण

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव[161] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)॥

---

[159] वृत्तरत्नाकर- 3.29.

[160] छन्दसूत्र- 6.17.

[161] छन्दसूत्र- 6.17. (यह श्लोक शायद पाण्डवगीता में प्राप्त होता है)।

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	जगण	तगण	जगण	गु. गु.
	।ऽ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ ऽ
	त्वमेव	माताच	पितात्व	मे व,
द्वितीयपाद	जगण	तगण	जगण	गु. गु.
	। ऽ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ ऽ
	त्वमेव	बन्धुश्च	सखात्व	मे व।
तृतीयपाद	जगण	तगण	जगण	गु. गु.
	।ऽ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ ऽ
	त्वमेव	विद्याद्र	विणंत्व	मे व,
चतुष्पाद	जगण	तगण	जगण	गु. गु.
	। ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	त्वमेव	सर्वंम	मदेव	दे व॥

विशेष- प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं। इन श्लोकों के चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्द पूर्ति गुरु वर्ण से होती है। अतः इसे आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जाता है यति पाँच वर्णों के बाद होती है।

1.2.4 उपजाति

उपजाति छन्द इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दो के मिश्रण से बनता है। उपजाति छन्द के चारों पादों में से कम से कम एक-एक पाद तो इन दोनों छन्दों का होना चाहिए । यदि उपेन्द्रवज्रा (एक जगण, एक तगण, एक जगण, दो गुरु) का एक चरण तथा इन्द्रवज्रा (दो तगण, एक जगण, दो गुरु) के तीन चरण हों या दोनों छन्दों के दो-दो चरण हों या तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के और एक चरण इन्द्रवज्रा का हो तो इन सभी अवस्थाओं में उपजाति छन्द होता है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

अनन्तरोदीरित - लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ता।

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, वदन्ति जातिष्विदमेव नाम[162] ॥

अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के पादों के विभिन्न मिश्रण से 14 भेद हो जाते हैं। उसे उपजाति कहते हैं (त्रिपाठी, 2015 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति[163] (गुप्ता, 2008) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	तगण	तगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	येषांन	विद्यान	तपोन	दानं
द्वितीयपाद	तगण	तगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	ज्ञानंन	शीलंन	गुणोन	धर्मः।
तृतीयपाद	तगण	तगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	तेमर्त्य	लोकेभु	विभार	भूता
चतुष्पाद	जगण	तगण	जगण	गु. गु.
	।ऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	मनुष्य	रूपेण	मृगाश्च	रन्ति ॥

विशेष- प्रस्तुत श्लोक के पहले तीन चरणों में तगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण के क्रम से 11-11 वर्ण हैं तथा प्रथम तीनों पादों में इन्द्रवज्रा छन्द है। अन्तिम पाद में उपेन्द्रवज्रा छन्द है।

---

[162] वृत्तरत्नाकर- 3.30/31.

[163] नीतिशतक- 12.

एक ही श्लोक के कुछ चरणों में इन्द्रवज्रा तथा कुछ में उपेन्द्रवज्रा छन्द होने से यहाँ उपजाति छन्द है।

1.2.5 तोटक

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश अक्षर गुरु हों, वह तोटकवृत्त कहा गया है। इस छन्द के प्रत्येक पाद में सगण, सगण, सगण तथा सगण प्राप्त होते हैं ठक्कुर एवं मिश्र, 2008।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

वद तोटकमब्धि-सकारयुतम्[164]।

अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में अन्त्यगुरु चार सगण हों, उसे तोटक कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्[165]।

अर्थात् जिस छन्द के चारों चरणों में चार सगण हों उसे तोटक छन्द कहते हैं।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

तोटकं स:[166]।

अर्थात् इस छन्द के चारों चरणों में चार सगण होते हैं। यह एक समवृत्त छन्द है तथा इसके प्रत्येक चरण का अन्तिम वर्ण गुरु होता है (ठक्कुर एवं मिश्र, 2008; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012; त्रिपाठी, 2012 तथा तैलङ्ग, 2013)।

उदाहरण

सतथेति विनेतुरुदा रमतेः, प्रतिगृह्य वचोविससर्ज मुनिम्।

तदलब्ध पदं हृदि शोकधने, प्रति यातमिवाऽन्तिकम स्युगरोः[167] (शास्त्री, 2014)॥

---

[164] छन्दोमञ्जरी, त्रिपाठी, पृष्ठसङ्ख्या- 48/ छन्दो., तैलङ्ग, 2.46, पृ. सं.-89.

[165] वृत्तरत्नाकर- 3.48, पृष्ठसङ्ख्या- 78.

[166] छन्दसूत्र- 6.32.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	सगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ
	सतथे	तिविने	तुरुदा	रमतेः,
द्वितीयपाद	सगण	सगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ
	प्रतिगृ	ह्यवचो	विसस	र्जमुनिम्।
तृतीयपाद	सगण	सगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ
	तदल	ब्धपदं	हृदिशो	कधने,
चतुष्पाद	सगण	सगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ
	प्रतिया	तमिवाऽ	न्तिकम	स्युगरोः॥

1.2.6 दोधकवृत्त

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से तीन भगण तथा दो गुरु वर्ण हों तो उसको 'दोधक' छन्द कहते हैं। इस छन्द के चरण के अन्त में यति होती है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

दोधकवृत्तमिदं भ-भ-भाद्-गौ[168]।

अर्थात् जिसके प्रत्येक पाद में तीन भगण हों तथा उसके पश्चात् दो गुरु हों, वह दोधक छन्द होता है।

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (त्रिपाठी, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

---

[167] छन्दःप्रकाश, 8, पृष्ठसङ्ख्या- 15.

[168] वृत्तरत्नाकर- 3.33.

दोधकमिच्छति भत्रितयाद् गौ[169] ।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण तीन भगण हों तथा उसके पश्चात् दो गुरुवर्ण हों, वहाँ दोधक छन्द होता है ।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है ।

दोधकं भौ भ्-गौ ग्[170] ।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से तीन भगण तथा दो गुरु वर्ण हों तो उसको 'दोधक' छन्द कहते हैं ।

उदाहरण

देव ! स दोधक दम्ब तलस्थ, श्रीधर ! तावक ना मपदंमे ।

कण्ठ तलेऽसुवि निर्गम काले, स्वल्पमपि क्षणमेष्यति योगम्[171] (ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)॥

---

[169] छन्दोमञ्जरी- 2.38.

[170] छन्दसूत्र- 6.19.

[171] श्रुतबोध- 17.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	भगण	भगण	भगण	गु. गु.
	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ ऽ
	देवस	दोधक	दम्बत	लस्थ,
द्वितीयपाद	भगण	भगण	भगण	गु. गु.
	ऽ।।	ऽ ।।	ऽ ।।	ऽ ऽ
	श्रीधर	तावक	नामप	दंमे।
तृतीयपाद	भगण	भगण	भगण	गु. गु.
	ऽ ।।	ऽ ।।	ऽ ।।	ऽ ऽ
	कण्ठत	लेऽसुवि	निर्गम	काले,
चतुष्पाद	भगण	भगण	भगण	गु. गु.
	ऽ ।।	ऽ ।।	ऽ ।।	ऽ ऽ
	स्वल्पम	पिक्षण	मेष्यति	योगम् ।।

1.2.7 द्रुतविलम्बित

जिस छन्द के प्रत्येक पाद में 12 अक्षर हों और क्रमशः प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण हो तो उसे 'द्रुतविलम्बित' छन्द कहते हैं। यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

द्रुतविलम्बितमाह न-भौ भ-रौ[172]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण हो तो वहाँ द्रुतविलम्बित है।

[172] वृत्तरत्नाकर- 3.49.

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

द्रुतविलम्बितं न्-भौ भ्-रौ[173]।

अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है (पाठक, 2015)।

उदाहरण

नव पलाश-पलाश वनं पुरः, स्फुट पराग-परागत पङ्कजम्।

मृदु लतान्त-लतान्त मनोहरम्, स सुरभिं-सुरभिं स मलोकयत्[174] (शास्त्री, 2014)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	नगण	भगण	भगण	रगण
	।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
	नवप	लाशप	लाशव	नंपुरः,
द्वितीयपाद	नगण	भगण	भगण	रगण
	।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
	स्फुटप	रागप	रागत	पङ्कजम्।
तृतीयपाद	नगण	भगण	भगण	रगण
	।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
	मृदुल	तान्तल	तान्तम	नोहरम्,
चतुष्पाद	नगण	भगण	भगण	रगण
	।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
	ससुर	भिंसुर	भिंसम	लोकयत्॥

विशेष- प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, भगण, भगण, तथा रगण हैं, अतः यहाँ द्रुतविलम्बित छन्द है (तैलङ्ग, 2013; शास्त्री, 2008; त्रिपाठी, 2015; त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

---

[173] छन्दसूत्र- 6.31.

[174] छन्द:प्रकाश- 17.

1.2.8 पृथ्वी

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, सगण, जगण, सगण, यगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण हो तो उसे पृथ्वी छन्द कहते हैं। इस छन्द में यति 8वें और 9वें वर्ण पर होती है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) तथा केदारभट्टकृत वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः[175]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, सगण, जगण, सगण, यगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण हो तो उसे पृथ्वी छन्द कहते हैं।

पिङ्गलछन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

पृथ्वी ज्-सौ ज्-सौ य्-लौ ग् वसु-नवकौ[176]।

अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में क्रमश: जगण, सगण, जगण, सगण, यगण एक लघु और एक गुरु वर्ण हों वहाँ पृथ्वी छन्द होता है (तैलङ्ग, 2013; शास्त्री, 2008 तथा त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)।

उदाहरण

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्,
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्,
नतु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्[177] (गुप्ता, 2008)॥

---

[175] वृत्तरत्नाकर- 3.94 तथा छन्दो. – 2.91.

[176] छन्दसूत्र- 7.17.

[177] नीतिशतक- 4.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	जगण	सगण	जगण	सगण	यगण	ल. गु.
	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽऽ	।ऽ
	लभेत	सिकता	सुतैल	मपिय	त्रतःपी	डयन्,
द्वितीयपाद	जगण	सगण	जगण	सगण	यगण	ल. गु.
	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽऽ	।ऽ
	पिबेच्च	मृगतृ	ष्णिकासु	सलिलं	पिपासा	र्दितः।
तृतीयपाद	जगण	सगण	जगण	सगण	यगण	ल. गु.
	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽऽ	।ऽ
	कदाचि	दपिप	र्यटञ्छ	शविषा	णमासा	दयेत्,
चतुष्पाद	जगण	सगण	जगण	सगण	यगण	ल. गु.
	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽऽ	।ऽ
	नतुप्र	तिनिवि	ष्टमूर्ख	जनचित्	तमारा	धयेत्॥

1.2.9 प्रमिताक्षरा

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण और अन्त में फिर दो सगण हो तो उस स्थान पर प्रमिताक्षरा छन्द होता है। इस छन्द के प्रत्येक पाद के अन्त में यति का विधान है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है।

प्रमिताक्षरा सजससैः रुदिता[178]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण और अन्त में फिर दो सगण हो तो उस स्थान पर प्रमिताक्षरा छन्द होता है।

[178] वृत्तरत्नाकर- 3.60.

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता[179]।

अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में क्रमश: सगण, जगण और दो सगण तथा चरण के अन्त में विराम हो, वहाँ प्रमिताक्षरा नामक छन्द होता है।

आचार्य पिङ्गलकृत छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया है-

प्रमिताक्षरा स्-जौ सौ[180]।

अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में क्रमश: सगण, जगण और दो सगण, वहाँ प्रमिताक्षरा नामक छन्द होता है।

उदाहरण

न महीतल-स्थिति-सहानि भवच्चरितानि चारुचरिते यदपि।

उचितं तथापि परलोक-सुखं न पतिव्रते ! तव विहाय पतिम्[181] (द्विवेदी, 2013)॥

---

[179] छन्दोमञ्जरी- 2.50.

[180] छन्दसूत्र- 6.40.

[181] मृच्छकटिक -10.56.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	जगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।ऽ ।	। ।ऽ	। ।ऽ
	नमही	तलस्थि	तिसहा	निभवत्
द्वितीयपाद	सगण	जगण	सगण	सगण
	।।ऽ	। ऽ ।	।।ऽ	।।ऽ
	चरिता	निचारु	चरिते	यदपि।
तृतीयपाद	सगण	जगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।ऽ ।	।।ऽ	।।ऽ
	उचितं	तथापि	परलो	कसुखं
चतुष्पाद	सगण	जगण	सगण	सगण
	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।।ऽ
	नपति	व्रतेत	ववविहा	यपतिम्॥

1.2.10 प्रहर्षिणी

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से एक मगण, एक नगण और एक जगण तथा एक रगण और एक गुरु हो तथा तीसरे और दसवें वर्ण पर यति हो तो उस छन्द को प्रहर्षिणी कहते है। इस छन्द के प्रत्येक चरण 13 अक्षर प्राप्त होते हैं। यह एक समवृत्त छन्द है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

त्र्याशाभिर्म-न-ज-र-गाः प्रहर्षिणीयम्[182] (तैलङ्ग, 2013)।

अर्थात् जिस छन्द में मगण, नगण, जगण और अन्त में रगण होता है उसे प्रहर्षिणी नामक वृत्त कहते हैं।

[182] छन्दोमञ्जरी- 2.57.

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

म्नौ ज्रौ ग: त्रिदशयति: प्रहर्षिणीयम्[183] ।

अर्थात् जिस छन्द में मगण, नगण, जगण और अन्त में रगण होता है उसे प्रहर्षिणी नामक वृत्त कहते हैं ।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया गया है ।

प्रहर्षिणी म्-नौ ज्-रौ ग् त्रिक-दशकौ[184] ।

अर्थात् प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण और अन्त में रगण होता है (त्रिपाठी, 2015; त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008) ।

उदाहरण

एष त्वामभिनवकण्ठशोणितार्थी, शार्दूल: पशुमिव हन्मि चेष्टमानम् ।

आर्त्तानां भयमपनेतुमात्तधन्वा, दुष्यन्तस्तव शरणं भवत्विदानीम्[185] (शास्त्री, 2008) ॥

---

[183] वृत्तरत्नाकर- 3.70.

[184] छन्दसूत्र- 7.1.

[185] अभिज्ञानशाकुन्तल- 6.32.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	नगण	जगण	रगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ	ऽ
	एषत्वा	मभिन	वकण्ठ	शोणिता	र्थी,
द्वितीयपाद	मगण	नगण	जगण	रगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ	ऽ
	शार्दूल:	पशुमि	वहन्मि	चेष्टमा	नम् ।
तृतीयपाद	मगण	नगण	जगण	रगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ	ऽ
	आर्त्तानां	भयम	पनेतु	मात्तधन्	वा,
चतुष्पाद	मगण	नगण	जगण	रगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ	ऽ
	दुष्यन्त	स्तवश	रणंभ	वत्विदा	नीम् ॥

1.2.11 मञ्जुभाषिणी

जिस छन्द के प्रत्येक पाद में सगण, जगण, सगण, जगण हों और अन्त में एक गुरु वर्ण प्राप्त हो तो उसको मञ्जुभाषिणी छन्द के नाम से जाना जाता है। इस छन्द में 5 और 8 अक्षरों के बाद विराम होता है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

सजसा जगौ भवति मञ्जुभाषिणी[186]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक पाद में सगण, जगण, सगण, जगण हों और अन्त में एक गुरु वर्ण प्राप्त हो तो उसको मञ्जुभाषिणी छन्द कहते हैं।

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

---

[186] वृत्तरत्नाकर- 3.74.

सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी[187] ।

अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में यथाक्रम अन्त्यगुरु सगण, मध्यगुरु जगण, सगण और जगण तथा गुरुवर्ण हों तो वहाँ तेरह अक्षरों वाला मञ्जुभाषिणी छन्द होता है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; तैलङ्ग, 2013; शास्त्री, 2014; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012 तथा त्रिपाठी, 2012) ।

उदाहरण

समयः स वर्तत इवैष यत्र मा, समनन्दयत्-सुमुखि! गौतमार्पितः ।

अयमागृहीत-कमनीय-कङ्कण, स्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः[188] (द्विवेदी, 2012) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	जगण	सगण	जगण	गु.
	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	समयः	सवर्त	तइवै	षयत्र	मा,
द्वितीयपाद	सगण	जगण	सगण	जगण	गु.
	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	समनन्	दयत्सु	मुखिगौ	तमार्पि	तः।
तृतीयपाद	सगण	जगण	सगण	जगण	गु.
	।। ऽ	।ऽ।	।।ऽ	। ऽ।	ऽ
	अयमा	गृहीत	कमनी	यकङ्क	ण,
चतुष्पाद	सगण	जगण	सगण	जगण	गु.
	।। ऽ	। ऽ।	।।ऽ	। ऽ।	ऽ
	स्तवमू	र्तिमानि	वमहो	त्सवःक	रः ॥

[187] छन्दोमञ्जरी- 2.60.

[188] उत्तररामचरितम- 1.18.

1.2.12 मन्दाक्रान्ता

मन्दाक्रान्ता छन्द के चारों पादों में मगण, भगण, नगण दो तगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से 17 वर्ण प्राप्त होते हैं। इसमें चार, छ: और सात अक्षरों के बाद विराम होता है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

मन्दाक्रान्ता-ऽम्बुधि-रस-नगै-र्मो भनौ तौ गयुग्मम्[189]।

अर्थात् मन्दाक्रान्ता छन्द के चारों पादों में मगण, भगण, नगण दो तगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

मन्दाक्रान्ता जलधि-षड-गैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्[190]।

अर्थात् जिस छन्द में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और अन्त में दो गुरु हों वहाँ मन्दाक्रान्ता नामक वृत्त होता हैं।

पिङ्गलाचार्य (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है।

मन्दाक्रान्ता म्-भौ न्-तौ त्-गौ ग् समुद्रर्तु-स्वरा:[191]।

अर्थात् मन्दाक्रान्ता छन्द के चारों पादों में मगण, भगण, नगण दो तगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं (शास्त्री, 2014; त्रिपाठी, 2015; त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

कश्चित्-कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्-प्रमत्तः,

शापेनास्तङ्गमित-महिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।

यक्षश्चक्रे जनकतनया - स्नानपुण्योदकेषु,

स्निग्धच्छाया-तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु[192] (शास्त्री, 2012)॥

---

[189] छन्दोमञ्जरी- 2.93.

[190] वृत्तरत्नाकर- 3.97.

[191] छन्दसूत्र- 7.19.

[192] मेघदूत- 1.1.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ । ।	। । ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ
	कश्चित्का	न्ताविर	हगुरु	णास्वाधि	कारात्प्र	म त्तः,
द्वितीयपाद	मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ । ।	। । ।	ऽ ऽ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ
	शापेनास्	तङ्गमि	तमहि	मावर्ष	भोग्येण	भ र्तुः ।
तृतीयपाद	मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽऽ	ऽ । ।	। । ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ
	यक्षश्च	क्रेजन	कतन	यास्तान	पुण्योद	के षु,
चतुष्पाद	मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽऽ	ऽ । ।	। । ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ
	स्निग्धच्छा	यातरु	षुवस	र्तिराम	गिर्याश्र	मे षु ॥

1.2.13 मालिनी

मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण, दो यगण के क्रम से 15-15 वर्ण होते हैं उसे मालिनी छन्द कहते हैं। इस छन्द में यति 8वें और 7वें वर्णों पर होती हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) तथा वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

ननन-म-यय-युतेयं मालिनी भोगिलोकैः[193]।

अर्थात् जिस छन्द में दो नगण, एक मगण और अन्त में दो यगण हों, उसे मालिनी नामक छन्द कहते हैं।

[193] वृत्तरत्नाकर- 3.87.

पिङ्गलाचार्य कृत छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया है।

मालिनी नौ म्-यौ य्[194]।

अर्थात् मालिनी छन्द में दो नगण, एक मगण और अन्त में दो यगण होते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

उदाहरण

जयति जलदनीलः केशवः केशिघाती,

जयति च जन-दृष्टि-चन्द्रमाश्चन्द्रगुप्तः।

जयति जयनकार्यं यावत्कृत्वा च सर्वं,

प्रतिहतपरपक्षा आर्यचाणक्यनीतिः[195] (गुप्ता, 2012)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	नगण	नगण	मगण	यगण	यगण
	। ।। ।।।	ऽ ऽ ऽ	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ	
	जयति	जलद	नीलःके	शवःके	शिघाती,
द्वितीयपाद	नगण	नगण	मगण	यगण	यगण
	। ।। ।।।	ऽ ऽ ऽ	।ऽ ऽ	।ऽऽ	
	जयति	चजन	दृष्टिचन्	द्रमाश्चन्	द्रगुप्तः।
तृतीयपाद	नगण	नगण	मगण	यगण	यगण
	। ।। ।।।	ऽ ऽऽ	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ	
	जयति	जयन	कार्यंया	वत्कृत्वा	चसर्वं,
चतुष्पाद	नगण	नगण	मगण	यगण	यगण
	। ।। ।।।	ऽ ऽ ऽ	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ	
	प्रतिह	तपर	पक्षाआ	र्यचाण	क्यनीतिः॥

[194] छन्दसूत्र- 7.14.

[195] मुद्राराक्षस- 6.1.

1.2.14 रथोद्धता

जिस वृत्त के चारों चरणों में क्रमानुसार रगण, नगण तथा पुनः रगण हो और अन्त में लघु और गुरु हों उसे रथोद्धता छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक पाद में 11-11 अक्षर होते हैं। इस छन्द में पाद के अन्त में ही यति होती है।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

रान्नराविह रथोद्धता लगौ[196]।

अर्थात् जिस छन्द में रगण, नगण तथा पुन: रगण हो और अन्त में लघु और गुरु हों उसे रथोद्धता नामक छन्द कहते हैं।

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

रात्- रथोद्धता[197]।

अर्थात् इस छन्द में रगण, नगण, रगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते हैं।

आचार्यपिङ्गल (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है।

रथोद्धता र्-नौ र्-लौ ग्[198]।

अर्थात् जिस छन्द में रगण, नगण तथा पुन: रगण हो और अन्त में लघु और गुरु हों तो उसे रथोद्धता नामक छन्द कहते हैं (त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

एवमाश्रमविरुद्धवृत्तिना, संयमी किमिति जन्मदस्त्वया।

सत्त्वसंश्रयगुणोऽपि दूष्यते, कृष्णसर्पशिशुनेव चन्दन:[199] (शास्त्री, 2008)।।

---

[196] वृत्तरत्नाकर- 3.38.

[197] छन्दोमञ्जरी- 2.36.

[198] छन्दसूत्र- 6.23.

[199] अभिज्ञानशाकुन्तल- 7.18.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	रगण	नगण	रगण	ल. गु.
	ऽ।ऽ	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	एवमा	श्रमवि	रुद्धवृ	त्ति ना,
द्वितीयपाद	रगण	नगण	रगण	ल. गु.
	ऽ।ऽ	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	संयमी	किमिति	जन्मदस्	त्व या।
तृतीयपाद	रगण	नगण	रगण	ल. गु.
	ऽ।ऽ	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	सत्त्वसं	श्रयगु	णोऽपिदू	ष्य ते,
चतुष्पाद	रगण	नगण	रगण	ल. गु.
	ऽ।ऽ	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	कृष्णस	र्पशिशु	नेवचन्	द न:।।

1.2.15 रुचिरा

रुचिरा छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, भगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से 13 वर्ण होते हैं। उसे रुचिरा छन्द कहते हैं। यति चार और नौ वर्णों पर होती हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

जभौ जसौ गिति रूचिरा चतुर्ग्रहै:[200]।

अर्थात् जहाँ प्रति चरण में यथाक्रम एक-एक जगण, भगण, सगण, जगण और एक गुरु अक्षर हों वह तेरह अक्षरों वाला रुचिरा नामक छन्द होता है।

पिङ्गलाचार्य (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार किया है।

रुचिरा ज्-भौ स्-जौ ग् चतुर्नवकौ[201]।

---

[200] छन्दोमञ्जरी- 2.57.

अर्थात् रुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से 13 वर्ण होते हैं। उसे रुचिरा छन्द कहते है (शास्त्री, 2014; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012 तथा त्रिपाठी, 2015)।

उदाहरण

प्रवर्ततां प्रकृति-हिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतिमहतां महीयताम्।

ममापि च क्षपयतु नीललोहितः, पुनर्भवं परिगत-शक्तिरात्मभूः[202] (शास्त्री, 2008) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	जगण	भगण	सगण	जगण	गु.
	।ऽ।	ऽ।।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	प्रवर्त	तांप्रकृ	तिहिता	यपार्थि	वः,
द्वितीयपाद	जगण	भगण	सगण	जगण	गु.
	।ऽ।	ऽ।।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	सरस्व	तीश्रुत	महतां	महीय	ताम्।
तृतीयपाद	जगण	भगण	सगण	जगण	गु.
	।ऽ।	ऽ।।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	ममापि	चक्षप	यतुनी	ललोहि	तः,
चतुष्पाद	जगण	भगण	सगण	जगण	गु.
	।ऽ।	ऽ।।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	पुनर्भ	वंपरि	गतशक्ति	रात्म	भूः ॥

1.2.16 वंशस्थ

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 12-12 अक्षर प्राप्त होते हैं तथा प्रत्येक चरण में क्रम से एक जगण और एक तगण तथा फिर एक जगण और एक रगण हो तो उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं। इस छन्द में पाद के अन्त में यति होती है।

---

[201] छन्दसूत्र- 7.2.

[202] अभिज्ञानशाकुन्तल- 7.35.

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

ज-तौ तु वशंस्थमुदीरितं ज-रौ[203] ।

अर्थात् जिस छन्द में जगण, तगण, जगण और अन्त में रगण हो, उसे वंशस्थ नामक छन्द कहते हैं ।

पिङ्गलाचार्य (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार किया है ।

वंशस्था ज्-तौ ज्-रौ[204] ।

अर्थात् वंशस्थ छन्द में जगण, तगण, जगण और अन्त में रगण होता है ।

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है ।

वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ[205] ।

अर्थात् वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और अन्त में रगण होता है (त्रिपाठी, 2012; ठक्कुर एवं मिश्र, 2008) ।

उदाहरण

तथा समक्षं दहता मनोभवं, पिनाकिना भग्न मनोरथा सती ।

निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती, प्रियेषु सौभाग्य फ़ला हि चारुता[206] (त्रिपाठी, 2006) ॥

---

[203] वृत्तरत्नाकर- 3.46.

[204] छन्दसूत्र- 6.29.

[205] छन्दोमञ्जरी- 2.42.

[206] कुमारमारसम्भ- 5.1.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	जगण	तगण	जगण	रगण
	। ऽ ।	ऽ ऽ।	। ऽ।	ऽ । ऽ
	तथास	मक्षंद	हताम	नोभवं,
द्वितीयपाद	जगण	तगण	जगण	रगण
	। ऽ ।	ऽ ऽ।	। ऽ।	ऽ । ऽ
	पिनाकि	नाभग्न	मनोर	थासती।
तृतीयपाद	जगण	तगण	जगण	रगण
	। ऽ ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ । ऽ
	निनिन्द	रूपंहृ	दयेन	पार्वती,
चतुष्पाद	जगण	तगण	जगण	रगण
	। ऽ ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ
	प्रियेषु	सौभाग्य	फ़लाहि	चारुता॥

1.2.17 वसन्ततिलका

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक तगण, एक भगण, और दो जगण एवं दो गुरु वर्ण हों, तो उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं। इस छन्द में 8 और 6 अक्षरों के बाद यति विधान किया गया है। इसके प्रत्येक पाद में 14-14 अक्षर होते हैं।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

उक्ता वसन्ततिलका त-भ-जा ज-गौ ग:[207]।

अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, और दो जगण एवं दो गुरु वर्ण होते हैं।

आचार्य पिङ्गल (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है।

---

[207] वृत्तरत्नाकर- 3.79.

वसन्ततिलका त्-भौ जौ गौ[208]।

अर्थात् वसन्ततिलका छन्द में एक तगण, एक भगण, और दो जगण एवं दो गुरु वर्ण होते हैं।

गङ्गादास छन्दोंमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ ग:[209]।

अर्थात् जिस छन्द में यथाक्रम तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु अक्षर हों तो उसे वसन्ततिलका अथवा वसन्ततिलक छन्द कहते हैं। यह समवृत्त छन्द है (झा, 1968 तथा त्रिपाठी, 2012)।

उदाहरण

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति[210] (गुप्ता, 2008)॥

---

[208] छन्दसूत्र- 7.8

[209] छन्दोमञ्जरी- 2.66.

[210] नीतिशतक- 26.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	तगण	भगण	जगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ।	ऽ।।	। ऽ ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	प्रारभ्य	तेनख	लुविघ्न	भयेन	नी चैः,
द्वितीयपाद	तगण	भगण	जगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ।	ऽ । ।	। ऽ ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	प्रारभ्य	विघ्नवि	हतावि	रमन्ति	म ध्याः।
तृतीयपाद	तगण	भगण	जगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ।	ऽ।।	।ऽ।	। ऽ।	ऽ ऽ
	विघ्नैःपु	नःपुन	रपिप्र	तिहन्य	मा नाः,
चतुष्पाद	तगण	भगण	जगण	जगण	गु. गु.
	ऽ ऽ।	ऽ।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
	प्रारब्ध	मुत्तम	जनान	परित्य	ज न्ति॥

1.2.18 विद्युन्माला

विद्युन्माला छन्द के प्रत्येक पाद में दो मगण, तथा दो गुरु वर्ण होते हैं तथा इस छन्द के प्रत्येक पाद में आठों अक्षर गुरू हों तो उसे विद्युन्माला छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में चार-चार अक्षरों पर विराम होता है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) तथा वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

मो मो गो गो विद्युन्माला[211]।

अर्थात् इस छन्द में क्रमश: दो सर्वगुरु मगण, तथा दो गुरु वर्ण हों, तो वह विद्युन्माला छन्द कहलाता है।

---

[211] वृत्तरत्नाकर- 3.13. / छन्दोमञ्जरी- 2.17.

पिङ्गलकृत छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

विद्युन्माला मौ गौ[212]।

अर्थात् इस छन्द में दो सर्वगुरु मगण, तथा दो गुरु वर्ण हों, तो वह विद्युन्माला छन्द कहलाता है (शास्त्री, 2014 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

मौनं ध्यानं भूमौ शय्या, गुर्वी तस्याः कामावस्था।

मेघोत्सङ्गे नृत्तासङ्गा, यस्मिन्काले विद्युन्माला[213] (झा, 1968)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	मगण	गु.	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ
	मौनंध्या	नंभूमौ	श	य्या,
द्वितीयपाद	मगण	मगण	गु.	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ	ऽ	ऽ
	गुर्वीतस्	याःकामा	व	स्था।
तृतीयपाद	मगण	मगण	गु.	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ
	मेघोत्स	ङ्गेनृत्ता	स	ङ्गा,
चतुष्पाद	मगण	मगण	गु.	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ
	यस्मिन्का	लेविद्युन्	मा	ला॥

1.2.19 वैश्वदेवी

जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में दो मगण और दो यगण हों, उसे वैश्वदेवी छन्द कहते हैं। इसमें 5 और 7 अक्षरों के बाद विराम होता है।

---

[212] छन्दसूत्र- 6.6.

[213] सुवृत्ततिलक- 1.12.

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ[214]।

अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में दो मगण और दो यगण हों वह वैश्वदेवी नामक छन्द कहलाता है।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

वैश्वदेवी मौ याविन्द्रिय-ऋषय:[215]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो मगण और दो यगण हों, उसे वैश्वदेवी छन्द कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है।

पञ्चाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ[216]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो मगण और दो यगण हों, उसे वैश्वदेवी छन्द कहते हैं (त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

शूरो विक्रान्तः पाण्डवः श्वेतकेतुः पुत्रो राधाया रावण इन्द्रदत्तः।

आहो कुन्त्यास्तेन रामेण जातः अश्वत्थामा धर्मपुत्रो जटायु:[217] (द्विवेदी, 2013)॥

---

[214] छन्दोमञ्जरी- 2.48.

[215] छन्दसूत्र- 6.42.

[216] वृत्तरत्नाकर- 3.62.

[217] मृच्छकटिक- 1.47.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	मगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	शूरोवि	क्रान्तःपा	ण्डवःश्वे	तकेतुः,
द्वितीयपाद	मगण	मगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	पुत्रोरा	धायारा	वणइ -	न्द्रदत्तः।
तृतीयपाद	मगण	मगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	आहोकु	–न्त्यास्ते	नरामे	णजातः,
चतुष्पाद	मगण	मगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	अश्वत्था	माधर्म	पुत्रोज	जटायुः ॥

1.2.20 शार्दूलविक्रीडित

जिस छन्द के चारों चरणों में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में गुरु वर्ण के क्रम से 19 वर्ण होते है उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं। इस छन्द में यति 12 और 7 वर्ण पर होती है तथा इस छन्द के प्रत्येक चरण में अन्तिम वर्ण गुरु होता है

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्[218]।

अर्थात् जिस छन्द में यथाक्रम मगण, सगण, जगण, सगण, सगण, दो तगण और एक गुरु वर्ण हों, उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते है।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है।

[218] छन्दोमञ्जरी- 2.106.

सूर्याश्वै-र्मसजस्तता: सगुरव: शार्दूलविक्रीडितम्[219] ।

अर्थात् शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, सगण, दो तगण और एक गुरु वर्ण होता है ।

आचार्य पिङ्गल (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है ।

शार्दूल-विक्रीडितं म्-सौ ज्-सौ तौ ग्-आदित्य-ऋषय:[220] ।

अर्थात् इस छन्द में क्रमश: मगण, सगण, जगण, सगण, सगण, दो तगण और एक गुरु वर्ण होते हैं (शास्त्री, 2014; त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008) ।

उदाहरण

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं,

विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं,

विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः[221] (गुप्ता, 2008) ॥

---

[219] वृत्तरत्नाकर- 3.101.

[220] छन्दसूत्र- 7.22.

[221] नीतिशतक- 19.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	सगण	जगण	सगण	तगण	तगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ऽ	। ऽ।	। । ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ
	विद्याना	मनरस्	यरूप	मधिकं	प्रच्छन्न	गुप्तंध	नं,
द्वितीयपाद	मगण	सगण	जगण	सगण	तगण	तगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ऽ	। ऽ।	। । ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ
	विद्याभो	गकरी	यशःसु	खकरी	विद्यागु	रूणांगु	रुः ।
तृतीयपाद	मगण	सगण	जगण	सगण	तगण	तगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ऽ	। ऽ।	। । ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ
	विद्याब -	न्धुजनो	विदेश	गमने	विद्याप	रंदैव	तं,
चतुष्पाद	मगण	सगण	जगण	सगण	तगण	तगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	। । ऽ	। ऽ।	। । ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ
	विद्यारा	जसुपू -	ज्यतेन	तुधनं	विद्यावि	हीनःप	शुः ॥

1.2.21 शालिनी

शालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण, तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से 11 वर्ण होते हैं। उसको शालिनी छन्द कहते है। इस छन्द में यति चार और सात अक्षर के बाद होती है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः[222]।

अर्थात् जिस छन्द में एक मगण और दो तगण हों और अन्त में दो गुरु हों वर्ण उसे शालिनी कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः[223]।

---

[222] छन्दोमञ्जरी- 2.32.

अर्थात् शालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में एक मगण और दो तगण हों और अन्त में दो गुरु वर्ण होते है।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

शालिनी म्-तौ त्-गौ ग् समुद्र-ऋषय:[224]।

अर्थात् इस छन्द में एक मगण और दो तगण हों और अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं (शास्त्री, 2014)।

उदाहरण

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले, रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।

एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां, काले-काले छिद्यते रुह्यते च[225] (विद्यालङ्कार, 1972)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ ऽ
	कःकंश	क्तोरक्षि	तुंमृत्यु	का ले,
द्वितीयपाद	मगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ ऽ
	रज्जुच्छे	देकेघ -	टंधार	य न्ति।
तृतीयपाद	मगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ ऽ
	एवंलो	कस्तुल्य	धर्मोव	ना नां,
चतुष्पाद	मगण	तगण	तगण	गु. गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	ऽ ऽ
	कालेका	लेछिद्य	तेरुह्य	ते च॥

[223] वृत्तरत्नाकर- 3.34.

[224] छन्दसूत्र- 6.20.

[225] स्वप्नवासवदत्त- 6.10.

1.2.22 शिखरिणी

शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में एक यगण, एक मगण और एक नगण, एक सगण, एक भगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु वर्ण हो तथा 6 एवं 11 वर्णों पर विश्राम हो तो उस छन्द को शिखरिणी कहते है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 अक्षर प्राप्त होते हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) तथा वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

रसै रुद्रैश्छिन्ना य-म-न-स-भ-लागः शिखरिणी[226]।

अर्थात् जिस छन्द में यथाक्रम यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु और एक गुरु अक्षर हो, उसे शिखरिणी छन्द कहते है।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

शिखरिणी य्-मौ न्-सौ भ्-लौ ग् ऋतु-रुद्राः[227]।

अर्थात् शिखरिणी छन्द में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु और एक गुरु वर्ण होते हैं (शास्त्री, 2014 तथा झा, 1968)।

उदाहरण

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फ़लमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः[228] (शास्त्री, 2008)॥

---

[226] वृत्तरत्नाकर- 3.93 तथा छन्दोमञ्जरी- 2.90.

[227] छन्दसूत्र- 7.20.

[228] अभिज्ञानशकुन्तल- 2.10.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	ल. गु.
	।ऽ ऽ	ऽऽऽ	।।।	।। ऽ	ऽ।।	। ऽ
	अनाघ्रा	तंपुष्पं	किसल	यमलू	नंकर	रु है,
द्वितीयपाद	यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	ल. गु.
	।ऽ ऽ	ऽऽऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	। ऽ
	रनावि -	द्धंरत्नं	मधुन	वमना	स्वादित	र सम् ।
तृतीयपाद	यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	ल. गु.
	।ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	। ऽ
	अखण्डं	पुण्यानां	फ़लमि	वचत	द्रूपम	न घं,
चतुष्पाद	यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	ल. गु.
	।ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	।। ।	।।ऽ	ऽ।।	। ऽ
	नजाने	भोक्तारं	कमिह	समुपस्थास्यति	वि धिः ॥	

1.2.23 सुमधुरा

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण, मगण, नगण तथा एक गुरु वर्ण होता है। उसे सुमधुरा छन्द कहते है। इस छन्द में 7, 6 और 6 वर्णों पर यति होती है।

लक्षण

महाकवि शूद्रककृत मृच्छकटिक (द्विवेदी, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

म्रौ म्रौ मो नो गुरुश्चेद्वसुशर-रसैरुक्ता सुमधुरा[229]।

अर्थात् इस छन्द में मगण, रगण, भगण, नगण, मगण, नगण तथा एक गुरु वर्ण होता है।

उदाहरण

वेदार्थान्-प्राकृरस्त्वं वदसि, न च ते जिह्वा निपतिता,

मध्याह्ने वीक्षसेऽर्कं, न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता।

[229] मृच्छकटिक- 9.21.

दीप्ताग्ने पाणिमन्तः क्षिपसि, स च ते दग्धो भवति नो,

चारित्र्याच्चारुदत्तं चलयसि, न ते देहं हरति भूः[230] (द्विवेदी, 2013) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	मगण	नगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	ऽ ऽ ऽ	।।।	ऽ
	वेदार्थान्-	प्राकृरस्त्वं	वद	सिनच	तेजिह्वा	निपति	ता,
द्वितीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	मगण	नगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	ऽ ऽऽ	। । ।	ऽ
	मध्याह्ने	वीक्षसेऽ	कैंनत	वसह	सादृष्टि	र्विचलि	ता।
तृतीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	मगण	नगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	ऽ ऽ ऽ	।।।	ऽ
	दीप्ताग्ने	पाणिमन्तःक्षिप	सिसच	तेदग्धो	भवति	नो,	
चतुष्पाद	मगण	रगण	भगण	नगण	मगण	नगण	गु.
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	ऽऽ ऽ	।।।	ऽ
	चारित्र्या	च्चारुद	त्तंचल	यसिन	तेदेहं	हरति	भूः ॥

1.2.24 सुवदना

सुवदना छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, भगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते हैं उसे सुवदना छन्द कहते हैं। इसमें छन्द में 7, 7 और 6 अक्षरों पर यति का विधान होता है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

ज्ञेया सप्ताश्वषड्-भिर्मरभनय-युताभ्लौ गः सुवदना[231]।

---

[230] मृच्छकटिक- 9.21.

अर्थात् जिस छन्द में यथाक्रम मगण, रगण, भगण, नगण, यगण और भगण ये छ: गण तथा एक लघु और एक गुरु वर्ण होता है।

आचार्य पिङ्गलकृतछन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया है।

सुवदना म्-रौ भ्-नौ य्-भौ ल्-गौ-ऋषि-स्वरर्तव:[232]।

अर्थात् इस छन्द में मगण, रगण, भगण, नगण, यगण और भगण ये छ: गण तथा एक लघु और एक गुरु वर्ण होता है (शास्त्री, 2014; त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012 तथा त्रिपाठी, 2012)।

उदाहरण

प्रायेणालोक्य लोकं विषयरतिपरं मोक्षात् प्रतिहतं,

काव्यव्याजेन तत्त्वं कथितमिह मया मोक्षः परमिति।

तद् बुद्धवा शामिकं यत्तदवहितमितो ग्राह्यं न ललितं,

पांसुभ्यो धातुजेभ्यो नियतमुपकरं चामीकरमिति[233] (मिश्र, 2010)॥

---

[231] छन्दोमञ्जरी- 2.109.

[232] छन्दसूत्र- 7.23.

[233] सौन्दरनन्दं-18.64.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	भगण	ल. गु.
	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽऽ	ऽ।।	। ऽ
	प्रायेणा	लोक्यलो	कंविष	यरति	परंमो	क्षात्प्रति	ह तं,
द्वितीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	भगण	ल. गु.
	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽऽ	ऽ।।	। ऽ
	काव्यव्या	जेनत-	त्वंकथि	तमिह	मयामो	क्षःपर	मि ति।
तृतीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	भगण	ल. गु.
	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽऽ	ऽ।।	। ऽ
	तद्बुद्धवा	शामिकं	यत्तद	वहित	मितोग्रा	ह्यंनल	लि तं,
चतुष्पाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	भगण	ल. गु.
	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽऽ	ऽ।।	। ऽ
	पांसुभ्यो	धातुजे-	भ्योनिय	तमुप	करंचा	मीकर	मि ति॥

1.2.25 स्रग्धरा

स्रग्धरा छन्द में चारों पादों में मगण, रगण, भगण, नगण तथा तीन यगण के क्रम से 21 वर्ण होते हैं उसे स्रग्धरा छन्द कहते है। इस छन्द में प्रत्येक सातवें वर्ण पर तीन बार विराम होता है।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्[234]।

अर्थात् इस छन्द में गणों का संयोजन इस प्रकार होगा- मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

[234] छन्दोमञ्जरी- 2.112.

स्रग्धरा म्-रौ भ्-नौ यौ य् त्रि:सप्तका:[235] ।

अर्थात् इस छन्द के चारों पादों में मगण, रगण, भगण, नगण तथा तीन यगण के क्रम से 21 वर्ण होते हैं।

उदाहरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।

यामाहुः सर्वबीज-प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणबन्तः,

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः[236] (गुप्ता, 2012) ॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	यासृष्टिः	स्रष्टुरा	द्यावह	तिविधि	हुतंया	हविर्या	चहोत्री,
द्वितीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	यगण	यगण
	ऽ ऽऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
	येद्वेका	लंविध	त्तःश्रुति	विषय	गुणाया	स्थिताव्या	प्यविश्वम् ।
तृतीयपाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ	।ऽ ऽ
	यामाहुः	सर्वबी	जप्रकृ	तिरिति	ययाप्रा	णिनःप्रा	णबन्तः,
चतुष्पाद	मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	यगण	यगण
	ऽ ऽ ऽ	ऽ।ऽ	ऽ।।	।।।	।ऽ ऽ	।ऽऽ	।ऽ ऽ
	प्रत्यक्षा	भिःप्रप	न्नस्तनु	भिरव	तुवस्ता	भिरष्टा	भिरीशः ॥

[235] छन्दसूत्र- 7.25.

[236] अभिज्ञानशकुन्तल- 1.1.

1.2.26 हरिणी

हरिणी छन्द में चारों पादों में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण के क्रम से 17 वर्ण होते हैं उसे हरिणी छन्द कहते है । यति छठे, चौथे और सातवें वर्णों पर होती है ।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है ।

न-स-म-र-स-लागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता[237] ।

अर्थात् जिस छन्द के चारों चरणों में यथाक्रम नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, एक लघु और एक गुरु वर्ण हों वह हरिणी कहलाता है ।

आचार्य पिङ्गल (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार किया है ।

हरिणी न्-सौ म्-रौ स्-लौ ग् – ऋतु-समुद्र-ऋषय:[238] ।

अर्थात् हरिणी छन्द में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते हैं ।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है ।

रसयुगहयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा[239] ।

अर्थात् इस छन्द के चारों पादों में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते हैं (झा, 1968 तथा त्रिपाठी, 2015) ।

उदाहरण

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे,

विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला ।

तनयमचिरात्-प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं,

मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि[240] (शास्त्री, 2008) ॥

---

[237] छन्दोमञ्जरी- 2.94.

[238] छन्दसूत्र- 7.16.

[239] वृत्तरत्नाकर- 3.96.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	नगण	सगण	मगण	रगण	सगण	ल. गु.
	।।।	।।ऽ	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	।ऽ
	अभिज	नवतो	भर्तुःश्ला	घ्येस्थिता	गृहिणी	प दे,
द्वितीयपाद	नगण	सगण	मगण	रगण	सगण	ल. गु.
	।।।	।।ऽ	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	।ऽ
	विभव	गुरुभिः	कृत्यैस्त	स्यप्रति	क्षणमा	कु ला।
तृतीयपाद	नगण	सगण	मगण	रगण	सगण	ल. गु.
	।।।	।।ऽ	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	।ऽ
	तनय	मचिरात्-प्राचीवा	र्कंप्रसू	यचपा	व नं,	
चतुष्पाद	नगण	सगण	मगण	रगण	सगण	ल. गु.
	।।।	।।ऽ	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	।ऽ
	ममवि	रहजां	नत्वंव-	त्सेशुचं	गणयि	ष्य सि॥

1.2.27 भुजङ्गप्रयात

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण हो, उसे भुजङ्गप्रयात छन्द कहते हैं। इस छन्द में पाद के अन्त में यति होती है। इसके प्रत्येक चरण में 12-12 अक्षर होते हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः[241]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण हो, उसे भुजङ्गप्रयात छन्द कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है।

भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः[242]।

---

[240] अभिज्ञानशकुन्तल- 4.21.

[241] छन्दोमञ्जरी- 2.45.

अर्थात् भुजङ्गप्रयात छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण होते है।

छन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

भुजङ्गप्रयातं यः[243]।

अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः चार यगण प्राप्त होते हैं (ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।

त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहन्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकारम्[244] (भानुः, धामा एवं बंसल 2006)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	यगण	यगण	यगण	यगण
	।ऽऽ	।ऽ ऽ	।ऽऽ	।ऽ ऽ
	त्वमेकं	शरण्यं	त्वमेकं	वरेण्यं,
द्वितीयपाद	यगण	यगण	यगण	यगण
	।ऽऽ	।ऽ ऽ	।ऽऽ	।ऽ ऽ
	त्वमेकं	जगत्पा	लकंस्व	प्रकाशम्।
तृतीयपाद	यगण	यगण	यगण	यगण
	।ऽऽ	।ऽ ऽ	।ऽऽ	।ऽ ऽ
	त्वमेकं	जगत्क	र्तृपातृ	प्रहन्तृ,
चतुष्पाद	यगण	यगण	यगण	यगण
	।ऽऽ	।ऽ ऽ	।ऽऽ	।ऽ ऽ
	त्वमेकं	परंनि-	श्चलंनि-	र्विकारम्॥

---

[242] वृत्तरत्नाकर- 3.55.

[243] छन्दसूत्र- 6.38.

[244] संस्कृत-सोपानम् (प्रथमो भागः), पृष्ठसङ्ख्या- 201. (यह मूल पद्य ब्रह्मस्तोत्र एवं पञ्चरत्नस्तोत्रं में प्राप्त होता है)।

अर्धसमवृत्त छन्दों का परिचय

आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दसूत्र में अर्धसमवृत्त छन्द को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिस छन्द के चारों पादों में से प्रथम और तृतीय पाद तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में अक्षरों या वर्णों की सङ्ख्या समान रहती है। शोध के लिये चुने हुये 40 छन्दों में से केवल 5 अर्धसमवृत्त छन्द हैं। जिनका विवेचन नीचे किया जा रहा है। अर्धसमवृत्त छन्द को इसी शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में विस्तार से बता दिया गया है।

1.3 अर्धसमवृत्त छन्द

जिस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में वर्णों की सङ्ख्या समान रहती है उनको अर्धसमवृत्त छन्द कहते है। इस शोध में कुल 5 अर्धसमवृत्त छन्दों का चुनाव किया गया है।

1.3.1 अपरवक्त्र

जिस छन्द के पहले और तीसरे पाद में 11-11 अक्षर तथा क्रमानुसार दो नगण, एक रगण, लघु और गुरु वर्ण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में 12-12 अक्षर तथा क्रमानुसार एक नगण, दो जगण और एक रगण वर्ण होते हैं उसे अपरवक्त्र छन्द कहते हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (त्रिपाठी, 2012 तथा तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार है।

अयुजि ननरला गुरुः समे तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ[245]।

अर्थात् इस छन्द के पहले और तीसरे पाद में क्रमानुसार दो नगण, एक रगण, लघु और गुरु वर्ण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में क्रमानुसार एक नगण, दो जगण और एक रगण वर्ण होते हैं।

पिङ्गलकृतछन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

अपरवक्त्रं नौ रलौ ग्, न्-जौ ज्-रौ[246]।

---

[245] छन्दोमञ्जरी, त्रिपाठी तथा तैलङ्ग- 3.4.

अर्थात् अपरवक्त्र छन्द के पहले और तीसरे पाद में दो नगण, एक रगण, लघु और गुरु वर्ण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में एक नगण, दो जगण और एक रगण वर्ण होते हैं। इस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण विषमपाद हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण समपाद हैं। अपरवक्त्र अर्धसमवृत्त छन्द है (शास्त्री, 2014; झा, 1968; त्रिपाठी, 2015 तथा त्रिपाठी, 2012)।

उदाहरण

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।

परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्[247] (शास्त्री, 2008)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	नगण	नगण	रगण	ल. गु.
	।।।	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	अनुम	तगम	नाशकु-	न्त ला
द्वितीयपाद	नगण	जगण	जगण	रगण
	।।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ।ऽ
	तरुभि	रियंव	नवास	बन्धुभिः।
तृतीयपाद	नगण	नगण	रगण	ल. गु.
	।।।	।।।	ऽ।ऽ	। ऽ
	परभृ	तविरु	तंकलं	य था
चतुष्पाद	नगण	जगण	जगण	रगण
	।।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ।ऽ
	प्रतिव	चनीकृ	तमेभि	रीदृशम्॥

[246] छन्दसूत्र- 5.40.

[247] अभिज्ञानशाकुन्तल- 4.13.

1.3.2 पथ्यावक्त्र

जिस छन्द के दूसरे और चौथे अर्थात् सम पादों में चौथे अक्षर के बाद जगण का प्रयोग किया गया हो एवं पहले और तीसरे अर्थात् विषम पादों में यगण का प्रयोग किया गया हो तो उसे पिङ्गलाचार्य ने पथ्यावक्त्र कहा है। यह अनुष्टुप् का एक भेद है। पथ्यावक्त्र भी एक वार्णिक छन्द हैं।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

युजोश्चतुर्थतो जेन, पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम्[248]।

अर्थात् इस छन्द के दूसरे और चौथे पादों में चौथे अक्षर के पश्चात् जगण का प्रयोग होता है।

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

युजोर्जेन सरिद्-भर्तु: पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम्[249]।

अर्थात् जिस छन्द के दूसरे और चौथे पादों में चौथे अक्षर के पश्चात् जगण का प्रयोग किया गया हो, वह पथ्यावक्त्र होता है। (द्विवेदी एवं सिंह, 2008; तैलङ्ग, 2013 तथा शास्त्री, 2014)।

उदाहरण

न भीतो मरणादस्मि, केवलं दूषितं यशः।

विशुद्धस्य हि मे मृत्युः, पुत्रजन्मसमो भवेत्[250] (द्विवेदी, 2013)॥

---

[248] छन्दोमञ्जरी- 4.7.

[249] वृत्तरत्नाकर- 2.22.

[250] मृच्छकटिक-10.27.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	न भीतो मरणादस्मि,
द्वितीयपाद	जगण
	। ऽ ।
	केवलं दू-षितंय-शः ।
तृतीयपाद	विशुद्धस्य हि मे मृत्युः,
चतुष्पाद	जगण
	। ऽ ।
	पुत्रजन्म - समोभ-वेत् ॥

1.3.3 पुष्पिताग्रा

जिस छन्द के विषम (1 और 3) पादों में दो नगण, रगण तथा यगण के क्रम से 12-12 वर्ण होते हैं और सम (2 और 4) पादों में नगण, दो जगण, रगण तथा एक गुरु वर्ण के क्रम से 13-13 वर्ण होते हैं उस छन्द को पुष्पिताग्रा छन्द कहते हैं।

लक्षण

केदारभट्टकृत वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) तथा गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च न-जौ ज-र-गाश्च पुष्पिताग्रा[251]।

अर्थात् इस छन्द में विषम पाद में दो नगण, रगण तथा यगण होते हैं तथा सम पाद में नगण, दो जगण, रगण तथा गुरु वर्ण होते हैं।

आचार्यपिङ्गल (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) ने इस छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है।

[251] वृत्तरत्नाकर- 4.10 तथा छन्दोमञ्जरी- 3.5.

पुष्पिताग्रा नौ र्-यौ, न्-जौ ज्-रौ ग्[252] ।

अर्थात् इस छन्द में विषम पाद में दो नगण, रगण तथा यगण होते हैं तथा सम पाद में नगण, दो जगण, रगण तथा गुरु वर्ण होते हैं। (त्रिपाठी, 2012 तथा ठक्कुर एवं मिश्र, 2008)।

उदाहरण

वहति जलमियं पिनष्टि गन्धान्, इयमियमुद्-ग्रथते स्रजो विचित्राः।

मुसलमिदमियं च पातकाले, मुहुरयाति कलेन हुंकृतेन[253] (गुप्ता, 2012)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	नगण	नगण	रगण	यगण
	।।।	।।।	ऽ।ऽ	।ऽऽ
	वहति	जलमि	यंपिन-	ष्टिगन्धान्,
द्वितीयपाद	नगण	जगण	जगण	रगण	गु.
	।।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ।ऽ	ऽ
	इयमि	यमुद्ग्र-	थतेस्र	जोविचि	त्राः।
तृतीयपाद	नगण	नगण	रगण	यगण	
	।।।	।।।	ऽ।ऽ	।ऽऽ	
	मुसल	मिदमि	यंचपा	तकाले,	
चतुष्पाद	नगण	जगण	जगण	रगण	गु.
	।।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ।ऽ	ऽ
	मुहुर	नुयाति	कलेन	हुंकृते	न॥

[252] छन्दसूत्र- 5.41.

[253] मुद्राराक्षस- 1.4.

1.3.4 मालभारिणी

मालभारिणी छन्द में प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं, दो सगण, एक जगण, और दो गुरु, द्वितीय और चतर्थ चरण में बारह वर्ण होते हैं, जिसमें एक सगण, एक भगण, एक रगण, और यगण होता है।

लक्षण

उत्तररामचरित (द्विवेदी, 2012) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

विषमे ससजा गुरु समे चेत् , सभरा येन तु मालभारिणीयम्[254]।

इस वृत्त में सम में सगण, भगण, रगण, यगण तथा विषम में सगण, सगण, जगण, दो गुरु वर्ण होते हैं (द्विवेदी, 2012)।

उदाहरण

अपरिक्षत-कोमलस्य यावत्-कुसुमस्येव नवस्य षट्पदेन।

अधरस्य पिपासता मया ते सदयं सुन्दरि गृह्यते रसोऽस्य[255] (त्रिपाठी, 2014)॥

---

[254] उत्तररामचरित, पृष्ठसङ्ख्या- 610.

[255] अभिज्ञानशाकुन्तल- 3.21.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	सगण	जगण	गु. गु.
	।।ऽ	।।ऽ	।ऽ ।	ऽ ऽ
	अपरि-क्षतको	मलस्य	या वत्	
द्वितीयपाद	सगण	भगण	रगण	यगण
	।।ऽ	ऽ।।	ऽ।ऽ	।ऽऽ
	कुसुम-स्येवन	वस्यष	ट्पदेन।	
तृतीयपाद	सगण	सगण	जगण	गु. गु.
	।।ऽ	।।ऽ। ऽ।		ऽ ऽ
	अधर-स्यपिपा	सताम	या ते	
चतुष्पाद	सगण	भगण	रगण	यगण
	।।ऽ	ऽ।।	ऽ।ऽ	।ऽऽ
	सदयं	सुन्दरि	गृह्यते	रसोऽस्य॥

1.3.5 वियोगिनी

जिस छन्द के विषम (1 और 3) पादों में क्रम से दो सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से दस वर्ण होते हैं तथा सम (2 और 4) पादों में सगण, भगण, रगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण हों तो उसे वियोगिनी छन्द कहते है । वियोगिनी छन्द को सुन्दरी नाम से भी जाना जाता है (शास्त्री, 1978)।

लक्षण

श्रीकान्तिचन्द्र भट्टाचार्यकृत काव्यदीपिका (त्रिपाठी, 2015) में इस छन्द का लक्षण है-

विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी[256]।

अर्थात् इस छन्द के विषम पादों में दो सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से दस वर्ण होते हैं तथा सम पादों में सगण, भगण, रगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते है।

छन्द:प्रकाश (शास्त्री, 1978) में इस छन्द का लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

[256] काव्यदीपिका, पृष्ठसङ्ख्या- 68.

विषमे यदि सौ जगौ समे सभरा लगौ च तदा वियोगिनी[257]।

अर्थात् वियोगिनी छन्द के विषम चरणों में दो सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से दस वर्ण होते हैं तथा सम चरणों में सगण, भगण, रगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण होते हैं।इस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में 10 वर्ण तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 11 वर्ण होते हैं (शास्त्री, 1978)।

उदाहरण

रमते तृषितो धनश्रिया रमते कामसुखेन बालिशः।

रमते प्रशमेन सज्जनः परिभोगान् परिभूय विद्यया[258] (मिश्र, 2010)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	सगण	जगण	गु.
	।।ऽ	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	रमते	तृषितो	धनश्रि	या
द्वितीयपाद	सगण	भगण	रगण	ल. गु.
	।।ऽ	ऽ।।	ऽ।ऽ	।ऽ
	रमते	कामसु	खेनबा	लिशः।
तृतीयपाद	सगण	सगण	जगण	गु.
	।।ऽ	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	रमते	प्रशमे	नसज्ज	नः
चतुष्पाद	सगण	भगण	रगण	ल. गु.
	।।ऽ	ऽ।।	ऽ।ऽ	।ऽ
	परिभो	गान्परि	भूयवि	द्य या॥

[257] छन्दःप्रकाश, पृष्ठसङ्ख्या- 10.

[258] सौन्दरनन्द-8.26.

विषमवृत्त छन्दों का परिचय

आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दसूत्र में विषमवृत्त छन्द को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिस छन्द के चारों पादों में अक्षरों की सङ्ख्या भिन्न-भिन्न रहती है। शोध के लिये चुने हुए 40 छन्दों में से केवल 2 विषमवृत्त छन्द हैं। जिनका विवेचन नीचे किया जा रहा है। विषमवृत्त छन्द को इसी शोध के द्वितीय अध्याय में विस्तार से बता दिया गया है।

1.4 विषमवृत्त छन्द

जिस छन्द के चारों चरणों में वर्णों की सङ्ख्या भिन्न-भिन्न रहती है उसको विषमवृत्त छन्द कहते है। इस शोध में कुल 2 विषमवृत्त छन्दों का चुनाव किया गया है।

1.4.1 उद्गता

जिस छन्द के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण तथा लघु (10 वर्ण) हों, द्वितीय में नगण, सगण, जगण तथा गुरु (10 वर्ण), तृतीय में भगण, नगण, जगण, लघु तथा गुरु (11 वर्ण) तथा अन्तिम चरण में सगण, जगण, सगण, जगण तथा गुरु (13 वर्ण) हों तथा पहला और दूसरा पाद बिना यति के बिना रुके ही एक साथ पढ़े जायें तो इसे उद्-गता छन्द कहते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

लक्षण

गङ्गादास छन्दोमञ्जरी (तैलङ्ग, 2013) में इसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।

प्रथमे सजौ यदि सलौ च, नसजगुरुकाण्यनन्तरम्।

अर्थात् इस छन्द के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण तथा लघु वर्ण हों, द्वितीय में नगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण, तृतीय में भगण, नगण, जगण, लघु तथा गुरु तथा अन्तिम चरण में सगण, जगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण होते हैं।

यद्यथ भनभगा: (भनजलगाः) स्युरथो, सजसा जगौ च भवतीयमुद्-गता[259]॥

अर्थात् उद्गता छन्द के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण तथा लघु वर्ण हों, द्वितीय में नगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण, तृतीय में भगण, नगण, जगण, लघु तथा गुरु तथा अन्तिम चरण में सगण, जगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण होते हैं।

पिङ्गलकृतछन्दसूत्र (द्विवेदी एवं सिंह, 2008) में इसका लक्षण इस प्रकार प्राप्त होता है।

उद्गतामेकत: स्-जौ स्-लौ, न्-सौ ज्-गौ, भ्-नौ ज्-लौ ग्, स्-जौ स्-जौ ग:[260]।

अर्थात् जिस छन्द के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण तथा लघु वर्ण हों, द्वितीय में नगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण, तृतीय में भगण, नगण, जगण, लघु तथा गुरु तथा अन्तिम चरण में सगण, जगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण होते है उसे उद्गता छन्द कहते हैं (त्रिपाठी, 2015 तथा त्रिपाठी, 2012)।

उदाहरण

मृगलोचना शशिमुखी च, रुचिरदशना नितम्बिनी।

हंस-ललित-गमना ललना, परिनीयते यदि भवत्कुलोद्गता[261] (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)॥

---

[259] छन्दोमञ्जरी- 4.1.

[260] छन्दसूत्र- 5.25.

[261] वृत्तरत्नाकर- 5.6.

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	सगण	जगण	सगण	ल.
	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।
	मृगलो	चनाश	शिमुखी	च
द्वितीयपाद	नगण	सगण	जगण	गु.
	।।।	।।ऽ	।ऽ।	ऽ
	रुचिर	दशना	नितम्बि	नी।
तृतीयपाद	भगण	नगण	जगण	ल. गु.
	ऽ।।	।।।	।ऽ।	।ऽ
	हंसल	लितग	मनाल	ल ना
चतुष्पाद	सगण	जगण	सगण	जगण गु.
	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।ऽ। ऽ
	परिनी	यतेय	दिभव-त्कुलोद्भू	ता॥

1.4.2 गाथा

जिन छन्दों का प्रयोग इस ग्रन्थ में नहीं किया गया हैं उनको गाथा कहते हैं।

लक्षण

वृत्तरत्नाकर (त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012) में इसका लक्षण इस प्रकार से प्राप्त होता है-

विषमाक्षरपादं वा पादैरसमं दशधर्मवत्।

यच्छन्दो नोक्तमत्र गाथेति तत् सूरिभिः प्रोक्तम्[262] ॥

विद्वानों के द्वारा इन छन्दों के दो भेद स्वीकार किये गये हैं। प्रथम भेद के अनुसार इस छन्द के चरणों में विषम अक्षर होते हैं- समान अक्षर नहीं हैं अर्थात् जो विषम छन्द हैं। दूसरे वे हैं जिनके पाद सामान्य सङ्ख्या चार से भिन्न हैं अर्थात् 3 पाद वाले छन्द तथा 6 पाद वाले छन्द। जिन छन्दों में चार अधिक या कम पाद होंगे उन्हें गाथा नाम दिया जायेगा (शास्त्री, 2014 तथा त्रिपाठी एवं उपाध्याय, 2012)।

[262] वृत्तरत्नाकर- 5.12.

उदाहरण

मा दुर्गत इति परिभवो नास्ति कृतान्तस्य दुर्गतो नाम।

चारित्र्येण विहीन आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति[263] (द्विवेदी, 2013)॥

उदाहरण विश्लेषण

प्रथमपाद	ऽ ऽ। । । । । । ऽ	13 मात्राएँ
	मा दु र्ग त इ ति प रि भ वो	
द्वितीयपाद	ऽ । । ऽ ऽ । ऽ। ऽ ऽ ऽ	18 मात्राएँ
	ना स्ति कृ ता न्त स्य दु र्ग तो ना म।	
तृतीयपाद	ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ	12 मात्राएँ
	चा रि त्र्ये ण वि ही न	
चतुष्पाद	ऽ ऽ । । ऽ। ऽ । । ऽ	15 मात्राएँ
	आ ढ्यो ऽपि च दु र्ग तो भ व ति॥	

विशेष- गाथा नामक प्राकृत भाषा में भी एक छन्द है लेकिन वह इस गाथा से भिन्न है। संस्कृत में आर्या का जो लक्षण है वही यदि प्राकृत में उपलब्ध हो तो उसे गाथा नाम से जाना जाता है।

2. मात्राओं की गणना के नियम

संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त लौकिक छन्दों में लघु-गुरु, गण-पद्धति और मात्राओं की सङ्ख्या का विशेष महत्त्व है। मात्राओं की गणना करने वाले नियमों के माध्यम से एक पद्य या श्लोक को अच्छे से समझा जा सकता है। इस प्रकार यहाँ मात्राओं की गणना करने वाले नियमों को बताया गया है।

1. लक्षणों में 'ग' अक्षर के प्रयोग से गुरु और 'ल' अक्षर के प्रयोग से लघु का संकेत ग्रहण होगा, गुरु को 'ऽ' से तथा लघु को '।' से चिह्नित किया जाता है।

[263] मृच्छकटिक-1.43.

2. एक मात्रिक स्वर अथवा व्यञ्जन के उच्चारण में जितना वक्त और बल लगता है दो मात्रिक के उच्चारण में उसका दोगुना वक्त और बल लगता है।

3. अनुस्वार से युक्त जैसे मं लं तं इत्यादि लघुवर्ण को भी गुरु माना जाता है।

4. द्विमात्रिक दीर्घ वर्ण को गुरु माना जाता है।

5. संयुक्त वर्ण जैसे 'विद्या' में 'द्या' 'इन्द्र' में 'न्द्र', आदि संयुक्त वर्ण हैं, और उससे पूर्व का वर्ण गुरु माना जाता है।

6. यदि लघु स्वर के बाद विसर्ग हो तो वह भी गुरु माना जाता है, जैसे- कृष्ण:, वानर:, मति: आदि। यहाँ ण, र, ति- विसर्ग युक्त हैं इसलिए गुरु माने गये हैं।

7. पाद या चरण के अन्त में यदि लघु वर्ण हो तो गुरु वर्ण की आवश्यकता होने या गण का निर्धारण करने में उसे गुरु माना जाता है, परन्तु यह नियम विकल्प से है अर्थात् छन्द की आवश्यकतानुसार चरणान्त के वर्ण ह्रस्व को गुरु और गुरु को ह्रस्व माना जाता है। मात्रिक छन्दों में भी प्राय: लघु-गुरु का यही नियम मान्य है।

8. लघु स्वर के बाद यदि अनुस्वार हो तो वह गुरु माना जाता है, जैसे- अंत, पंचमं आदि। यहाँ अ, प और म वर्ण अनुस्वार युक्त हैं इसलिए गुरु माने गये हैं।

9. सभी व्यञ्जन एक मात्रिक होते हैं, जैसे – क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट ... आदि।

10. अ, इ, उ स्वर व अनुस्वर चन्द्रबिन्दू तथा इनके साथ प्रयुक्त व्यञ्जन एक मात्रिक होते हैं, जैसे- अ, इ, उ, कि, सि, पु, सु, हँ आदि एक मात्रिक हैं।

11. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं स्वर तथा इनके साथ प्रयुक्त व्यञ्जन दो मात्रिक होते हैं जैसे = आ, सो, पा, जू, सी, ने, पै, सौ, सं आदि 2 मात्रिक हैं।

12. संयुक्ताक्षर जैसे = क्ष, त्र, ज्ञ, द्ध, द्व आदि दो व्यञ्जन के योग से बने होने के कारण गुरु मात्रिक हैं, परन्तु मात्रा गणना में खुद लघु हो कर अपने पहले के लघु व्यञ्जन को गुरु कर देते हैं,

उदाहरण = पत्र= ऽ।, वक्र = ऽ।, यक्ष = ऽ।, कक्ष - ऽ।, यज्ञ = ऽ।, शुद्ध = ऽ।, क्रुद्ध = ऽ।, गोत्र = ऽ। तथा मूत्र = ऽ। इत्यादि।

13. यदि संयुक्ताक्षर से शब्द प्रारम्भ हो तो संयुक्ताक्षर लघु हो जाते हैं

    उदाहरण = त्रिशूल = ।ऽ। , क्रमांक = ।ऽ।, क्षितिज = ।ऽ। आदि।

14. संयुक्ताक्षर जब दीर्घ स्वर युक्त होते हैं तो अपने पहले के व्यञ्जन को दीर्घ करते हुए स्वयं भी दीर्घ रहते हैं अथवा पहले का व्यञ्जन स्वयं दीर्घ हो तो भी दीर्घ स्वर युक्त संयुक्ताक्षर दीर्घ मात्रिक गिने जाते हैं- उदाहरण- प्रज्ञा = ऽऽ राजाज्ञा = ऽऽऽ इत्यादि।

15. विसर्ग युक्त व्यञ्जन दीर्घ मात्रिक होते हैं ऐसे व्यञ्जन को एक मात्रिक नहीं गिना जा सकता। उदाहरण- दुःख = ऽ। होता है इसे दीर्घ नहीं गिन सकते यदि हमें मात्रा में इसका प्रयोग करना है तो इसके तद्भव रूप में 'दुख' लिखना चाहिए इस प्रकार यह दीर्घ मात्रिक हो जायेगा।

16. जब दो अक्षर मिलकर संयुक्त अक्षर बनाते हैं तो जिस अक्षर की आधी ध्वनि होती है उसकी गणना पूर्व अक्षर के साथ होती है.

    यथा- अर्ध = अ + र् + ध = ऽ + । = 3

    मार्ग = मा + र् + ग = ऽ + । = 3

    दर्शन = द + र् + श + न = ऽ + । + । = 4

17. आधे अक्षर के पहले दीर्घ या बड़ा अक्षर हो तो आधा अक्षर उसके साथ मिलकर उच्चरित होता है इसकी मात्रा दो होती हैं, ढाई या तीन मात्रा नहीं हो सकती यथा-

    क्ष = क् +ष्, कक्षा = क् + षा = ऽ + ऽ = 4, ज्ञ = ज् + ञ

    विज्ञ= वि + ज् + ञ = ऽ + । = 3

    ज्ञान की मात्रा 3 होगी, पर विज्ञान की मात्रा 5 होगी।

    त्र में त् तथा र् का उच्चारण एक साथ होता है अतः त्र की मात्रा भी एक होगी यथा-

    पत्र = ऽ + । = 3, पात्र = ऽ + । = 3

18. संयुक्त अक्षर यदि प्रथम हो तो अर्ध अक्षर की गणना नहीं होती

    प्रचुर = ।+ । +। = 3, त्रस्त = ऽ + । = 3

    क्षत = क् + ष् + त = । + । = 2

19. आचार्य गंगादास ने इन सभी नियमों को अपने ग्रन्थ छन्दोमञ्जरी में एक श्लोक के माध्यम से बताया है[264] (तैलङ्ग, 2013) अर्थात् अनुस्वार सहित ह्रस्ववर्ण (अं,कं,चं आदि) और दीर्घ (आ,का,चा आदि) तथा विसर्ग युक्त (अ:,क:,च: आदि) और संयुक्त अक्षर से पहला अक्षर (यथा-कृष्ण: में कृ, मित्र: में मि आदि) गुरु होता है पाद के अन्त में रहने वाले ह्रस्व वर्ण को भी छन्द की आवश्यकता के अनुसार विकल्प से गुरु अथवा लघु माना जाता है।

[264] सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्ण: संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥ (छन्दोमञ्जरी- 1.11)।

चतुर्थ अध्याय

वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र के संगणकीय पक्ष

1. संस्कृत छन्दसंगणक एवं डेटा संग्रहण में प्रयुक्त विधि

यह अध्याय वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र के प्रायोगिक कार्यान्वयन का वर्णन करता है । इसमें संगणकीय भाषाविज्ञान की सूचना पुनर्प्राप्ति (Information Retrieval) की विधियों का प्रयोग किया गया है (Baeza, 2003 and Jurafsky, 2013) । छन्द हेतु संगणकीय प्रारूप प्रोग्राम के लिये पाइथॉन प्रोगामिंग (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) भाषा का प्रयोग करता है । जिससे छन्द सम्बन्धी सभी सूचनाएँ डेटाबेस से प्राप्त की जाती हैं । सबसे पहले छन्द से सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन किया गया । तथा फिर इन शास्त्रों की सहायता से चुनिन्दा छन्दों के लिये एक डेटाबेस बनाया गया । फिर इसके बाद इन्हीं डेटाबेस की सहायता से पाइथॉन (Python) आधारित एक खोज इंजन (Search Engine) विकसित किया गया । इन्पुट एवं आउटपुट के लिये एक यूजर इंटरफेस भी विकसित किया गया, जहाँ से प्रयोक्ता इस सिस्टम में सर्च हेतु इन्पुट दे सकता है तथा आउटपुट भी इसी पेज पर प्राप्त कर सकता है । इस शोध में नियम एवं उदाहरण संयुक्त (hybrid) विधि का प्रयोग किया गया है । जिसका मुख्य आधार पिङ्गलछन्दशास्त्र या छन्दसूत्र है । इसके लिए सबसे पहले चुने हुए छन्दों का एक डेटाबेस बनाया गया । जिसमें छन्द के लक्षण, उदाहरण एवं उसका विश्लेषण आदि सभी सूचनाएँ रखी गई हैं । इसी प्रकार अन्य आवश्यक डेटा इसी डेटा के अन्य तालिकाओं में रखे गये हैं । एक यूजर इंटरफेस (User Interface) का भी विकास किया गया जिसकी सहायता से इस सिस्टम में इन्पुट (Input) दिया जाता है तथा इन्पुट (Input) के अनुसार आउटपुट भी इसी पेज पर दिखाया जाता है । यह यूजर इंटरफेस (User Interface) का स्क्रीनशॉट चित्र संख्या 5.4 चतुर्थ परिशिष्ट में दिखाया गया है । सिस्टम सबसे पहले प्रयोक्ता द्वारा दिये गये छन्द की जाँच करता है कि यह छन्द है कि नहीं । जाँच सही होने पर आगे प्रक्रिया के लिये भेजता है । फिर सिस्टम प्रदत्त छन्द से सम्बन्धित सूचनाएँ जैसे परिभाषा (लक्षण), उदाहरण एवं अन्य सूचनाएँ मात्रा गणना के साथ वापस कर देता है । उदाहरण का विश्लेषण नियम के आधार पर किया जाता है । सिस्टम द्वारा मात्रा की गणना का पूर्ण नियम भी प्रयोक्ता को बताया

जाता है । साथ ही साथ प्रस्तुत छन्द दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में कहाँ-कहाँ आया है इसकी सूचना भी दी जाती है ।

2. वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना (Architecture of the System)

वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र यूजर इण्टरफेस (front end) का विकास पाइथॉन सर्वर पेजेज (पीएसपी) में किया गया है । तथा डेटाबेस एवं टेक्सट फाइल का प्रयोग किया गया है। पाइथॉन प्रोग्रामिंग (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) भाषा का प्रयोग किया गया है । इस सिस्टम की संरचना बहु-स्तरीय है जिसको चित्र संख्या 4.1 में दिखाया गया है ।

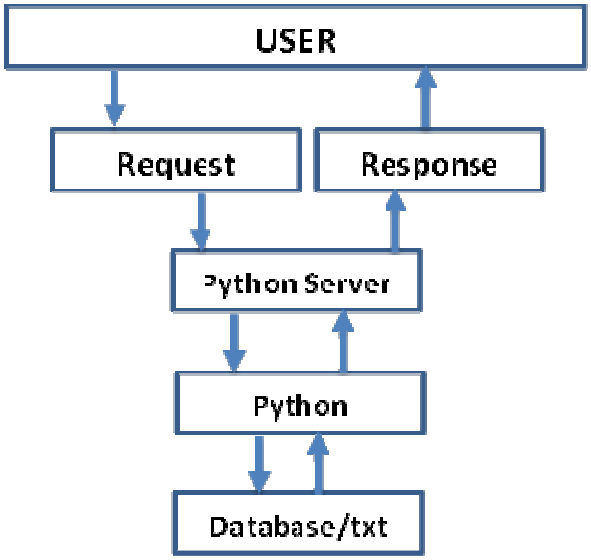

चित्र 4.1: वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना (Architecture of the System)

2.1 पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages)

यह सिस्टम इन्पुट (Input) तथा ऑउटपुट (output) एक यूजर इंटरफेस (User Interface) की सहायता से स्वीकृत करता है । यह इण्टरफेस पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages) में विकसित किया गया है[265] । इसका स्क्रीनशॉट चित्र संख्या 5.4 तथा चतुर्थ परिशिष्ट में दिया गया है । यह इंटरफेस पीएसपी में विकसित किया है, जिसमें वेब पेज के लिये एचटीएमएल (HTML)

[265] www.spyce.in

(Powell, 2010), टेक्सट फॉर्मेटिंग के लिये सीएसएस (CSS) (Powell, 2010) तथा पेज को परिवर्तनशील बनाने के लिये जावा स्क्रिप्ट (Java Script) (Nixon, 2015) के साथ पाइथॉन (Python) (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) के कोड शामिल हैं। कोड का प्रारूप नीचे दिया गया है।

```
<!—Import Template for Header and other details -->
<spy:parent src="../template/template.spy" />
 [[.import name=redirect ]]
[[.import name=cookie ]]
 [[\
# Imports all functions for Meter information
# coding: utf-8
import string, InfoGen, codecs, socket, cgi, os, re
from time import gmtime, strftime
]]
<link href="themes/1/tooltip.css" rel="stylesheet" type="text/css" />
<script src="themes/1/tooltip.js" type="text/javascript"></script>
<style type="text/css">
h4 { font-size: 16px; font-family: "Trebuchet MS", Verdana; line-height:18px;}
        table {
                border-collapse: collapse;
                }
                </style>

        <meta charset="UTF-8">
        <TITLE>Web based Expert System for Sanskrit Grammar for e-learning</TITLE>
        <p align="center"><center>
```

```
<table class="main" border="0" bordercolordark="navy" bordercolor="navy" cellpadding="0" cellspacing="0" width="80%" height="25">
    <tr>
    <td class="main" width="100%" align="center" colspan=3>
    <p align="center"><b><font face="Arial Unicode MS" color="navy"
     size="6px">वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र</font><br>
    <font face="Georgia" color="navy" size="6px">
          
    Web based Sanskrit Meter Information System</font></b>
    </p>
```

2.2 स्पाइसी (Spyce) वेब सर्वर (Web Server)

सर्वर के लिये Spyce पाइथॉन सर्वर[266] (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) का प्रयोग किया गया है। स्पाइसी एक सर्वर के लिये भाषा है जो परिवर्तनशील एचटीएमएल (HTML) (Powell, 2010) को बड़ी ही कुशलता से समर्थन करता है। यह जेएसपी जैसा ही है।

2.3 डेटाबेस एवं टेक्सट फाइल (Database and text file as back end)

छन्द से सम्बन्धित डेटा तथा नियम डेटाबेस तथा टेक्सट फाइल में संरक्षित किये गये हैं। डेटाबेस के लिये माइएसक्यूएल (MySQL)[267] (Vaswani, 2004 and DuBois, 2015) का प्रयोग

[266] http://spyce.sourceforge.net/
[267] https://www.mysql.com/

किया गया है (Nixon, 2015)। जिसमें डेटा देवनागरी यूनीकोड[268] में रखा गया है। साथ ही साथ कुछ डेटा टेक्सट फाइल में भी रखा गया है। इस डेटाबेस में कुल तीन तालिकाएं प्रयुक्त हुई हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है-

2.3.1 छन्द तालिका (Meter Table)

इस तालिका में छन्द से सम्बन्धित डेटा संरक्षित किये गये हैं। जिसकी संरचना एवं डेटा प्रारूप तालिका संख्या 4.1 में दी गई है। इस तालिका में कुल आठ कॉलम हैं। जिनका विवरण निम्नलिखित है:

2.3.1.1 क्रम संख्या (SR): इस कॉलम में छन्द की आईडी (Unique ID) दी गई है। जो 1 प्रारम्भ होती है। जैसाकि तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 1 से स्पष्ट है।

2.3.1.2 छन्द नाम (meterName): इस कॉलम में छन्द का नाम संरक्षित किया गया है। जैसाकि तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 2 से स्पष्ट है।

Sr.	Field Name	Data
1.	SR	1
2.	meterName	इन्द्रवज्रा
3.	mdef_1	स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।
4.	mdef_2	इन्द्रवज्रा तौ ज्-गौ ग्।
5.	mdef_3	स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।
6.	mMean	जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से दो तगण, एक जगण और दो गुरु हों, तो उस छन्द को इन्द्रवज्रा कहते हैं।
7.	mExam	अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः। जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥
8.	mDetails	अर्थात् इसके प्रत्येक पाद में 11-11 के क्रम से कुल 44 अक्षर प्राप्त होते हैं। इस छन्द में प्रत्येक चरण के अन्त में यति का प्रयोग हुआ है

तालिका संख्या 4.1 डेटाबेस का प्रारूप

[268] http://unicode.org/

2.3.1.3 छन्द लक्षण_1 (mdef_1): इस कॉलम में छन्दसूत्र के अनुसार छन्द का लक्षण संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 3 में दिखाया गया है।

2.3.1.4 छन्द लक्षण_2 (mdef_2): इस कॉलम में वृत्तरत्नाकर के अनुसार छन्द का लक्षण संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 4 में स्पष्ट किया गया है।

2.3.1.5 छन्द लक्षण_3 (mdef_3): इस कॉलम में छन्दोंमञ्जरी के अनुसार छन्द का लक्षण संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 5 में बताया गया है।

2.3.1.6 छन्द अर्थ (mMean): इस कॉलम में छन्द का अर्थ संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 6 में दिखाया गया है।

2.3.1.7 छन्द उदाहरण (mExam): इस कॉलम में छन्द का उदाहरण संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 7 में स्पष्ट किया गया है।

2.3.1.8 छन्द विशेषता (mDetails): इस कॉलम में छन्द की विशेषता संरक्षित की गई है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.1 के क्रम संख्या 8 में दिखाया गया है।

2.3.2 छन्द प्रयोग सन्दर्भ तालिका (Meter Uses Reference Table)

इस तालिका में छन्दों का प्रयोग दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत पाठ्यक्रम के किस ग्रन्थ के किस श्लोक में हुआ है इसकी सूचना दी गई है। जिसकी संरचना एवं डेटा प्रारूप तालिका संख्या 4.2 में दी गई है।

Sr.	Filed Name	Data
1.	M_ID	1
2.	BookName	रघुवंशम्
3.	Reference	रघुवंशम्_1.1

तालिका संख्या 4.2: छन्द प्रयोग सन्दर्भ तालिका (Meter Uses Reference Table)

2.3.3 छन्द प्रयोग श्लोक तालिका (Meter Uses Verses Table)

इस तालिका में छन्दों का प्रयोग दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत पाठ्यक्रम के किस ग्रन्थ के किस श्लोक में हुआ है। वह श्लोक सन्दर्भ के साथ रखा गया है। जिसकी संरचना एवं डेटा प्रारूप तालिका संख्या 4.3 में दी गई है।

Sr.	Filed Name	Data
1.	R_ID	रघुवंशम्_1.1
2.	Verses	वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये। जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

तालिका संख्या 4.3: छन्द प्रयोग श्लोक तालिका (Meter Uses Verses Table)

3. छन्द सूचना तन्त्र के घटक (Component of Sanskrit Meter Information System):

यह सिस्टम सबसे पहले प्रदत्त छन्द की पहचान करता है फिर सूचना के लिये डेटाबेस में सर्च करता है तथा सूचना प्राप्त होने पर सभी सूचनाओं को वेब पेज पर दिखाने के लिये भेजता है। इन सभी प्रक्रियाओं के लिये निम्नलिखित घटकों का प्रयोग किया गया है-

3.1 छन्द प्रमाणक (Meter Validator)

छन्द प्रमाणक इस सिस्टम का सबसे पहला एवं महत्त्वपूर्ण घटक है। यह छन्द की परीक्षा छन्द डेटाबेस के छन्दनाम तालिका की सहायता से करता है। इस तालिका में सभी छन्दों के नाम उनकी आईडी तथा उनके प्रकार के साथ रखी गई है। अगर प्रयोक्ता द्वारा दिया गया इन्पुट छन्द इस तालिका के किसी भी छन्द से मिलान होता है तो यह प्रमाणित होता है अन्यथा नहीं। यह घटक प्रयोक्ता द्वारा प्रदत्त छन्दों की परीक्षा करके यह सुनिश्चित करता है कि प्रदत्त छन्द किसी छन्द का नाम है या नहीं। सबसे पहले प्रयोक्ता द्वारा प्रदत्त छन्द को इस डेटाबेस में सर्च किया जाता है। अगर किसी छन्द से मेल होता है तो यह आगे प्रक्रिया के द्वारा भेजा जाता है अन्यथा इसे वापस कर दिया जाता है। तथा इन्हें अनावश्यक अन्य प्रक्रिया के लिये नहीं भेजता है। डेटाबेस का प्रारूप तालिका संख्या 4.1 में दी गई है। इस तालिका का प्रारूप तालिका संख्या 4.1 में दिखाया गया है। इस घटक का पाइथॉन कोड का प्रारूप निम्नलिखित है।

```
#Function for Pradipadika, Case, Number, Ending, Gender Recognizer
```

```
def MeterRecognizer(inp):
    aa = codecs.open("C:/PyWeb/spyce-2.1/www/meter/chhanda.txt","r",
"UTF-8")
    rule = aa.readlines()
    aa.close()
    meter = []
    Flag = False
    for end in rule[1:]:
        mt = end.split("\t")
        #print                    meter[-1].strip().encode("utf-8"),[meter[-
1].strip()],"<br>",inp.strip().encode("utf-8"),[inp.strip()],"<hr>"
        if mt[-1].strip()==inp.strip():
            meter.append(mt[0].strip())
    return meter
```

3.2 छन्द पहचानकर्त्ता (Meter Recognizer)

छन्द पहचानकर्त्ता इस सिस्टम का महत्त्वपूर्ण घटक है। जो छन्द की पहचान करता है। यह पहचान छन्द डेटाबेस में छन्द तालिका की सहायता से की जाती है। इस तालिका में सभी छन्दों के नाम उनकी आईडी तथा उनके प्रकार के साथ रखी गई है। अगर प्रमाणित हुआ छन्द इस तालिका से मिलता है तो उसकी सभी सूचनाओं के साथ वापस कर दिया जाता है। यदि नहीं मिलता तो "**इस छन्द की सूचना अभी उपलब्ध नहीं है**" के साथ वापस कर देता है। इस तालिका का प्रारूप तालिका संख्या 5.2 में दिखाया गया है। इस घटक का पाइथॉन कोड का प्रारूप निम्नलिखित है।

```
def Meter Recognizer(inp):
    aa = codecs.open("C:/PyWeb/spyce-2.1/www/meter/chhanda.txt","r", "UTF-8")
    rule = aa.readlines()
    aa.close()
    meter = []
    Flag = False
    for end in rule[1:]:
        mt = end.split("\t")
        #print meter[-1].strip().encode("utf-8"),[meter[-1].strip()],"<br>",inp.strip().encode("utf-8"),[inp.strip()],"<hr>"
        if mt[-1].strip()==inp.strip():
            meter.append(mt[0].strip())
    return meter
```

3.3 छन्द सूचना जनरेटर (Meter Information Generator)

छन्द सूचना जनरेटर (Meter Information Generator) के द्वारा पहचान की हुई छन्दों से सम्बन्धित सूचना जनरेट करता है। यह सूचना छन्द डेटाबेस के छन्दसूचना तालिका से प्राप्त की जाती है। इस तालिका में सभी छन्दों के नाम उनकी आईडी तथा उनके प्रकार के साथ सभी सूचनाएँ रखी गई हैं। इस तालिका का प्रारूप तालिका संख्या 5.2 में दिखाया गया है। इस घटक का पाइथॉन कोड का प्रारूप निम्नलिखित है।

```
def InfoGen(inp):
    aa = codecs.open("C:/PyWeb/spyce-2.1/www/meter/defination.txt","r", "UTF-8")
    a = aa.readlines()
    aa.close()
    deft=[]
    for i in a[2:4]:
        ii = i.strip().split("\t")
        if ii[0].strip() == inp:

deft.append(ii[1].strip()+"###"+ii[2].strip()+"###"+ii[3].strip()+"###"+ii[-1].strip())
    return deft
```

3.4 छन्द उदाहरण विश्लेषक (Meter Example Analyzer)

छन्द उदाहरण विश्लेषक (Meter Example Analyzer) के द्वारा प्राप्त सूचना के आधार उसके उदाहरण का विश्लेषण यह घटक करता है। इसके लिये छन्द डेटाबेस के नियम तालिका में संरक्षित किये गये हैं। जिसकी सहायता से उदाहरण का विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण के पश्चात् सूचना दिखाने के लिये भेजा जाता है तथा साथ-साथ इसके नियम भी हाइपर लिंक्ड करके भेजा जाता है। जिससे कोई भी इसके नियम को आसानी से सीख सकता है। इस तालिका का प्रारूप तालिका संख्या 5.3 में दिखाया गया है।

3.5 लेक्सिकॉन/डेटाबेस (Lexicon/Database)

जैसाकि पहले बताया जा चुका छन्द से सम्बन्धित सभी डेटाबेस तथा टेक्सट फाइल में संरक्षित किये गये हैं। जिसमें छन्द डेटाबेस मुख्य है। इसी डेटाबेस में अनेक तालिकाएँ हैं। जिसका विवरण तथा प्रारूप ऊपर दिया जा चुका है।

4. छन्द सूचना तंत्र की प्रक्रिया (Process of the Meter Information System):

वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र विभिन्न चरणों में कार्य करता है। सबसे पहले सिस्टम प्रयोक्ता द्वारा प्रदत्त छन्दों की जाँच करता है फिर जाँच के पश्चात् उसकी पहचान करता है। पहचान के पश्चात् सूचना जनरेटर के माध्यम से सूचना जनरेट होती है। यही सारी सूचनाएँ वेबपेज पर फॉर्मेटिग करके दिखाई जाती हैं। सूचना में उदाहरण भी शामिल होता है जिसका विश्लेषण भी किया जाता है। इसकी पूरी प्रकिया को चित्र संख्या 4.1 से समझा जा सकता है।

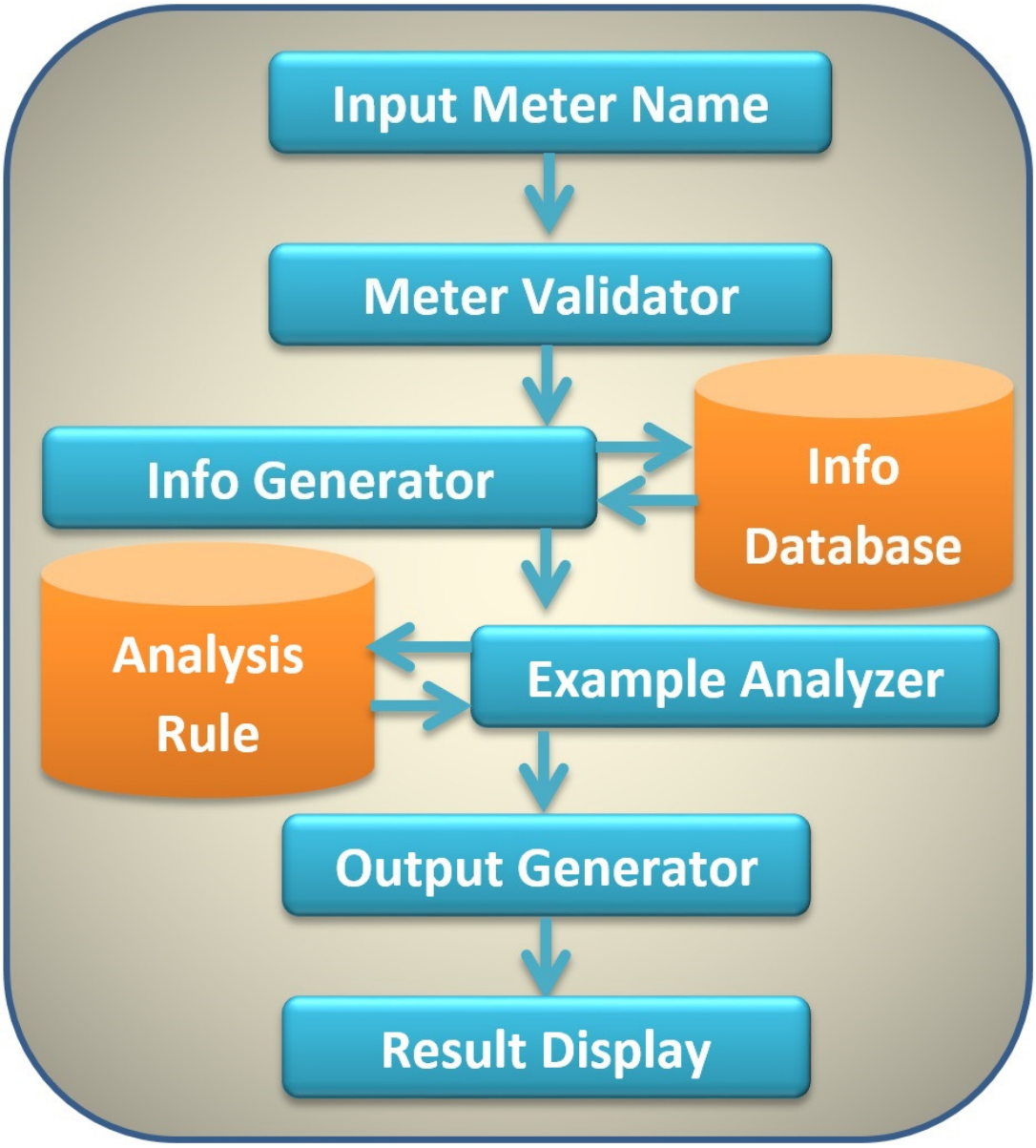

Figure 4.3: छन्द सूचना तंत्र की प्रक्रिया (Process of the Meter Information System)

पञ्चम अध्याय
वेब आधारित छन्द सहायक तंत्र का परिचय

इस शोधकार्य का परिणाम वेब आधारित सहायक सिस्टम है जो संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय http://sanskrit.du.ac.in पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) के अन्तर्गत उपलब्ध है। इस वेबसाइट को खोलने पर चित्र सङ्ख्या 5.4 में दिखाया गया यूजर इंटरफेस खुलता है। इसी वेब पेज पर प्रयोक्ता इन्पुट दे सकता है तथा ऑउटपुट के रूप में परिणाम भी देख सकता है।

1. इन्पुट मकैनिज्म (Input Mechanism):

वेब पेज पर इन्पुट देने के लिये निम्नलिखित दो पद्धतियाँ हैं-

1.1 पाठबॉक्स (Text Box):

वेब पेज पर एक पाठबॉक्स है जिसके माध्यम से प्रयोक्ता यूनीकोड देवनागरी में इन्पुट के रूप में किसी एक छन्द का नाम लिख सकता है। यह सिस्टम यूनीकोड देवनागरी में ही टाइप किया हुआ छन्द का नाम स्वीकृत करता है। अतः इन्पुट केवल यूनीकोड में देवनागरी लिपि में ही दिया जा सकता है, अन्यथा कोई परिणाम नही प्राप्त होगा। अगर कोई प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक छन्द के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो यह भी सम्भव है। इस पाठबॉक्स में एक साथ एक से अधिक छन्दों का भी नाम इन्पुट स्पेस (" ") के साथ दिया जा सकता है। उदाहरण के लिये *अनुष्टुप स्रग्धरा मन्दाक्रान्ता उपजाति*। पाठबॉक्स चित्र सङ्ख्या 5.1 में दिखाई गई है।

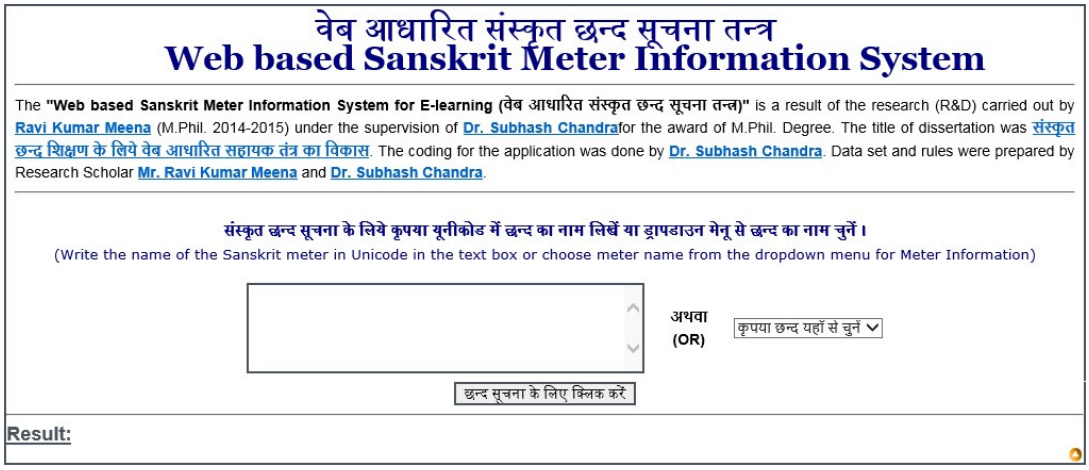

Figure 5.1: पाठबॉक्स (Text Box)

1.2 छन्दसूची (Dropdown Menu):

अगर कोई प्रयोक्ता देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाइप करने में असमर्थ है तो उसकी सूचना के लिये उपलब्ध सभी छन्दों की एक छन्दसूची (dropdown menu) भी दी गई है जिससे प्रयोक्ता छन्द का चुनाव कर सकता है। प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक छन्द का चुनाव भी कर सकता है। इसके लिये उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके छन्द का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है। छन्दसूची से छन्द चुनाव की प्रक्रिया चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाई गई है। छन्द सूचना तंत्र के इन्पुट हेतु यह सबसे सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नहीं है। केवल उसका चुनाव करना पड़ता है। छन्दसूची चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाई गई है।

1.3 सब्मिट बटन (Submit Button):

सब्मिट बटन से उपरोक्त किसी भी माध्यम में प्रदत्त इन्पुट को सूचना प्रक्रिया के लिये बैक इण्ड प्रोग्राम को भेजना होता है। सब्मिट होते ही सबसे पहले इन्पुट का परीक्षण होता है कि दिया गया इन्पुट कोई छन्द है या नहीं। अगर छन्द होता है तो अन्य प्रक्रिया के लिये भेजा जाता है जिससे सारी सूचनाएँ आउटपुट के रूप में इसी पेज पर परिणाम से नीचे प्रिण्ट करता है, यदि प्रदत्त

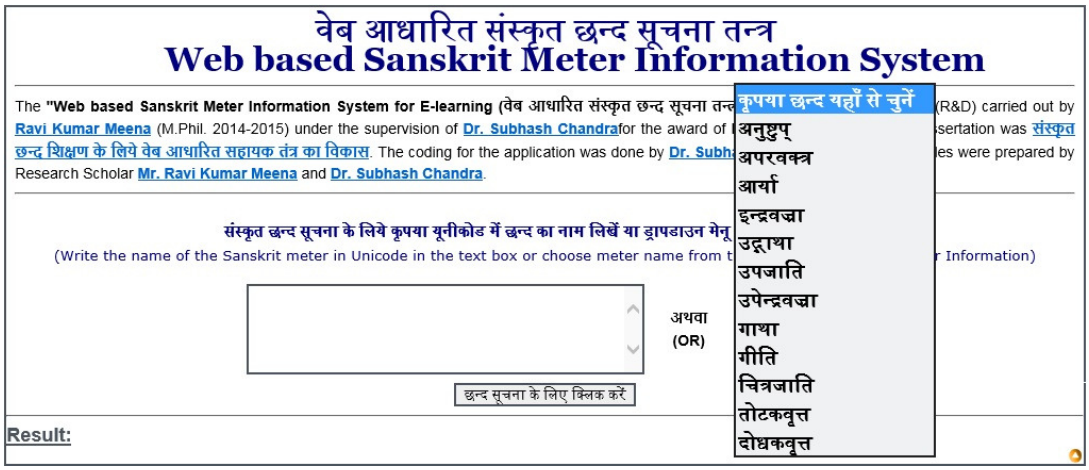

Figure 5.2: छन्दसूची (Dropdown Menu)

प्रयोक्ता द्वारा छन्द का नाम सही नहीं दिया होता है तो यूजर को "यह छन्द नहीं है कृपया सही छन्द का नाम लिखे" के रूप में वापस कर देता है। सब्मिट बटन चित्र सङ्ख्या 5.3 में **"छन्द सूचना के लिये क्लिक करें"** से दिखाया गया है।

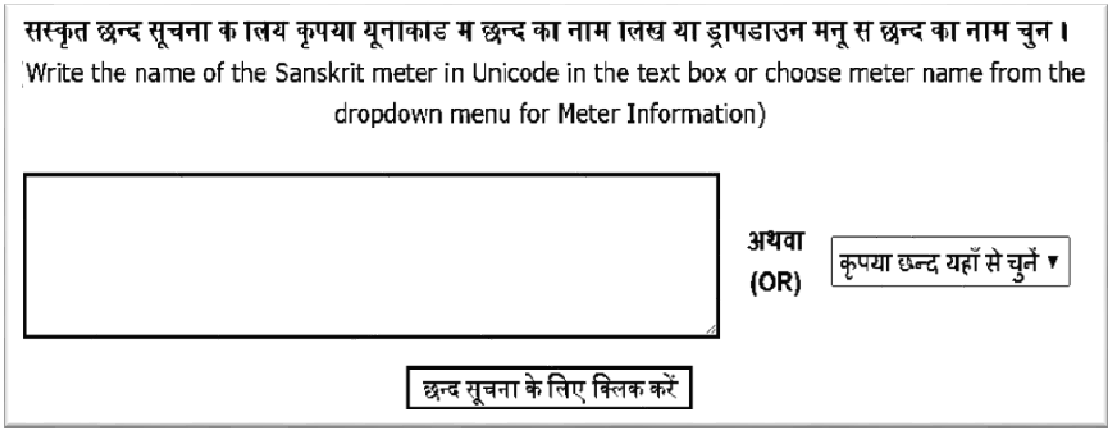

Figure 5.3: सब्मिट बटन (Submit Button)

2. आउटपुट (Output):

आउटपुट के रूप में प्रदत्त इन्पुट के रूप में छन्द के विषय में सभी सूचनाएँ परिणाम बटन से नीचे प्रिंट होती हैं। जैसाकि चित्र सङ्ख्या 5.3 में दिखाया गया है। जिसका विस्तृत विवरण परिणाम विवरण में दिया गया है।

3. परिणाम विवरण (Result Descriptions):

परिणाम के रूप में छन्द से सम्बन्धित सभी सूचना प्राप्त होती है। जो किसी भी प्रयोक्ता को छन्द शिक्षण के लिये आवश्यक होता है, जैसे लक्षण, उदाहरण, उदाहरण विश्लेषण (मात्रागणना), मात्रागणना के नियम, छन्दगान के लिये ऑडियो फाइल तथा विभिन्न पुस्तकों में खोजे गये छन्द का प्रयोग दिखाया जाता है। किसी भी पुस्तक के लिंक पर क्लिक करने पर वह श्लोक खुल जाता है तथा उसकी मात्रा की गणना भी स्वतः हो जाती है। परिणाम का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है-

3.1 छन्द लक्षण (Definition of Meter):

परिणाम में सबसे पहले छन्द विषयक विभिन्न सन्दर्भ शास्त्रों से लक्षण प्राप्त होता है। साथ में सन्दर्भ भी दिया जाता है। किसी भी लक्षण के ऊपर कर्सर ले जाने पर उस लक्षण का पूर्ण अर्थ हिन्दी भाषा में प्राप्त हो जाता है। हिन्दी भाषा में ही अनुवाद सबसे पहले उपलब्ध कराने का एक मुख्य कारण है कि संस्कृत भाषा को आजकल अधिक से अधिक लोगों द्वारा हिन्दी माध्यम से ही पढ़ने तथा पढ़ाने की परम्परा है। अतः इसे हिन्दी भाषा में ही अनुवादित किया गया है। बाद में अन्य भाषाओं में भी परिवर्तित किया जायेगा। लक्षण मुख्यरूप से छन्दशास्त्र (पाठक, 2015), वृत्तरत्नाकर (शास्त्री, 2014), छन्दोमञ्जरी (त्रिपाठी, 2012) तथा श्रुतबोध (जोशी, 2003) आदि ग्रन्थों से प्राप्त होता हैं।

3.2 छन्द उदाहरण (Example of Meter):

परिणाम में छन्दलक्षण के बाद उदाहरण दिया गया है। जिससे छन्द को लक्षण में घटा कर मात्रा या वर्ण आदि की गणना की जाती है। उदाहरण किसी एक ही ग्रन्थ से दिया जाता है। साथ में उदाहरण का सन्दर्भ भी दिया जाता है।

3.3 उदाहरण विश्लेषण (Example Analysis):

उदाहरण के बाद इसका विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण में सबसे पहले मात्राओं की गणना करके दिखाई जाती हैं। मात्रा गणना के नियम भी किसी भी मात्रा के ऊपर कर्सर ले जाने के बाद प्राप्त किया जा सकता है, कोई मात्रा लघु होते हुए भी गुरू क्यों हो जाती है इसका कारण भी बताया जाता है। जिससे विद्यार्थी को सीखने में बहुत ही सहायता मिलती है।

3.4 मात्रा गणना के नियम (Rules for Counting of Matra):

छन्द में मात्रा गणना के सभी नियम भी उदाहरण विश्लेषण के बाद दिखाया जाता है, कोई मात्रा लघु होते हुए भी कहाँ-कहाँ गुरू होगी, और गुरू होते हुए भी कहाँ-कहाँ लघु होगी आदि का विस्तृत विवरण सोदाहरण दिखाया जाता है। इन सभी विवरणों से विद्यार्थी मात्रा गणना के सभी नियम बहुत ही आसानी से सीख सकता है। शिक्षक भी इसके प्रयोग से छात्रों को आसानी से सिखा सकते हैं। इसका प्रारूप तालिका सङ्ख्या 5.3 में दिखाया गया।

3.5 पुस्तकों में छन्द का प्रयोग (Uses of Meters in books):

मात्रा गणना के नियम के बाद प्रस्तुत छन्द का प्रयोग दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए एवं एमए में लगी हुई पद्य से सम्बन्धित जिन-जिन पुस्तकों का प्रयोग किया गया है उसकी सूची भी दिखाई जाती है। यह सूची हाइपर लिंक्ड (Hyper linked) होती है जिसपर क्लिक करने के बाद वह पद्य खुल जाता है तथा उसका विश्लेषण भी हो जाता है। जिससे छात्रों को छन्द सीखने में बहुत मदद मिलती है।

3.6 छन्दगान प्रारूप (Singing Sample of Given Meter):

अन्त में प्रस्तुत छन्द के गान के अभ्यास हेतु छन्द के पुरूष एवं स्त्री विशेषज्ञों की आवाज में गायी हुई ऑडियो क्लिप की ऑडियो फाइल भी लिंक्ड होती है जिससे अगर कोई पाठक प्रस्तुत छन्द में लिखे गए पद्यों का गान करना सीखना चाहता है तो इस क्लिप पर क्लिक करके उसे सुन सकता है तथा डाउनलोड भी कर सकता है।

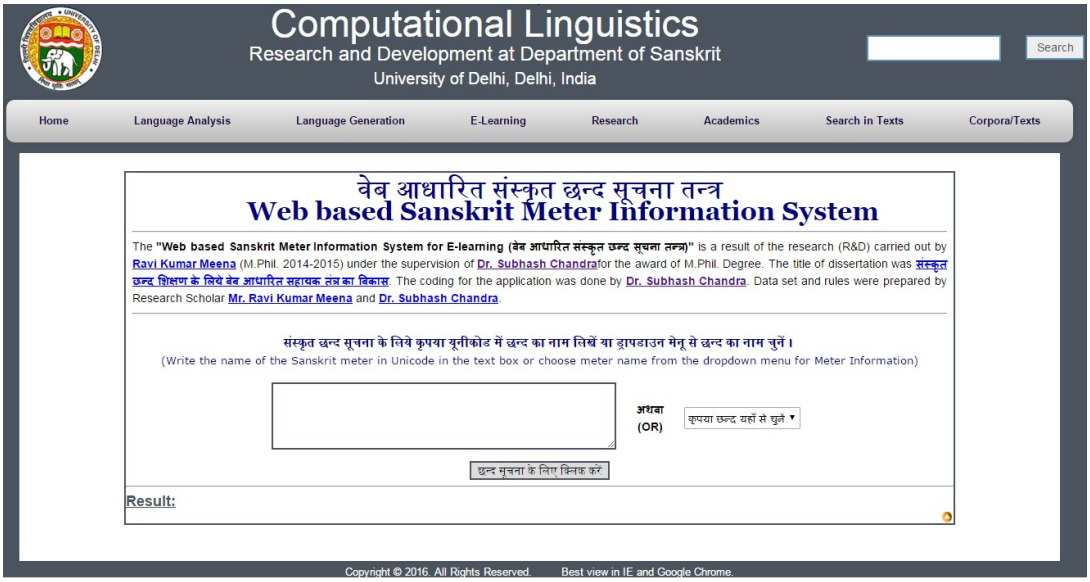

Figure 5.4: वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तंत्र का स्क्रीनशॉट

निष्कर्ष एवं भावी अनुसन्धान सम्भावनाएँ

यह अनुसन्धान एवं विकास कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल्. उपाधि हेतु 1.5 वर्ष में सम्पन्न किया गया है जिसमें छः मास में कोर्स कार्य सम्पन्न होता है। इसके बाद अनुसन्धान एवं विकास का कार्य आरम्भ होता है। समयभाव के कारण इस शोध में कुल चालीस छन्दों का ही चुनाव किया गया हैं। मात्र एक वर्ष में छन्द के लिये सम्बन्धित संगणकीय एक डेटाबेस बनाया गया। इस डेटाबेस सूचना प्राप्ति के लिये विभिन्न नियम तथा उदाहरण के विश्लेषण हेतु भी बहुत सारे छोटे-छोटे कार्य किये गये। इसके बाद सिस्टम का मूल्यांकन भी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। इस मूल्यांकन के पश्चात् प्राप्त कमियों को दूर करने का प्रयास भी किया गया है। इसके बाद इस सिस्टम को http:Sanskrit.du.ac.in नामक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की विभागीय वेबसाइट पर सर्वोपयोग के लिये उपलब्ध कराया गया। यद्यपि यह सिस्टम बहुत ही सावधानी से विकसित किया गया है। फिर भी इसमें बहुत सी कमियाँ भी हैं जिसको भविष्य में दूर करने का प्रयास किया जायेगा।

1. सिस्टम की कुछ विशिष्टताएँ:

1. यह सिस्टम छन्द से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ देता है।
2. छन्द के लक्षण विभिन्न प्रामाणिक ग्रन्थों से देता है।
3. छन्दों के उदाहरण दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के पाठ्यक्रम में लगी हुई पुस्तकों से ही प्राप्त होता है।
4. दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के पाठ्यक्रम में प्राप्त होने वाली पद्यों की समस्त सूची को छन्दों के उदाहरण के रूप में भी दिखाया जाता है। जिसका विश्लेषण भी प्राप्त हो जाता है।
5. छन्द को गाने हेतु इसकी ऑडियो क्लिप भी डाली गई है। जिससे प्रयोक्ता इसको गाने का अभ्यास भी कर सकता है।
6. यह सिस्टम अभी मात्र चुने हुए 40 छन्दों के ऊपर ही कार्य करता है। इन चालीस छन्दों के अतिरिक्त डेटा अभी तक उपलब्ध नहीं है। अतः अन्य छन्द की सूचना प्रयोक्ता को नहीं प्राप्त हो सकेगी।

7. मात्रा गणना के नियम भी यूजर को सीखने में मदद करता है।

2. सिस्टम की कुछ सीमाएँ:

1. अभी तक यह सिस्टम केवल देवनागरी यूनीकोड में इन्पुट लेता है तथा इसी फॉर्मेट में परिणाम देता है । अतः यह सिस्टम केवल हिन्दी माध्यम के जिज्ञासुओं के लिये ही उपयोगी हो सकता है।
2. यह सिस्टम अभी मात्र चुने हुए 40 छन्दों के ऊपर ही कार्य करता है। इन चालीस छन्दों के अतिरिक्त डेटा अभी तक उपलब्ध नहीं है । अतः अन्य छन्द की सूचना प्रयोक्ता को नहीं प्राप्त हो सकेगी।

3. भावी शोध की सम्भावनाएँ:

इस शोध से सम्बन्धित इस प्रकार के सिस्टम का विकास भविष्य में किया जा सकता है। इसको तीन बिन्दुओं के माध्यम से जाना जा सकता है।

3.1 बहुभाषीय सिस्टम का विकास:

1. भविष्य में इस प्रकार का सिस्टम विभिन्न भाषाओं में प्राप्त छन्दों को आधार बनाकर तैयार किया जा सकता है, यथा हिन्दी, उर्दू, तमिल तथा पंजाबी इत्यादि। तथा किसी भी भाषा में प्रमुख छन्दों को आधार बनाकर भी छन्द सूचना तंत्र का विकास किया जा सकता है।

3.2 वैदिक तथा अन्य लौकिक छन्दों हेतु सूचना तंत्र का विकास:

1. छन्दसूत्र में प्राप्त वैदिक छन्दों पर आधारित भविष्य में इस प्रकार का सिस्टम बनाया जा सकता है। जिससे किसी भी समय किसी भी स्थान पर छन्द जिज्ञासु इस सुविधा का लाभ प्राप्त कर सकेगा।
2. अभी तो यह सिस्टम कुल 40 छन्दों के आधार पर तैयार किया गया है। भविष्य में सम्पूर्ण लौकिक छन्दों के लिये भी छन्द सूचना तंत्र का विकास किया जा सकता है।

3.3 पद्यों में छन्द विश्लेषक सिस्टम का विकास:

1. इस क्षेत्र में और भी कार्य कार्यरत है यथा- भविष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय की वेब-साईट पर ऐसा सर्च-इंजन तैयार किया जा रहा है जिससे किसी भी समय कोई भी जिज्ञासु किसी भी श्लोक (चाहे वह किसी पाण्डुलिपि से प्राप्त हो या अन्य किसी भी पुस्तक से प्राप्त हो) को यूनिकोड में टाईप करके सर्च करता है तो वह उस श्लोक में कौनसा छन्द है, उसका लक्षण क्या है, अर्थ, तथा गण सहित यह सुविधा उपलब्ध होगी।

सन्दर्भग्रन्थ-सूची

सन्दर्भसूची:-

1. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल. 1963. *पतञ्जलिकालीन भारत.* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्. पटना ।

2. अभिमन्यु, मन्नालाल (सम्पा.). 2012. *अमरकोष.* चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी ।

3. अवस्थी, रुद्रप्रसाद (सम्पा.). 1972. *पाणिनीयशिक्षा.* चौखम्बा संस्कृतसीरीज आफिस. वाराणसी ।

4. उपाध्याय, बलदेव (सम्पा.). 1966. *अग्निपुराण.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी ।

5. उपाध्याय, बलदेव (सम्पा.). 1980. *नाट्यशास्त्र.* चौखम्भा संस्कृत संस्थान. वाराणसी ।

6. उपाध्याय, बलदेव एवं पाण्डेय, ओमप्रकाश. 1997. *संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास वेदाङ्ग खण्ड.* उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान. लखनऊ ।

7. उपाध्याय, बलदेव. 1955. *वैदिक साहित्य और संस्कृति.* शारदा संस्थान. वाराणसी ।

8. उपाध्याय, बलदेव. 1969. *संस्कृत शास्त्रों का इतिहास.* शारदा मन्दिर. वाराणसी ।

9. ऋषि, उमाशंकर शर्मा. 2012. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* चौखम्भा भारती अकादमी. वाराणसी ।

10. कीथ, ए. वी. 1967. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* मोतीलाल बनारसीदास. वाराणसी ।

11. कृष्णदास, गंगाविष्णु (सम्पा.). 1988. *श्रुतबोध.* लक्ष्मी-वेंकटेश्वर स्टीस प्रेस. बम्बई ।

12. गीताप्रेस (सम्पा.). 2008. *स्कन्धपुराण.* गीताप्रेस. गोरखपुर ।

13. गुप्त, गोकुलदास (सम्पा.) एवं झा, रामचन्द्र (सम्पा.). 2011. *पञ्चतन्त्र*. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।

14. गुप्ता, पुष्पा (सम्पा.). 2008. *विशाखदत्तप्रणीत मुद्राराक्षस*. ईस्टर्न बुक लिंकर्स. दिल्ली।

15. गुप्ता, सावित्री (सम्पा.). 2008. *नीतिशतकम्*. विद्यानिधि प्रकाशन. दिल्ली।

16. चतुर्वेदी, ब्रजमोहन (सम्पा.). 2011. *नाट्यशास्त्रम्*. विद्यानिधि प्रकाशन. दिल्ली।

17. जोशी, कन्हैयालाल (सम्पा.). 2003. *श्रुतबोध*. चौखम्भा पब्लिशर्स. वाराणसी।

18. ज्ञानी, एस. डी (सम्पा.). 1964. *अग्निपुराण: एक अध्ययन*. चौखम्बा प्रकाशन. वाराणसी।

19. झा, व्रजमोहन (सम्पा.). 1968. *सुवृत्ततिलकम्*. चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस. वाराणसी।

20. झा, हीरानाथ. 2014. *संस्कृत छन्दों का विकासक्रम*. कला एवं धर्म शोध संस्थान. वाराणसी।

21. ठक्कुर, श्रीकनकलाल (सम्पा.) एवं मिश्र, ब्रह्माशङ्कर (सम्पा.). 2008. *श्रुतबोध:*. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।

22. तर्करत्न, पञ्चानन (सम्पा.). 1999. *अग्निपुराणम्*. नवभारत पब्लिशर्स. कलकत्ता।

23. तैलङ्ग, जगन्नाथशास्त्री (सम्पा.). 2013. *छन्दोमञ्जरी*. भारतीय विद्या प्रकाशन. वाराणसी।

24. त्रिपाठी, कृष्णमणि (सम्पा.). 2006. *कुमारसम्भवम्*. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

25. त्रिपाठी, कृष्णमणि (सम्पा.). 2014. *अभिज्ञानशाकुन्तलम्.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

26. त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (सम्पा.) एवं उपाध्याय, बलदेव (सम्पा.). 2012. *वृत्तरत्नाकरः.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

27. त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (सम्पा.). 2012. *छन्दोमञ्जरी.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

28. त्रिपाठी, रूपनारायण. 2015. *काव्यदीपिका.* हंसा प्रकाशन. जयपुर।

29. त्रिपाठी, श्यामसुन्दरलाल (सम्पा.). 2002. *वामनपुराण-हिन्दी टीकासहित.* खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन. बम्बई।

30. दाहाल, लोकमणि (सम्पा.), द्विवेदी, त्रिलोकीनाथ (सम्पा.) एवं द्विवेदी, शिवप्रसाद (सम्पा.). 2013. *साहित्यदर्पण.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

31. देव, मंगल (सम्पा.). 1931. *उपनिदानसूत्र.* चौखम्बा. वाराणसी।

32. द्विवेदी, ऊषा. 2013. *छन्दःशास्त्र का शास्त्रीय एवं विकासात्मक अध्ययन.* शोधप्रबन्ध. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय. झाँसी।

33. द्विवेदी, कपिलदेव (अनु.) एवं सिंह, श्यामलाल (अनु.). 2008. *पिङ्गल कृत छन्दः सूत्रम्.* विश्वविद्यालय प्रकाशन. वाराणसी।

34. द्विवेदी, कपिलदेव. 2010. *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति.* विश्वविद्यालय प्रकाशन. वाराणसी।

35. द्विवेदी, रेवाप्रसाद. 1986. *कालिदास ग्रन्थावली.* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय. वाराणसी।

36. द्विवेदी, शिवबालक (सम्पा.). 2012. *उत्तररामचरितम्*. हंसा प्रकाशन. जयपुर।

37. द्विवेदी, शिवबालक (सम्पा.). 2013. *मृच्छकटिक*. हंसा प्रकाशन. जयपुर।

38. धरन, एन. गंगा (सम्पा.). 1984. *अग्निपुराण*. मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली।

39. नागर, रविशंकर (सम्पा.). 1989. *नाट्यशास्त्र*. परिमल प्रकाशन. दिल्ली।

40. नाथ, केदार (सम्पा.). 1957. *छन्दःशास्त्र (केदारनाथ टीका सहित)*. निर्णयसागर प्रेस. बम्बई।

41. नाथ, धर्मेन्द्र (सम्पा.). 1924. *काव्यमीमांसा*. ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट. बडौदा।

42. पाठक, चित्तनारायण (सम्पा.). 2015. *छन्दःशास्त्रम् (मृतसञ्जीविन्याख्य)*. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।

43. पाण्डेय, जनार्दन शास्त्री (सम्पा.). 1998. *मनुस्मृति*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन. वाराणसी।

44. पाल, विजय (सम्पा.). 1984. *कात्यायनीय-ऋक्सर्वानुक्रमणी*. रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली. सोनीपत. हरियाणा।

45. बन्द्योपाध्याय, सुरेशचन्द्र (सम्पा.). 1985. *नाट्यशास्त्र-भरतमुनिप्रणीतम्*. नवपत्रप्रकाशन. कलकत्ता।

46. भटनागर, के. एन (सम्पा.). 1971. *निदानसूत्र*. चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान. दिल्ली।

47. भट्ट, उत्पल (सम्पा.). 1949. *वृत्तरत्नाकर*. जयदामन में प्रकाशित. बम्बई।

48. भट्ट, रामधन (सम्पा.). 1935. *छन्दोमञ्जरी*. कलकत्ता।

49. भट्ट, श्रीकृष्ण (सम्पा.). 1953. *वृत्तमुक्तावली.* राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठान. जोधपुर ।

50. भानु:, योगेन्द्र (सम्पा.), धामा, योगेन्द्र (सम्पा.) एवं बंसल, अंशु (सम्पा.). 2006. *संस्कृत-सोपानम् (प्रथमो भाग:).* माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. राजस्थान अजमेर ।

51. महतो, दामोदर (सम्पा.). 2015. *पाणिनीय शिक्षा.* मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली ।

52. मिश्र, जगदीशचन्द्र (सम्पा.). 2010. *सौन्दरनन्दं महाकाव्यम्.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

53. मिश्र, रामकिशोर. 2002. *संस्कृत छन्दों का उद्भव एवं विकास.* ज्ञान प्रकाशन. मेरठ ।

54. मिश्र, श्रीकिशोर (सम्पा.). 1990. *कात्यायनीय छन्द:सूत्र.* आचार्य गोपालचन्द्र मिश्र ग्रन्थमाला. वाराणसी ।

55. मिश्र, श्रीकिशोर. 2006. *छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार.* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय. वाराणसी ।

56. मीणा, टेकचन्द. 2003. *नाट्यशास्त्र में छन्दोयोजना एवं पिङ्गल के छन्द:सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन.* लघुशोध. संस्कृत-विभाग. दिल्ली विश्वविद्यालय. दिल्ली ।

57. मीमांसक, युधिष्ठिर. 1984. *संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास.* सोनीपत. हरियाणा ।

58. मीमांसक, युधिष्ठिर. 2009. *वैदिक-छन्दोमीमांसा.* रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली. सोनीपत. हरियाणा ।

59. मुसलगाँवकर, गजानन शास्त्री. 1992. *मीमांसा दर्शन का विवेचनात्मक इतिहास.* चौखम्भा विद्याभवन. वाराणसी ।

60. मैक्डानल, ए. ए (सम्पा.) एवं नाणावटी, राजेन्द्र (सम्पा.). 2001. *वेदार्थदीपिका*. भारतीय विद्याप्रकाशन. वाराणसी।

61. मोर, मनसुखराम (सम्पा.). 1952. *निरुक्तम् (दुर्गस्य व्याख्याया सहितम्)*. गुरुमण्डल ग्रन्थमाला. कलकत्ता।

62. वर्मा, वीरेन्द्र कुमार (सम्पा.). 1992. *ऋग्वेदप्रातिशाख्य: एक परिशीलन*. चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान. दिल्ली।

63. विद्याङ्कार, जयपाल (सम्पा.). 2008. *स्वप्नवासवदत्तम्*. मोतीलाल बनारसीदास. दिल्ली।

64. वेलणकर, हरि दामोदर (सम्पा.). 1949. *छन्दोऽनुशासन*. जयदामन हरितोष समिति. बम्बई।

65. शर्मा, अयोध्यानाथ (सम्पा.). 1969. *पिङ्गलच्छन्द:सूत्रम्*. चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

66. शर्मा, उमाशंकर (सम्पा.). 1991. *मीमांसादर्शनम्*. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

67. शर्मा, कुन्दनलाल (सम्पा.). 1983. *वेदाङ्ग*. विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान. होशियारपुर।

68. शर्मा, बटुकनाथ (सम्पा.). 1980. *नाट्यशास्त्र*. काशी संस्कृत ग्रन्थमाला-60. वाराणसी।

69. शर्मा, राजेन्द्र (सम्पा.). 1985. *अग्निपुराण-भूमिका एवं पाठसंशोधन*. नाग पब्लिशर्स. दिल्ली।

70. शास्त्री, छज्जूराम (सम्पा.). 1963. *निरुक्त पञ्चाध्यायी*. मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स. नई दिल्ली।

71. शास्त्री, दयाशंकर (सम्पा.). 2012. *मेघदूतम्.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी ।

72. शास्त्री, धरानन्द (सम्पा.). 2014. *वृत्तरत्नाकर.* मोतीलाल बनारसीदास. वाराणसी ।

73. शास्त्री, मंगलदेव (अनु.). 1978-1986. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* मोतीलाल बनारसीदास. वाराणसी ।

74. शास्त्री, मंगलदेव (सम्पा.). 1931. *ऋक्-प्रातिशाख्य-उव्वट भाष्यसहित.* प्रयाग ।

75. शास्त्री, मधूसूदन (सम्पा.). 1975. *नाट्यशास्त्र (अभिनवभारती सहित, द्वितीय भाग).* काशी विश्वविद्यालय. वाराणसी ।

76. शास्त्री, राकेश (सम्पा.). 2005. *मनुस्मृति.* विद्यानिधि प्रकाशन. दिल्ली ।

77. शास्त्री, वेद प्रकाश (सम्पा.). 2008. *अभिज्ञानशाकुन्तलम्.* चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी ।

78. शास्त्री, शालेग्राम (सम्पा.). 1977. *साहित्यदर्पण.* मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली ।

79. शास्त्री, शिवदत्तमिश्र. 1978. *छन्दःप्रकाश.* भारतीय विद्या प्रकाशन. वाराणसी ।

80. शास्त्री, हरगोविन्ददास (सम्पा.). 1998. *अमरकोश.* चौखम्बा संस्कृत सीरीज. वाराणसी ।

81. शाह, गोविन्दलाल. 2010. *पिंगलाचार्य के आसन्नपूर्वोत्तर- कालिक संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त लौकिक छन्द.* सूर्याऑफसेट अहमदाबाद ।

82. शिरोमणि, विश्वेश्वर सिद्धान्त (भाष्य.) एवं नगेन्द्र (सम्पा.). 1960. *अभिनवभारती.* हिन्दी विभाग. दिल्ली विश्वविद्यालय. दिल्ली ।

83. शिवकुमार, नारायण. 1964. *छन्दःशास्त्र की भूमिका.* जमशेदपुर ।

84. शुक्ल, बाबूलाल (सम्पा.). 1975. *नाट्यशास्त्र.* चौखम्बा. वाराणसी ।

85. सहदेव, मञ्जुला. 1997. *वाल्मीकि रामायण का छन्द विश्लेषण.* नाग प्रकाशक. दिल्ली ।

86. स्वरूप, लक्ष्मण (सम्पा.). 1939. *ऋग्वेदसंहिता (वेंकटमाधवभाष्य-सहित).* लाहौर ।

87. हर्षट (सम्पा.). 1949. *जयदेवच्छन्दः हर्षट विवृत्ति सहित.* बम्बई ।

88. कुमार, भूपेन्द्र एवं चन्द्र, सुभाष. 2015. वेदान्त ग्रन्थों के अर्थनिर्धारण हेतु नियम एवं उदाहरण संयुक्त विधि का प्रयोग करके संस्कृत सनाद्यन्त क्रियापदों की संगणकीय पहचान एवं विश्लेषण. विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय. नई दिल्ली में आयोजित *वाइसवें अन्ताराष्ट्रीय वेदान्त कॉंग्रेस में प्रस्तुत.* दिसम्बर 27-30. 2015.

89. कुमार, विवेक एवं चन्द्र, सुभाष. 2015. उदाहरण-नियम संयुक्त विधि से संस्कृत क्रियापदों का अभिज्ञान. विश्लेषण एवं रूपसिद्धि तंत्र का विकास. विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय. नई दिल्ली में आयोजित *वाइसवें अन्ताराष्ट्रीय वेदान्त कॉंग्रेस में प्रस्तुत.* दिसम्बर 27-30. 2015.

90. साक्षी एवं चन्द्र, सुभाष. 2015. नियम एवं उदाहरण मिश्रित विधि से वेदान्त ग्रन्थों के व्याकरणिक विश्लेषण के लिए तद्धितान्त पदों की संगणकीय पहचान एवं विश्लेषण. विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय. नई दिल्ली में आयोजित *वाइसवें अन्ताराष्ट्रीय वेदान्त कॉंग्रेस में प्रस्तुत.* दिसम्बर 27-30. 2015.

अंग्रेजी भाषा के ग्रन्थ

1. Agrawal, Muktanand. 2007. *Computational identification and analysis of Sanskrit verb-forms of bhvaadigan.* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

2. Alabbas et al. 2014. *BASRAH: an automatic system to identify the meter of Arabic claimed to help inexperienced users to determine the meter of Arabic verses and poems poetry.*

3. Baeza, Richardo. 2003. *Modern Information Retriva.* Pearson Education.

4. Bhadra, Manji. 2007. *Computational analysis of gender in Sanskrit noun phrases for Machine Translation.* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

5. Bhadra, Manji, Singh, Surjit Kumar, Kumar, Sachin, Chandra, Subhash, Agrawal, Muktanand, Chandrashekar, R, Mishra, Sudhir Kumar & Jha, Girish Nath. 2009. Sanskrit Analysis System (SAS). *Sanskrit Computational Linguistics Lecture Notes in Computer Science*. Springer Berlin Heidelberg. pp.116-133.

6. Bhowmik, Priti. 2009. *Evolving e-learning methods for Sanskrit elearning in the context of secondary sylabus of CBSE.* Thesis. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

7. Bill, Lubanovic. 2014. *Introducing Python.* Shroff Publishers & Distributers Private Limited. Mumbai.

8. Chandra, Subhash & Jha, Girish Nath. 2011. *Computer Processing of Sanskrit Nominal Inflections: Methods and Implementation.* Cambridge Scholars Publishing (CSP). Newcastle upon Tyne.

9. Chandra, Subhash. 2006. *Machine Recognition and Morphological Analysis of Subanta-padas*. Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

10. Chandra, Subhash. 2012. *Ontological Knowledgebase for Selected Verbs of Sanskrit and Bangla.* Thesis. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

11. Chandra, Subhash. 2012. Restructuring of Paninian Morphological Rules for Computer processing of Sanskrit Nominal Inflections. Proc. of *the Workshop on Indian Language Data: Resources and Evaluation*. Lütfi Kirdar Istanbul Exhibition and Congress Centre. Turkey.

12. Chandra, Subhash. 2015. Restructuring Meter Rules for Automatic Detection and Analysis of Meter (chhanda) in Classical Sanskrit Verses. presented in *16th World Sanskrit Conference*. Sanskrit Studies Centre. Silpakorn University. Bangkok. Thailand International Association of Sanskrit Studies (IASS). Bangkok. 28 June–2 July 2015.

13. Chandra, Subhash, Kumar, Bhupendra, Kumar, Vivek and Sakshi. 2015. Detection, Analysis and Word Formation Process of Sanskrit Morphology: A Hybrid Approach, presented in *Twenty Second International Congress of Vedanta (22Vedanta)*. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi During. Dec 27-30. 2015.

14. Chandrashekar, R. 2007. *Part-Of-Speech Tagging for Sanskrit,* Thesis Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

15. Das and Gambäck. 2014. *Poetic Machine: Computational Creativity for Automatic Poetry Generation in Bengali*. reports an initial study on computational poetry generation for Bengali.

16. Dawson, Michael. 2010. *Python Programming for the Absolute Beginne*. Delmar Cengage Learning.

17. DuBois, Paul. 2015. *MySQL.* Pearson Education.

18. Ghosh, Manomohan. 1931. The Chando-VedMga of pingala in *The Indian Historical Quarterly*. VII.

19. Jha, Girish Nath, Agrawal, Muktanand, Chandra, Subhash, Mishra, Sudhir Kumar, Mani, Diwakar, Mishra, Diwakar, Bhadra, Manji & Singh, Surjit Kumar. 2009. Inflectional Morphology Analyzer for Sanskrit. *Sanskrit*

Computational Linguistics Lecture Notes in Computer Science. Springer Berlin Heidelberg. pp.219-238.

20. Jha, Girish Nath, Bhowmik, Priti, Mishra, Sudhir Kumar, Chandrashekar, R, Chandra, Subhash, Mendiratta, Sachin & Agrawal, Muktanand. 2006. Towards a Computational analysis system for Sanskrit. In proc. *First National Symposium on Modeling and Shallow parsing of Indian Languages* at Indian Institute of Technology Bombay pp.25-34.

21. Joan, Maling. 1973. *The Theory of Classical Arabic Metrics*. Diss. Department of Foreign Literatures and Linguistics. Massachusetts Institute of Technology.

22. Jurafsky, Daniel. 2013. *Speech and Language Processing: An Introduction to Natural Language Processing*. Computational Linguistics and Speech Recognition. Pearson Education.

23. Knowlton, James O. 2004. *Python: Create-Modify-Reuse.* Wrox.

24. Kumar, Sachin. 2007. *Sandhi splitter and analyzer for Sanskrit (with special reference to aC Sandhi).* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

25. Kurt and Kara. 2012. *An algorithm for the detection and analysis of arud meter in Diwan poetry.* has been done. Which includes a small Diwan poetry database and an algorithm for determining the syllabic meter of poems in Turkish folk literature.

26. Mani, Diwakar. 2008. *Online indexing of aadiparva in Mahabharata.* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

27. Manu et al. 2013. *A rule-based system is also available for the identification of short-long (laghu-guru) patterns form input Malayalam strings.*

28. Mishra, Madhusudan. 1977. *Metres of Kalidas*. Tara prakashan. Delhi.

29. Mishra, Sudhir Kumar & Jha, Girish Nath. 2004. Sanskrit kaaraka analyzer for Machine Translation. In Proc. *SPLASH of iSTRANS*, Tata McGraw-Hill. New Delhi.

30. Mishra, Sudhir kumar. 2007. *Sanskrit Karaka Analyzer for Machine Translation.* Thesis. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

31. Moore, Richard. 1992. Poetic Meter in English: Roots and Possibilities. *Journal Kansas Quarterly*. 1992/1993. vol. 24/25 issue 4/1. pp.233.

32. Murali, N. Ramasree, R. J. and Acharyulu, K.V.R.K. 2014. Kridanta Analysis for Sanskrit. *International Journal on Natural Language Computing (IJNLC)* Vol. 3. No.3. June.

33. Murthy, 2003. *A study was developed a computer program for identification of Sanskrit vritt meters.*

34. Nixon, Robin. 2015. *Learning PHP, MySQL & JavaScript with j Query, CSS & HTML5.* Shroff Publishers & Distributers Private Limited - Mumbai.

35. Ostwald, James W. Halporn Martin and Rosenmeyer, Thomas G. 1994. *The Meters of Greek and Latin Poetry*. Hackett Publishing Company. Indianapolis Cambridge.

36. Paul, Williman-Grabowska & Stern. 1951. *Ancient India and Indian civilization*, London : Routledge & K. Paul.

37. Powell, Thomas. 2010. *HTML & CSS: The Complete Reference.* McGraw Hill Education.

38. Pritchett, Frances W. & Khalid. Kh. Ahmad. 1987. *URDU METER*. South Asian Studies. University of Wisconsin at Madison.

39. Raven, D. S. 1962. *Greek Metre: An Introduction*. London.

40. Schuh, Russell. 1996. Metrics of Arabic and Hausa Poetry. presented in *Annual Conference on African Linguistics (27African).* University of Florida. March 29-31.

41. Singh, Surjit Kumar. 2008. *Kridanata Recognition and processing for Sanskrit.* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

42. Sridhar et al. 2013. *A system for recognition of Kalippa class of Tamil poetry.* is available with overall accuracy of identification of Kalippa class of 80%.

43. Tiwari, Archana. 2011. *Automatic Indexing of Carakasamhita.* Diss. Special Center for Sanskrit Studies. Jawaharlal Nehru University. New Delhi.

44. Vaswani, Vikram. 2004. *MySQL (TM): The Complete Reference.* McGraw Hill Education (India) Private Limited.

Internet source:-

1. http://cdac.in (obtained on September 1, 2015)

2. http://sanskrit.du.ac.in/cl.html (obtained on September 2, 2015)

3. http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/index.jsp (obtained on September 3, 2015)

4. http://sanskrit.jnu.ac.in/sandhi/gen.jsp (obtained on September 1, 2015)

5. http://sanskrit.jnu.ac.in/subanta/generate.jsp (obtained on September 5, 2015)

6. http://sanskrit.jnu.ac.in/tinanta/tinanta.jsp (obtained on September 8, 2015)

7. http://sanskrit.uohyd.ernet.in/ (obtained on September 4, 2015)

8. http://sanskrit.sai.uni-heidelberg.de/Chanda/HTML (obtained on July 1, 2015)

9. https://en.wikipedia.org/wiki/wikipedia (obtained on January 15, 2013)

10. http://spyce.sourceforge.net/ (obtained on March 15, 2016)

11. https://www.mysql.com/ (obtained on July 11, 2015)

12. http://unicode.org/ (obtained on April 9, 2012)

सहायक ग्रन्थ (Bibiliography):

1. उपाध्याय, रामजी (सम्पा.). 1986. *भासनाटकचक्रम्.* भारतीय संस्कृत संस्थान. वाराणसी।

2. ऋषि, उमाशंकर शर्मा (सम्पा.). 2008. *मीमांसादर्शनम्.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

3. काम्बोज, जियालाल (सम्पा.). 2005. *सौन्दरनन्दमहाकाव्यम्.* विद्यानिधि प्रकाशन. दिल्ली।

4. खिस्ते, नारायणशास्त्री. 1972. *छन्दःकौमुदी.* चौखम्भा संस्कृत संस्थान. वाराणसी।

5. गुप्ता, सावित्री. 2014. *छन्दोऽलङ्कारसौरभम्.* विद्यानिधि प्रकाशन. दिल्ली।

6. गोयल, प्रीतिप्रभा. 1998. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* राजस्थानी ग्रन्थागार. जोधपुर।

7. चटर्जी, अशोक (सम्पा.). 1987. *पिङ्गलछन्दस्सूत्र.* कलकत्ता विश्वविद्यालय. कलकत्ता।

8. चौबे, व्रजबिहारी. 1972. *वैदिक वाङ्मयः एक अनुशीलन.* कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन. होशियारपुर।

9. दीक्षित, मथुराप्रसाद. 1962. *काव्यकला.* जयभारत प्रेस. वाराणसी।

10. द्विवेदी, त्रिलोकीनाथ. 2007. *छन्दोऽलङ्काराः.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

11. भट्टाचार्य, रामशंकर (सम्पा.). 1963. *गरुडपुराण.* बम्बई।

12. मणि, रविकान्त (सम्पा.). 2008. *रघुवंशमहाकाव्यम्.* हंसा प्रकाशन. जयपुर।

13. मिश्र, श्रीकिशोर. 1990. *वैदिकच्छन्दःपर्यालोचनम्.* आचार्य गोपालचन्द्रमिश्र ग्रन्थमाला. वाराणसी।

14. लाल, कृष्ण. 2001. *वैदिकसंग्रहः.* ईस्टर्न बुक लिंकर्स. दिल्ली।

15. वाद, रामपाणि (सम्पा.). 1937. *वृत्तवार्तिक.* अनन्तशयन संस्कृत ग्रन्थावली. त्रिवेन्द्रम्।

16. शर्मा, शुकदेव (सम्पा.). 2015. *नैषधीयचरितम् (प्रदीपिका टीका सहित).* भारतीय विद्या प्रकाशन. वाराणसी।

17. शर्मा, श्रीराम (सम्पा.). 1969. *अग्निपुराण.* संस्कृत संस्थान. ख्वाजा कुतुब. बरेली।

18. शास्त्री, द्विजेन्द्र. 1956. *संस्कृत साहित्य विमर्शः.* भारती प्रतिष्ठानम्. मयराष्ट्रनगरम् उत्तरप्रदेश।

19. शास्त्री, शिवप्रसाद भारद्वाज. 1993. *संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य-बिम्ब-विवेचन.* राधा पब्लिकेशन्स. नई दिल्ली।

20. शास्त्री, सुरेन्द्रदेव (सम्पा.). 2012. *नैषधचरितमहाकाव्यम्.* चौखम्भा पब्लिशर्स. वाराणसी।

21. शेखर, रत्न. 1962. *छन्दःकोश.* राजपुरातन ग्रन्थमाला. जोधपुर।

22. शेवडे, वसन्त त्र्यम्बक (सम्पा.) एवं त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (व्याख्या.). 1989. *वृत्तमञ्जरी (सुषमा टीका).* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।

23. सहाय, राजवंश. 1996. *संस्कृत साहित्य कोश.* चौखाम्बा विद्याभवन. वाराणसी।

अंग्रेजी पुस्तके:

1. Golston, Chris and Riad, Tomas. 1995. *The phonology of classical Arabic meter.* California State University. Fresno.

2. Jha, Girish Nath and Mishra, Mukesh Kumar. 2012. *Computational Semantics for Sanskrit: The Case of Amarakosha Homonyms.* Lambert Academic Publisher. Germany.

3. Jha, Girish Nath, Singh, Bal Ram, Singh, Umesh Kumar and Mishra, Diwakar. 2011. *Science and Technology in Ancient Indian Texts.* DK Printworld. Delhi.

4. Patel, Gautam. 2012. *Kumarsambhavam of Kalidasa.* New Bhartiya book Corporation. Delhi ।

5. Sarup, Lakshman. 1967. *The Nighantu and the Nirukta*. Motilal Banarsidass. Patna.

कोशग्रन्थ:-

1. आप्टे, वामन शिवराम. 1966. *संस्कृत-हिन्दी कोश.* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स. दिल्ली।

2. Williams, Monier. *Williams Monier Online Dictionary (2008 revision):* University of Cologne: http://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/monier/ (Obtained on February 20, 2016).

प्रथम परिशिष्ट
पिङ्गलछन्दशास्त्र में उल्लिखित वैदिक छन्दों की सूची

क्र.सं.	प्रथम सप्तक के छन्द छन्द का नाम	छन्दसूत्र सङ्ख्या
	गायत्री के भेद	
1	गायत्री	छ.सू. 2/2
2	आसुरी गायत्री	छ.सू. 2/4
3	प्राजापत्या गायत्री	छ.सू. 2/5
4	याजुषी गायत्री	छ.सू. 2/6
5	साम्नी गायत्री	छ.सू. 2/7
6	आर्ची गायत्री	छ.सू. 2/8
7	ब्राह्मी गायत्री	छ.सू. 2/15
8	आर्षी गायत्री	छ.सू. 2/16
9	दैव गायत्री	छ.सू. 2/12
10	पादनिचृत गायत्री	छ.सू. 3/10
11	अतिपादनिचृत् गायत्री	छ.सू. 3/11
12	नागी गायत्री	छ.सू. 3/12
13	वाराही गायत्री	छ.सू. 3/13
14	वर्धमान गायत्री	छ.सू. 3/14
15	प्रतिष्ठा गायत्री	छ.सू. 3/15
16	द्विपाद् विराट् गायत्री	छ.सू. 3/16
17	चतुष्पाद् गायत्री	छ.सू. 3/17
18	त्रिपाद् विराट् गायत्री	छ.सू. 3/17
19	पिपीलिकमध्या गायत्री	छ.सू. 3/57
20	यवमध्या गायत्री	छ.सू. 3/58
	उष्णिक् के भेद	
21	दैवी उष्णिक्	छ.सू. 2/12
22	आसुरी उष्णिक्	छ.सू. 2/13
23	प्राजापत्या उष्णिक्	छ.सू. 2/5
24	याजुषी उष्णिक्	छ.सू. 2/12

25	साम्नी उष्णिक्	छ.सू. 2/9
26	आर्ची उष्णिक्	छ.सू. 2/10
27	ब्राह्मी उष्णिक्	छ.सू. 2/15
28	आर्षी उष्णिक्	छ.सू. 2/16
29	उष्णिक्	छ.सू. 3/18
30	ककुब् उष्णिक्	छ.सू. 3/19
31	पुर उष्णिक्	छ.सू. 3/20
32	परोष्णिक्	छ.सू. 3/21
33	चतुष्पाद् उष्णिक्	छ.सू. 3/22
34	शङ्कुमती उष्णिक्	छ.सू. 3/55
	अनुष्टुप् के भेद	
35	दैवी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/12
36	आसुरी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/13
37	प्राजापत्या अनुष्टुप्	छ.सू. 2/5
38	याजुषी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/12
39	साम्नी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/9
40	आर्ची अनुष्टुप्	छ.सू. 2/10
41	ब्राह्मी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/15
42	आर्षी अनुष्टुप्	छ.सू. 2/16
43	त्रिपाद् अनुष्टुप्	छ.सू. 3/24
44	त्रिपाद् अनुष्टुप्	छ.सू. 3/25
45	त्रिपाद् अनुष्टुप्	छ.सू. 3/25
46	चतुष्पाद् अनुष्टुप्	छ.सू. 3/25
	बृहती के भेद	
47	दैवी बृहती	छ.सू. 2/12
48	आसुरी बृहती	छ.सू. 2/13
49	प्राजापत्या बृहती	छ.सू. 2/5
50	याजुषी बृहती	छ.सू. 2/12
51	साम्नी बृहती	छ.सू. 2/9
52	आर्ची बृहती	छ.सू. 2/10

53	ब्राह्मी बृहती	छ.सू. 2/15
54	आर्षी बृहती	छ.सू. 2/16
55	बृहती	छ.सू. 3/26
56	पुरस्ताद् बृहती	छ.सू. 3/32
57	उरोबृहती	छ.सू. 3/30
58	स्कन्धोग्रीवी	छ.सू. 3/29
59	न्यङ्कुसारिणी	छ.सू. 3/28
60	पथ्याबृहती	छ.सू. 3/27
61	उपरिष्टाद् बृहती	छ.सू. 3/31
62	महाबृहती	छ.सू. 3/35
63	सतोबृहती	छ.सू. 3/36
	पंक्ति के भेद	
64	दैवी पंक्ति	छ.सू. 2/12
65	आसुरी पंक्ति	छ.सू. 2/13
66	प्राजापत्या पंक्ति	छ.सू. 2/5
67	याजुषी पंक्ति	छ.सू. 2/12
68	साम्नी पंक्ति	छ.सू. 2/9
69	आर्ची पंक्ति	छ.सू. 2/10
70	ब्राह्मी पंक्ति	छ.सू. 2/15
71	आर्षी पंक्ति	छ.सू. 2/16
72	सत:पंक्ति	छ.सू. 3/38
73	आस्तार पंक्ति	छ.सू. 3/41
74	प्रस्तार पंक्ति	छ.सू. 3/40
75	संस्तार पंक्ति	छ.सू. 3/43
76	विष्टार पंक्ति	छ.सू. 3/42
77	पथ्या पंक्ति	छ.सू. 3/48
78	पद पंक्ति	छ.सू. 3/46
79	पद पंक्ति	छ.सू. 3/47
80	अक्षर पंक्ति	छ.सू. 3/44
81	अल्पश: अक्षर पंक्ति	छ.सू. 3/45

82	जगती पंक्ति	छ.सू. 3/49
	त्रिष्टुप् के भेद	
83	दैवी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/12
84	आसुरी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/13
85	प्राजापत्या त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/5
86	याजुषी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/12
87	साम्नी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/9
88	आर्ची त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/10
89	ब्राह्मी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/15
90	आर्षी त्रिष्टुप्	छ.सू. 2/16
91	पुरस्ताज्ज्योतित्रिष्टुप्	छ.सू. 3/52
92	मध्येज्योतित्रिष्टुप्	छ.सू. 3/53
93	उपरिष्टाज्ज्योतित्रिष्टुप्	छ.सू. 3/54
	जगती के भेद	
94	दैवी जगती	छ.सू. 2/12
95	आसुरी जगती	छ.सू. 2/13
96	प्राजापत्या जगती	छ.सू. 2/5
97	याजुषी जगती	छ.सू. 2/12
98	साम्नी जगती	छ.सू. 2/9
99	आर्ची जगती	छ.सू. 2/10
100	ब्राह्मी जगती	छ.सू. 2/15
101	आर्षी जगती	छ.सू. 2/16
102	पुरस्ताज्ज्योतिजगती	छ.सू. 3/52
103	मध्येज्योतिजगती	छ.सू. 3/53
104	उपरिष्टाज्ज्योतिजगती	छ.सू. 3/54
105	षट्पदाजगती	छ.सू. 3/51
	द्वितीय सप्तक (अतिछन्द्) के छन्द	**छन्दसूत्र सङ्ख्या**
106	अतिजगती	छ.सू. 4/7
107	शक्वरी	छ.सू. 4/5
108	अतिशक्वरी	छ.सू. 4/7

109	अष्टि	छ.सू. 4/5
110	अत्यष्टि	छ.सू. 4/7
111	धृति	छ.सू. 4/5
112	अतिधृति	छ.सू. 4/7
	तृतीय सप्तक के छन्द	**छन्दसूत्र सङ्ख्या**
113	कृति	छ.सू. 4/4
114	प्रकृति	छ.सू. 4/3
115	आकृति	छ.सू. 4/3
116	विकृति	छ.सू. 4/3
117	संस्कृति	छ.सू. 4/3
118	अभिकृति	छ.सू. 4/3
119	उत्कृति	छ.सू. 4/1

द्वितीय परिशिष्ट
पिङ्गलछन्दशास्त्र में उल्लिखित लौकिक छन्दों की सूची

क्र.सं.	छन्द	छन्दसूत्र सङ्ख्या
1	उक्ता श्री	छ.सूत्र. 1/1
2	अत्युक्ता धी	छ.सूत्र. 1/1
3	मध्यमा स्त्री	छ.सूत्र. 1/1
4	प्रतिष्ठा सुमति	छ.सूत्र. 3/15
5	सुप्रतिष्ठा पंक्ति	छ.सूत्र. 3/37
6	तनुमध्या	छ.सूत्र. 6/2
7	कुमारललिता	छ.सूत्र. 6/3
8	माणवक	छ.सूत्र. 6/4
9	चित्रपदा	छ.सूत्र. 6/5
10	विद्युन्माला	छ.सूत्र. 6/6
11	हंसरुत	छ.सूत्र. 6/7
12	समानी	छ.सूत्र. 5/6
13	भुजुगशिशुसृता	छ.सूत्र. 6/8
14	हलमुखी	छ.सूत्र. 6/9
15	शुद्धविराट्	छ.सूत्र. 6/10
16	पणव	छ.सूत्र. 6/11
17	रुक्मवती	छ.सूत्र. 6/12
18	मयूरसारिणी	छ.सूत्र. 6/13
19	मत्ता	छ.सूत्र. 6/14
20	उपस्थिता	छ.सूत्र. 6/15
21	इन्द्रवज्रा	छ.सूत्र. 6/16
22	उपेन्द्रवज्रा	छ.सूत्र. 6/17
23	दोधक	छ.सूत्र. 6/19
24	शालिनी	छ.सूत्र. 6/20
25	वातोर्मी	छ.सूत्र. 6/21
26	भ्रमरविलसित	छ.सूत्र. 6/22
27	रथोद्धता	छ.सूत्र. 6/23

28	स्वागता	छ.सूत्र. 6/24
29	वृन्ता	छ.सूत्र. 6/25
30	श्येनी	छ.सूत्र. 6/26
31	विलासिनी	छ.सूत्र. 6/27
32	कुड्मलदन्ती	छ.सूत्र. 8/2
33	वंशस्थ	छ.सूत्र. 6/29
34	इन्द्रवंशा	छ.सूत्र. 6/30
35	द्रुतविलम्बित	छ.सूत्र. 6/31
36	तोटक	छ.सूत्र. 6/32
37	पुट	छ.सूत्र. 6/33
38	जलोद्धतगति	छ.सूत्र. 6/34
39	तत	छ.सूत्र. 6/35
40	कुसुमविचित्रा	छ.सूत्र. 6/36
41	चञ्चलाक्षिका	छ.सूत्र. 6/37
42	भुजङ्गप्रयात	छ.सूत्र. 6/38
43	स्रग्विणी	छ.सूत्र. 6/39
44	प्रमिताक्षरा	छ.सूत्र. 6/40
45	कान्तोत्पीडा	छ.सूत्र. 6/41
46	वैश्वदेवी	छ.सूत्र. 6/42
47	वाहिनी	छ.सूत्र. 6/43
48	नवमालिनी	छ.सूत्र. 6/44
49	वरतनु	छ.सूत्र. 8/3
50	गौरी	छ.सूत्र. 8/5
51	ललना	छ.सूत्र. 7/1+
52	प्रहर्षिणी	छ.सूत्र. 7/1
53	रुचिरा	छ.सूत्र. 7/2
54	मत्तमयूर	छ.सूत्र. 7/3
55	गौरी	छ.सूत्र. 7/4
56	कनकप्रभा	छ.सूत्र. 8/7
57	कुटिलगति	छ.सूत्र. 8/8

58	असम्बाधा	छ.सूत्र. 7/5
59	अपराजिता	छ.सूत्र. 7/6
60	प्रहरणकलिता	छ.सूत्र. 7/7
61	वसन्ततिलका	छ.सूत्र. 7/8
62	वरसुन्दरी	छ.सूत्र. 8/9
63	कुटिला	छ.सूत्र. 8/10
64	माला	छ.सूत्र. 6/13+
65	मणिगुणनिकर	छ.सूत्र. 7/13
66	मालिनी	छ.सूत्र. 7/14
67	गीत्यार्या	छ.सूत्र. 4/48
68	ऋषभगजविलसित	छ.सूत्र. 7/15
69	शैलशिखा	छ.सूत्र. 8/11
70	वरयुवति	छ.सूत्र. 8/12
71	हरिणी	छ.सूत्र. 7/16
72	पृथ्वी	छ.सूत्र. 7/17
73	वंशपत्रपतित	छ.सूत्र. 7/18
74	मन्दाक्रान्ता	छ.सूत्र. 7/19
75	शिखरिणी	छ.सूत्र. 7/20
76	अतिशायिनी	छ.सूत्र. 8/13
77	अवितथ	छ.सूत्र. 8/14
78	कोकिलक	छ.सूत्र. 8/15
79	कुसुमितवेल्लिता	छ.सूत्र. 7/21
80	विबुधप्रिया	छ.सूत्र. 8/16
81	नाराचक	छ.सूत्र. 8/17
82	विस्मिता	छ.सूत्र. 8/18
83	शार्दूलविक्रीडित	छ.सूत्र. 7/22
84	सुवदना	छ.सूत्र. 7/23
85	वृत्त	छ.सूत्र. 7/24
86	स्रग्धरा	छ.सूत्र. 7/25
87	शशिवदना	छ.सूत्र. 8/19

88	भद्रक	छ.सूत्र. 7/26
89	अश्वललित	छ.सूत्र. 7/27
90	मत्ताक्रीडा	छ.सूत्र. 7/28
91	तन्वी	छ.सूत्र. 7/29
92	कौञ्चपदा	छ.सूत्र. 7/30
93	भुजङ्गविजृम्भित	छ.सूत्र. 7/31
94	अपवाहक दण्डक	छ.सूत्र. 7/32,33
95	चण्डवृष्टिप्रपात	छ.सूत्र. 7/34
96	प्रचित	छ.सूत्र. 7/36
97	उपचित्रक	छ.सू. 5/32
98	द्रुतमध्या	छ.सू. 5/33
99	वेगवती	छ.सू. 5/34
100	भद्रविराट्	छ.सू. 5/35
101	केतुमती	छ.सू. 5/36
102	आख्यानकी	छ.सू. 5/37
103	विपरीताख्यानकी	छ.सू. 5/38
104	हरिणप्लुता	छ.सू. 5/39
105	अपरवक्त्र	छ.सू. 5/40
106	पुष्पिताग्रा	छ.सू. 5/41
107	यवमती	छ.सू. 5/42
108	उपजाति	छ.सू. 6/33 +
109	वक्त्रानुष्टुप्	छ.सू. 5/13
110	पथ्यावक्त्र	छ.सू. 5/14
111	विपरीतपथ्या	छ.सू. 5/15
112	चपलावक्त्र	छ.सू. 5/16
113	भ-विपुला	छ.सू. 5/19
114	र-विपुला	छ.सू. 5/19
115	न-विपुला	छ.सू. 5/19
116	त-विपुला	छ.सू. 5/19
117	पदचतुरुर्ध्व	छ.सू. 5/20

118	आपीड	छ.सू. 5/21
119	प्रत्यापीड	छ.सू. 5/22
120	प्रत्यापीड	छ.सू. 5/23
121	मञ्जरी	छ.सू. 5/24
122	लवली	छ.सू. 5/24
123	अमृतधारा	छ.सू. 5/24
124	उद्भूता	छ.सू. 5/25
125	सौरभक	छ.सू. 5/26
126	ललित	छ.सू. 5/27
127	उपस्थितप्रचुपित	छ.सू. 5/28
128	वर्धमान	छ.सू. 5/29
129	शुद्ध विराडार्षभ	छ.सू. 5/30
130	उपजाति	छ.सू.6/18
131	गाथा	छ.सू. 8/1
132	आर्या	छ.सू. 4/14
133	पथ्या आर्या	छ.सू. 4/22
134	विपुला आर्या	छ.सू. 4/23
135	चपला आर्या	छ.सू. 4/24
136	मुखचला आर्या	छ.सू. 4/25
137	जघनचपला आर्या	छ.सू. 4/26
138	महाचपला आर्या	छ.सू. 4/27
139	आर्यागीति	छ.सू. 4/28
140	उपगीति	छ.सू. 4/29
141	उद्गीति	छ.सू. 4/30
142	आर्या गीति	छ.सू. 4/31
143	गीत्यार्या	छ.सू. 4/48
144	ज्योतिःशिखा	छ.सू. 4/50
145	सौम्यशिखा	छ.सू. 4/51
146	चूलिका	छ.सू. 4/52
147.	वैतालीय	छ.सू. 4/32

148	औपच्छन्दसक	छ.सू. 4/33
149	आपातलिका	छ.सू. 4/34
150	प्राच्यवृत्ति	छ.सू. 4/37
151	उदीच्यवृत्ति	छ.सू. 4/38
152	प्रवृत्तक	छ.सू. 4/39
153	चारुहासिनी	छ.सू. 4/40
154	अपरान्तिका	छ.सू. 4/41
155	मात्रासमक	छ.सू. 4/42
156	वानवासिका	छ.सू. 4/43
157	विश्लोक	छ.सू. 4/44
158	चित्रा	छ.सू. 4/45
159	उपचित्रा	छ.सू. 4/46
160	पादाकुलक	छ.सू. 4/47
161	शिखा	छ.सू. 5/43
162	खञ्जा	छ.सू. 5/44

तृतीय परिशिष्ट

चुने हुए ग्रन्थों की सूची एवं इनमें प्रयुक्त कुल छन्दों की संख्या एवं उनके नाम

क्र. सं.	चुने हुए गन्थों की सूची	प्रयुक्त हुए कुल छन्दों की संख्या एवं उनके नाम	
1.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	1.	अनुष्टुप्
		2.	अपरवक्त्र
		3.	आर्या
		4.	इन्द्रवज्रा
		5.	गीति
		6.	उपजाति
		7.	मालभारिणी
		8.	त्रिष्टुभ्
		9.	द्रुतविलम्बित
		10.	पुष्पिताग्रा
		11.	प्रहर्षिणी
		12.	मन्दाक्रान्ता
		13.	मालिनी
		14.	रथोद्धता
		15.	रुचिरा
		16.	वंशस्थ
		17.	वसन्ततिलका
		18.	वैतालीय
		19.	शार्दूलविक्रीडित
		20.	शालिनी
		21.	शिखरिणी
		22.	स्रग्धरा
		23.	हरिणी
		1.	अनुष्टुप्
		2.	आर्या
		3.	इन्द्रवज्रा

2.	मुद्राराक्षसम्	4.	उपजाति
		5.	पुष्पिताग्रा
		6.	पृथ्वी
		7.	प्रहर्षिणी
		8.	मन्दाक्रान्ता
		9.	मालभारिणी
		10.	मालिनी
		11.	रुचिरा
		12.	वंशस्थ
		13.	वसन्ततिलका
		14.	शार्दूलविक्रीडित
		15.	शिखरिणी
		16.	सुवदना
		17.	हरिणी
		18.	स्रग्धरा
3.	स्वप्नवासवदत्तम्	1.	अनुष्टुप्
		2.	आर्या
		3.	उपजाति
		4.	उपेन्द्रवज्रा
		5.	पुष्पिताग्रा
		6.	वसन्ततिलका
		7.	वैश्वदेवी
		8.	शार्दूलविक्रीडित
		9.	शालिनी
		10.	शिखरिणी
		11.	हरिणी
		1.	अनुष्टुप्
		2.	उपजाति
		3.	तोटक
		4.	द्रुतविलम्बित

4.	रघुवंशम्	5.	पुष्पिताग्रा
		6.	मञ्जुभाषिणी
		7.	मालिनी
		8.	रथोद्धता
		9.	वंशस्थ
		10.	वसन्ततिलका
		11.	वियोगिनी
		12.	शालिनी
		13.	हरिणी
		14.	रुचिरा
		15.	पृथ्वी
5.	कुमारसम्भवम्	1.	अनुष्टुप्
		2.	उपजाति
		3.	द्रुतविलम्बित
		4.	पुष्पिताग्रा
		5.	मालभारिणी
		6.	मालिनी
		7.	रथोद्धता
		8.	वंशस्थ
		9.	वसन्ततिलका
		10.	वियोगिनी
		11.	शार्दूलविक्रीडित
		12.	हरिणी
		13.	रुचिरा
		1.	वंशस्थ
		2.	पुष्पिताग्रा
		3.	मालिनी
		4.	मालभारिणी
		5.	वसन्ततिलका
		6.	उपगीति

6.	किरातार्जुनीयम्	7.	द्रुतविलम्बित
		8.	प्रमिताक्षरा
		9.	रथोद्धता
		10.	तोटक
		11.	दोधक
		12.	प्रहर्षिणी
		13.	वैतालीय
		14.	उद्गता
		15	रुचिरा
		16.	हरिणी
		17.	वियोगिनी
		18.	पृथ्वी
		19.	इन्द्रवज्रा
7.	नीतिशतकम्	1.	अनुष्टुप्
		2.	वसन्ततिलका
		3.	आर्या
		4.	पृथ्वी
		5.	शार्दूलविक्रीडित
		6.	उपजाति
		7.	शिखरिणी
		8.	मालिनी
		9.	हरिणी
		10.	शालिनी
		11.	द्रुतविलम्बित
		12.	मन्दाक्रान्ता
		13.	स्रग्धरा
		14.	वंशस्थ
		15.	उपेन्द्रवज्रा
		1.	वैतालीय
		2.	अनुष्टुप्

8.	सौन्दरनन्दम्	3.	उपजाति
		4.	उद्गता
		5.	प्रहर्षिणी
		6.	मालिनी
		7.	रुचिरा
		8.	वंशस्थ
		9.	वसन्ततिलका
		10.	वियोगिनी
		11.	शार्दूलविक्रीडित
		12.	शालिनी
		13.	शिखरिणी
		14.	सुवदना
		15.	स्रग्धरा
		16.	अपरवक्त्र
		17.	मालभारिणी
		18.	पुष्पिताग्रा
9.	नैषधचरितम्	1.	उपजाति
		2.	वंशस्थ
		3.	वसन्ततिलका
		4.	द्रुतविलम्बित
		5.	रथोद्धता
		6.	वैतालीय
		7.	हरिणी
		8.	तोटक
		9.	दोधक
		10.	पृथ्वी
		11.	मन्दाक्रान्ता
		12.	पुष्पिताग्रा
		13.	मालिनी
		14.	शिखरिणी

		15.	स्रग्धरा
		16.	उपेन्द्रवज्रा
		17.	इन्द्रवज्रा
		18.	सुवदना
10.	उत्तररामचरितम्	1.	आर्या
		2.	अनुष्टुप्
		3.	इन्द्रवज्रा
		4.	उपजाति
		5.	उपेन्द्रवज्रा
		6.	द्रुतविलम्बित
		7.	पृथ्वी
		8.	प्रहर्षिणी
		9.	मञ्जुभाषिणी
		10.	मन्दाक्रान्ता
		11.	मालिनी
		12.	रथोद्धता
		13.	वंशस्थ
		14.	वसन्ततिलका
		15.	शार्दूलविक्रीडित
		16.	शालिनी
		17.	शिखरिणी
		18.	सुवदना
		19.	हरिणी
		20.	पथ्यावक्त्र
		21.	पुष्पिताग्रा
		22.	मालभारिणी
11.	मेघदूतम्	1.	मन्दाक्रान्ता
12.	श्रीमद्भगवदगीता	1.	अनुष्टुप्
		1.	आर्या
		2.	उपगीति

13.	मृच्छकटिकम्	3.	गीति
		4.	मात्रासमक
		5.	विपुला
		6.	वैतालीय
		7.	अनुष्टुप्
		8.	इन्द्रवज्रा
		9.	उपजाति
		10.	उपेन्द्रवज्रा
		11.	प्रमिताक्षरा
		12.	प्रहर्षिणी
		13.	मालिनी
		14.	रुचिरा
		15.	वंशस्थ
		16.	वसन्ततिलका
		17.	विद्युन्माला
		18.	वैश्वदेवी
		19.	शार्दूलविक्रीडित
		20.	शालिनी
		21.	शिखरिणी
		22.	सुमधुरा
		23.	स्रग्धरा
		24.	हरिणी
		25.	पथ्यावक्त्र
		26.	पुष्पिताग्रा
		27.	मालभारिणी
		28.	गाथा

चतुर्थ परिशिष्ट
संस्कृत छन्द सूचना सिस्टम का वेब पेज

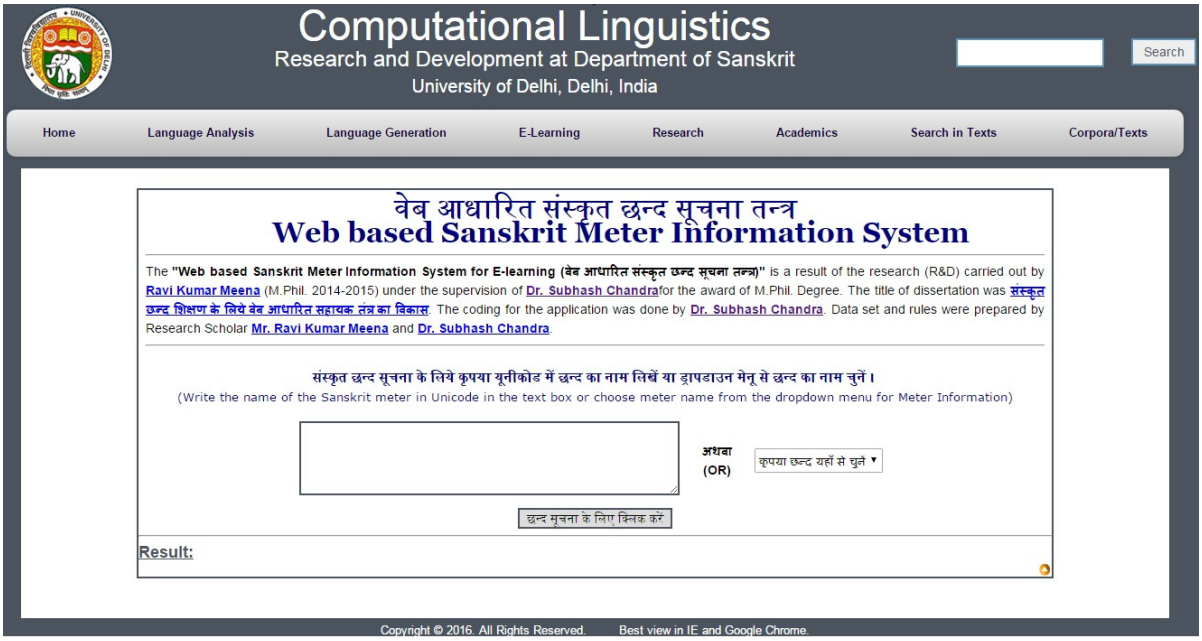

पञ्चम परिशिष्ट
संस्कृत छन्द सूचना सिस्टम का यूज़र इन्टरफेस

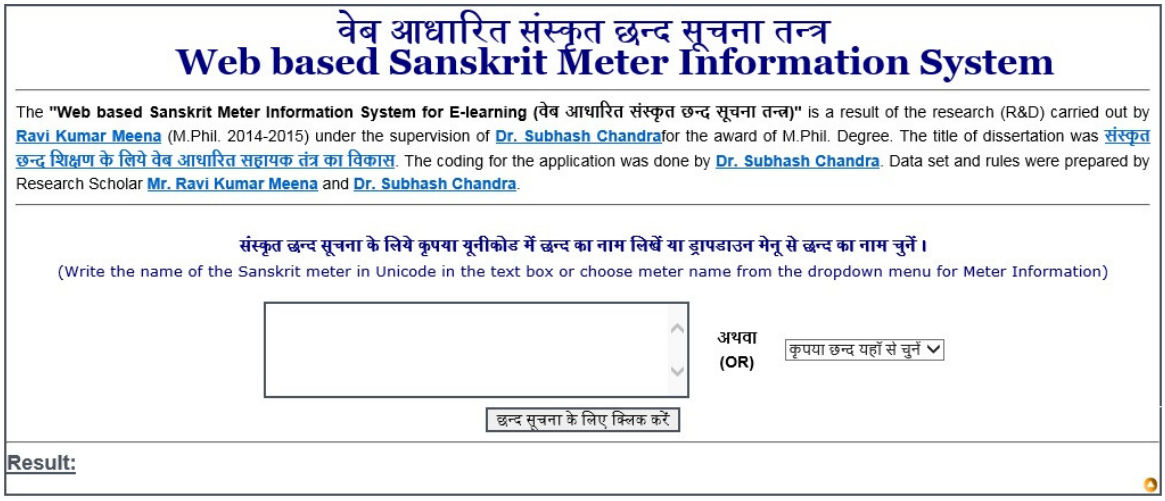

षष्ठ परिशिष्ट
छन्द सूचना तंत्र का फ्लोचार्ट

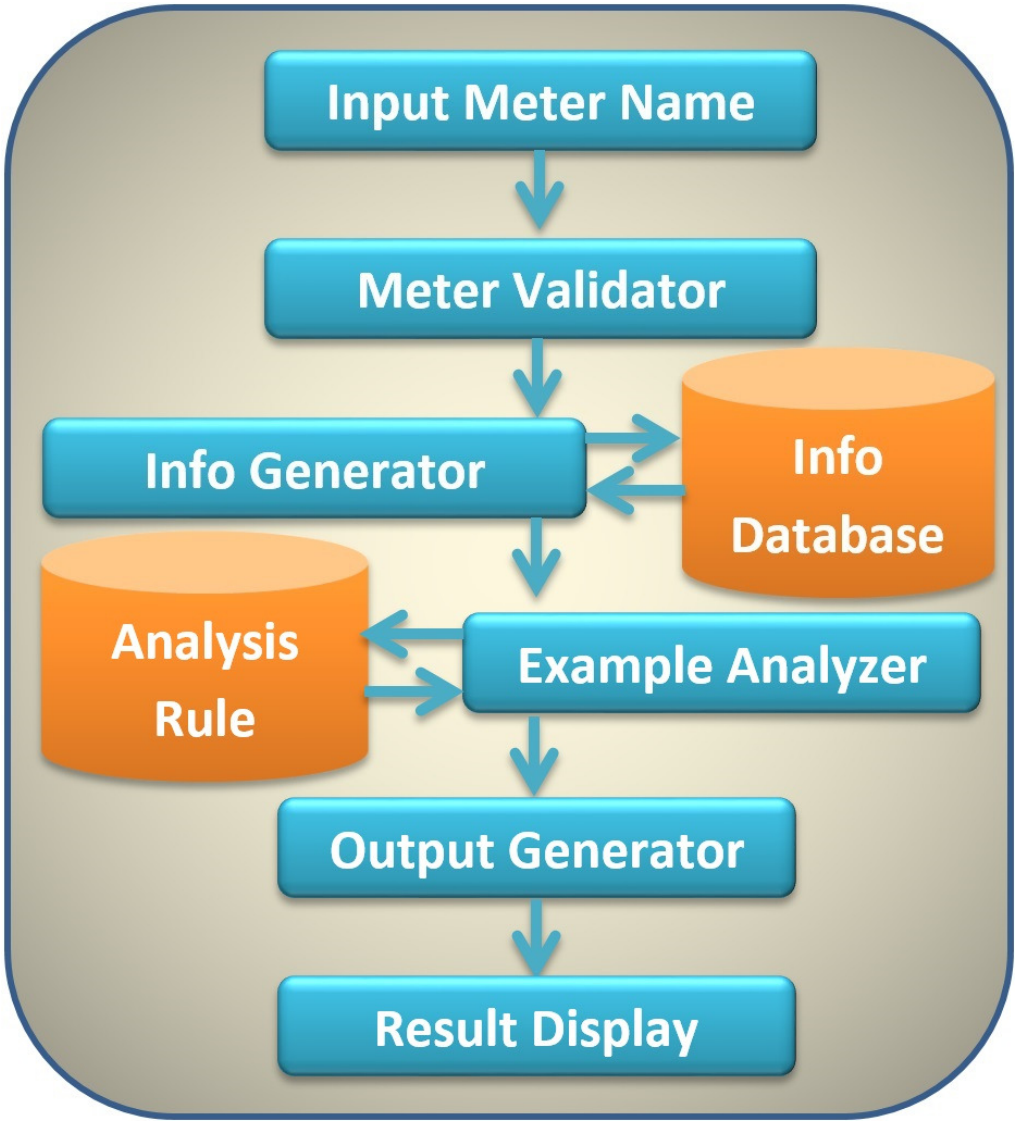

प्रकाशन सूची
प्रथम प्रकाशन

संस्कृत छन्द शिक्षण हेतु छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास

संस्कृत छन्द शिक्षण हेतु छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित सहायक तंत्र का विकास

रवि कुमार मीना
शोध छात्र
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ईमेल: ravi.kavi92@gmail.com

सुभाष चन्द्र
सहायक आचार्य
संगणकीय भाषाविज्ञान, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ईमेल: subhash.jnu@gmail.com

संक्षेप (Abstract):

संस्कृत साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। वेद के छः अंगों में से छन्दशास्त्र एक है जिसे वेदों का पाद कहा गया है। छन्द संस्कृत वाङ्मय में सामान्यतया लय को बताने के लिये प्रयोग किया गया है। छन्दों की रचना और गुण-अवगुण के अध्ययन को छन्दशास्त्र कहते हैं। छन्दों पर आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित 'छन्दःशास्त्र' सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है अतः इस शास्त्र को पिङ्गलशास्त्र भी कहा जाता है। जिसमें छन्द के नियमों को गणितीय तरीके से प्रस्तुत किया गया है। वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त छन्दों के लिये अलग नियम हैं तथा लौकिक के लिये अलग। इस प्रकार वैदिक तथा लौकिक छन्द के दो भेद हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के इस नए युग में पारम्परिक शिक्षण की जगह ई-शिक्षण ले रहे हैं। प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त ज्ञान के संरक्षण के लिये इन ग्रन्थों को डिजिटलाइज करना भी आवश्यक है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में हम सूचनाएँ समाज को वेब के माध्यम से किसी भी समय देने में समर्थ हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य ऑनलाईन शिक्षण के माध्यम से छात्रों तथा शिक्षकों को सशक्त बनाने हेतु संस्कृत छन्द के लिये एक वेब आधारित प्रणाली का विकास करना है। जिसके माध्यम से कोई भी छन्द सीखने का इच्छुक व्यक्ति वेब की सहायता से छन्द सीखने में समर्थ होगा। यह सिस्टम पिंगल के छन्दनियम के आधार पर बनाया गया है।

खोजशब्द (Key Words): छन्द विश्लेषक E-Learning tools for Sanskrit, Sanskrit Meter, पिङ्गल छन्द-शास्त्र, छन्द सूचना तंत्र, Meter Recognizer and Analyzer आदि।

1. पृष्ठभूमि (Background):

सामान्यत: वर्णों और मात्राओं की गेय-व्यवस्था को छन्द कहा जाता है (अवस्थी, 1972) । इसी अर्थ में पद्य शब्द का भी प्रयोग किया जाता है । पद्य अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है । भाषा में वाक्य तथा वाक्य में शब्द और शब्दों में वर्ण तथा स्वर रहते हैं । इन्हीं को एक निश्चित विधान से सुव्यवस्थित करने पर छन्द का नाम दिया जाता है । छन्दशास्त्र गणित पर आधारित है । वाक्य में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा-गणना तथा यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना छन्द कहलाती है । सूत्रशैली में आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित छन्दशास्त्र छन्द का मूल ग्रन्थ है तथा बिना भाष्य के समझना एवं पढना अत्यन्य कठिन है । इसे ही वेदों का पाद कहा गया है (अवस्थी, 1972) । विश्व के किसी भी साहित्य में छन्दों का इतना व्यापक और सूक्ष्म अनुशीलन नहीं हुआ है, जितना संस्कृत साहित्य में विद्यमान है । संस्कृत- साहित्य का आद्य स्रोत तथा मूलाधार वेद हैं । पाणिनीयशिक्षा के अनुसार वेदपुरुष के छः (6) अंग हैं – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द (महतो, 2015) । चारों वेदों में ऋग्वेद की ऋचाएँ सबसे प्राचीन हैं । उन ऋचाओं को जो पद्यमय, छन्दोबद्ध हैं, उन्हें वेदपुरुष के दोनों चरण कहा गया है[269] । आचार्य कात्यायन ने अक्षरों को परिगणित करने वाली पदावली को छन्द माना है[270] (मैक्डानल,1886) । इस प्रकार आगे चलकर लौकिक छन्दों का प्रादुर्भाव हुआ । आचार्य विश्वनाथ ने छन्दोबद्ध रचना को पद्य कहा है[271] (शास्त्री, 1977) । छन्दों के लिये अनेक आचार्यों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है । जिनमें से आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित छन्द:सूत्र या छन्द:शास्त्रम्, केदारभट्ट विरचित वृत्तरत्नाकर, गङ्गादास विरचित छन्दोमञ्जरी, महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित सुवृत्ततिलकम्, जयकीर्तिकृत छन्दोऽनुशासनम्, जयदेवच्छन्द:, रत्नशेखर कृत छन्द:कोश इत्यादि मुख्य एवं उल्लेखनीय है (मिश्र, 2006) ।

1.1 छन्द के अवयव

छन्द को समझने के लिये सबसे पहले उसके अवयवों को समझना आवश्यक होता है । छन्द के निम्नलिखित अंग होते हैं –

---

[269] छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्साङ्कमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ।। [पाणिनीयशिक्षा, महतो, 2015, कारिका- 41-42.]

[270] यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः [ऋक्सर्वानुक्रमणी 2/6]

[271] छन्दोबद्धमिदं पद्यम् [साहित्यदर्पण, शास्त्री, पृष्ठसंख्या-224]

1.1.1 चरण या पद: छन्द के चतुर्थांश अर्थात् ¼ भाग को पाद या चरण कहते हैं[272] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। छन्द के अनुसार प्रत्येक चरणों में वर्ण तथा मात्राओं की संख्या भिन्न हो सकती हैं। छन्द में प्राय: चार चरण या पद होते हैं। पहले और तीसरे चरण को विषम चरण तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहा जाता है।

1.1.2 मात्रा: वर्ण के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है। मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं – (1) लघु (।) (2) गुरू (S)। जिनके उच्चारण में थोड़ा कम समय लगता है उन्हे लघु मात्रा कहा जाता है जैसे अ, इ, उ आदि की मात्राएँ। मात्राओं की गणना के समय इसे " । " चिह्न से अंकित किया जाता है। जिनके उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हे गुरु मात्रा कहा जाता है अर्थात् उच्चारण में लघु मात्राओं की अपेक्षा दुगुना अथवा तिगुना समय लगता हैं। जैसे – ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ आदि मात्राएँ। मात्राओं की गणना के समय इसे "ऽ" चिह्न से अंकित किया जाता है (मिश्र, 2006)।

1.1.3 वर्ण: भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। छन्द में दो प्रकार के वर्ण होते हैं। ह्रस्व स्वर और उसकी मात्रा से युक्त व्यंजन वर्ण को लघु वर्ण कहा जाता है। इसको " । " चिह्न से अंकित किया जाता है। उदाहरणार्थ– क, कि, कु, र्क आदि लघु मात्राएँ हैं। दीर्घ स्वर और उसकी मात्रा से युक्त व्यंजन वर्ण को गुरू वर्ण कहा जाता है। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती है इसको "ऽ" चिह्न से अंकित किया जाता है। उदाहरणार्थ:– का, की, कू, के, कै, को, कौ आदि दीर्घ मात्राएँ हैं (शर्मा, 1969)।

1.1.4 संख्या: मात्राओं एवं वर्णों की गणना को संख्या कहते हैं। छन्द की पहचान करने में यह अवयव बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छन्द का निर्णय संख्या के आधार पर किया जाता है।

1.1.5 क्रम: लघु - गुरु के स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं (मिश्र, 2006)।

1.1.6 गति: पद्य के पाठ में जो बहाव होता है उसे गति कहते हैं। छन्दोबद्ध रचना को लय में आरोह - अवरोह के साथ पढ़ा जाता है। छन्द की इसी लय को गति कहते है।

1.1.7 यति या विराम: श्लोक या पद्य को पढने में आवश्यकतानुसार कुछ अक्षरों के बाद अल्पविराम होता है, इसी अल्पविराम को गद्य में विराग और पद्य में यति कहते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)।

---

[272] पादश्चतुर्थभाग:। [छन्द:सूत्रम्, द्विवेदी एवं सिंह, पृष्ठसंख्या-85]

1.1.8 तुक: पद्य–रचना में चरणान्त के साम्य को तुक कहते हैं अर्थात् पद के अन्त में एक से स्वर वाले एक या अनेक अक्षर आ जाते हैं, उन्हीं को तुक कहते हैं (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 & मिश्र, 2006)। समान उच्चारण वाले शब्दों के प्रयोग को तुक कहा जाता है। पद्य प्रायः तुकान्त होते हैं।

1.1.9 गण: मात्राओं तथा वर्णों की संख्या और क्रम की सुविधा के लिये तीन वर्णों के समूह को एक गण मान लिया जाता है। छन्द में कुल आठ गण होते हैं तथा प्रत्येक गण में तीन-तीन वर्ण होते हैं। छन्दशास्त्र में इन्ही आठ गणों को सूत्रवत तरीके से य-म-त-र-ज-भ-न-स-ल-ग के रूप में व्यक्त किया गया है[273] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008 & मिश्र, 2006)। सूत्र के प्रथम आठ वर्ण आठ गणों को द्योतित करते हैं और अन्तिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' लघु और गुरु वर्ण को प्रकट करते हैं। आठ गणों का विस्तृत विवेचन एवं मात्रा गणना तथा सांकेतिक चिन्ह तालिका संख्या 1 में दर्शायी गई है।

Table 1 गण

नाम	स्वरूप	उदाहरण	सांकेतिक
यगण	। ऽऽ	वियोगी	य
मगण	ऽऽऽ	मायावी	मा
तगण	ऽऽ।	वाचाल	ता
रगण	ऽ। ऽ	बालिका	रा
जगण	। ऽ।	सयोग	ज
भगण	ऽ।।	शावक	भा
नगण	।।।	कमल	न
सगण	।। ऽ	सरयू	स

अन्य आचार्यों ने भी इन्ही आठ गणों को अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया है[274] (शास्त्री, 1998)।

1.2. मात्राओं की गणना के नियम

मात्राओं की गणना के लिये सामान्य नियम के साथ-साथ विशेष नियम भी बताएं गए हैं। लघु वर्ण को " । " चिन्ह से अंकित किया जाता है जिसकी एक मात्रा गिनी जाती है। तथा गुरु वर्ण को "ऽ" चिन्ह से अंकित किया जाता है जिसकी दो मात्रा गिनी जाती है। जिनका विवरण निम्नलिखित है:

1. ह्रस्व स्वर तथा इनसे युक्त व्यञ्जन वर्ण प्रायः लघु होते हैं।

---

[273] यमाताराजभानसलगाः,[पृष्ठसंख्या-4-5]।

[274] मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ॥ 8 ॥ [छन्दोमंजरी(तैलङ्ग), पृष्ठसंख्या - 6]।
आदि मध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ॥ [छन्दःसूत्रम्, द्विवेदी एवं सिंह, पृष्ठसंख्या - 4]।

2. दीर्घ स्वर तथा इनसे युक्त व्यञ्जन वर्ण प्रायः दीर्घ होते हैं।
3. लघु स्वर के बाद यदि अनुस्वार हो तो वह गुरु माना जाता है जैसे- अन्त, पंचमं आदि। यहाँ अ, प और म वर्ण अनुस्वार युक्त हैं अत: इसे गुरु माना जाएगा।
4. यदि लघु स्वर के बाद विसर्ग हो तो वह भी गुरु माना जाता है जैसे राम: नर:, मति: आदि। यहाँ म, र, ति- विसर्ग युक्त है अत: इन्हे भी गुरु माना जाएगा।
5. संयुक्त व्यञ्जन से पूर्व वर्ण ह्रस्व होने पर भी गुरु माना जाता है।
6. विसर्ग और अनुस्वार से पूर्व वर्ण ह्रस्व होने पर भी गुरु माना जाता है। यथा– दुःख और शंका शब्द में 'दु' और 'श' ह्रस्व वर्ण होंने पर भी दीर्घ माने जायेंगे।
7. छन्द की आवश्यकतानुसार चरणान्त में ह्रस्व वर्ण को भी दीर्घ माना जा सकता है (तैलङ्ग, 2013)।

आचार्य गंगादास[275] के अनुसार अनुस्वार सहित ह्रस्ववर्ण (अं,कं,चं आदि) और दीर्घ (आ,का,चा आदि) तथा विसर्ग युक्त (अ:, क:,च: आदि) और संयुक्त अक्षर से पहला अक्षर (यथा-कृष्ण: में कृ, मित्र: में मि आदि) गुरु होता है पाद के अन्त में रहने वाले ह्रस्व वर्ण को भी छन्द की आवश्यकता के अनुसार विकल्प से गुरु (दीर्घ) अथवा (ह्रस्व) माना जाता है (तैलङ्ग, 2013)।

1.3 छन्द के प्रकार

संस्कृत साहित्य के अनुसार छन्दों का विभाजन दो प्रकार से किया गया। वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को वैदिक छन्द कहा जाता है। इनमें अनुदात्त, उदात्त एवं स्वरित के भेद से तीन प्रकार के स्वर पाये जाते हैं। वेदों में मात्रिक छन्दों का अभाव है। वैदिक छन्दों के प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या गिनी जाती है। इसी के आधार पर छन्दों में भेद किया जाता है, यथा अनुष्टुप,त्रिष्टुप, पंक्ति, बृहती इत्यादि। लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को लौकिक छन्द कहा जाता है। लौकिक छन्द लघु एवं गुरु मात्रा तथा वर्णादि के नियामक होतें हैं। लौकिक छन्दों का प्रादुर्भाव वाल्मीकि कृत रामायण काल से स्वीकार किया जाता है। यथा आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपजाति, शिखरिणी, स्रग्धरा इत्यादि। किन्तु अनुष्टुप् ऐसा छन्द है जो वैदिकशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र दोनों में इसका प्रयोग प्राप्त होता हैं।

पुनः छन्द की संरचना के अनुसार छन्दों का विभाजन किया गया है। कुछ छन्दों में मात्राओं की गणना की जाती है अतः इन्हे मात्रिक तथा कुछ में वर्णों की जिन्हे वर्णिक छन्द कहा जाता है। वर्णिक को वर्णवृत्त भी कहा जाता है। इसमें प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार वर्णों की गणना की जाती है। यथा- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा आदि। इसके भी दो भेद हो जाते हैं गणात्मक एवं

---

[275] सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।

वर्ण: संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥11॥ [छन्दोमंजरी(तैलङ्ग),पृष्ठसंख्या - 11]।

अगणात्मक। गणात्मक वर्णिक छन्दों की रचना तीन लघु और दीर्घ गणों से बने हुए गणों के आधार पर होती है। इन्हे ही वृत्त भी कहते हैं। इनकी रचना लघु तथा दीर्घ के विचार से यदि वर्णों की प्रस्तार-व्यवस्था की जाए तो आठ रूप बनते हैं। इन्हीं को आठ गण कहते हैं इनमें भ, न, म, य शुभ गण माने गए हैं और ज, र, स, त अशुभ माने गए हैं। वाक्य के आदि में प्रथम चार गणों का प्रयोग उचित है, अंतिम चार का प्रयोग निषिद्ध है। यदि शुभ गणों से प्रारंभ होने वाले छन्द का ही प्रयोग करना है, तो देवतावाची या मंगलवाची वर्ण अथवा शब्द का प्रयोग प्रथम करना चाहिए जिससे गणदोष दूर हो जाता है। इन गणों में परस्पर मित्र, शत्रु और उदासीन भाव माना गया है। छन्द के आदि में दो गणों का मेल माना गया है। वर्णों के लघु एवं दीर्घ मानने का भी नियम है। लघु स्वर अथवा एक मात्रा वाले वर्ण लघु अथवा ह्रस्व माने गए और इसमें एक मात्रा मानी गई है। दीर्घ स्वरों से युक्त संयुक्त वर्णों से पूर्व का लघु वर्ण भी विसर्ग युक्त और अनुस्वार वर्ण तथा छन्द का वर्ण दीर्घ माना जाता है। अगणात्मक वर्णिक वृत्त वे हैं जिनमें गणों का विचार नहीं रखा जाता, केवल वर्णों की निश्चित संख्या का विचार रहता है विशेष मात्रिक छन्दों में केवल मात्राओं का ही निश्चित विचार रहता है और यह एक विशेष लय अथवा गति (पाठप्रवाह अथवा पाठपद्धति) पर आधारित रहते हैं। इसलिये ये छन्द लय प्रधान होते हैं। मात्रिक छन्द में प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार मात्राओं की गणना की जाती है। इन्हे जाति भी कहते हैं। यथा- आर्या आदि। इसके प्रत्येक श्लोक में चार पाद या चार चरण होते हैं।

प्रत्येक पाद में मात्राओं एवं वर्णो की संख्या के आधार पर छन्द तीन प्रकार के होतें हैं। सम, अर्धसम एवं विषम। समवृत्त में छन्द के चारों चरणों में या मात्राओं की संख्या समान होती हैं। इस प्रकार के छन्दों में मात्राओं की संख्या 4 से लेकर 104 तक हो सकती हैं। जैसे गीतिका आदि जिसके प्रत्येक चरण में 20-20 मात्राएँ होती है। अर्धसमवृत्त में प्रथम, तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ में वर्ण-स्वर की संख्या समान रहती है। जैसे सुन्दरी जिसके पहले तथा तृतीय चरण में 10-10 तथा दूसरें एवं चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। विषमवृत्त के चारों चरणों में वर्णों एवं स्वरों की संख्या असमान रहती है। जैसे सौरभकम् जिसके पहले चरण में 10, दूसरे में 10, तीसरे में 12 तथा चौथे में 13 मात्राएँ होती हैं।

छन्दों पर अनेक सन्दर्भ ग्रन्थ प्राप्त होतें हैं। जिनमें से आचार्य भरत का नाट्यशास्त्र जिसके 15 वें, 16वें एवं 32वें अध्याय में साहित्यशास्त्र की दृष्टि से छन्द:शास्त्र का संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित विवेचन किया गया है (मीणा, 2003)। अग्निपुराण में छन्दोविषयक विवरण 328वें से 335वें अध्याय तक प्राप्त होता है। इसमें प्राप्त छन्द प्रकरण आचार्य पिङ्गल के छन्द:सूत्र के आधार पर लिखा गया है। अग्निपुराणकार के स्वतन्त्र लक्षित छन्दों की संख्या 33 है (उपाध्याय, 1966)। कालिदास (दंतकथा के आधार पर) श्रुतबोध जिसमें कुल 43 श्लोक हैं, जिनमें 37 वर्णवृत्त तथा आर्या, गीति और उपगीति इन तीन मात्रिक छन्दों की चर्चा होने से यह संख्या 40 स्थिर होती है।

इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें जिस छन्द का वर्णन जिस पद्य में लक्षण के रूप में हुआ है उस छन्द का वही पद्य उदाहरण भी है (मिश्र, 2006) । जयदेवकृत जयदेवच्छन्दः के नाम से प्रसिद्ध है । क्षेमेंद्रकृत सुवृत्ततिलक एक प्रसिद्ध छन्दोविषयक रचना है । केदारभट्ट का वृत्तरत्नाकर भी छन्द विषयक ग्रन्थ है । वृत्तरत्नाकर में 6 अध्याय हैं और पूरा ग्रन्थ 136 श्लोकों में निबद्ध हैं । इस ग्रन्थ पर 45 टीकाओं का उल्लेख मिलता है (मिश्र, 2006) । गंगादासछन्दोमञ्जरी भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है (मिश्र, 2006) ।

2. सर्वेक्षण

संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान-विज्ञान को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से संगणकीय टूल्स बनाकर अधिक से अधिक लोगों तक पहुचाने के लिये आईटी क्षेत्र के विद्वानों के द्वारा पिछले कुछ वर्षों से बहुत सारे अनुसंधान एवं विकास के कार्य किये जा रहें हैं । इस क्षेत्र को शोध के माध्यम से आगे बढाने में आईआईटी मुम्बई (http://www.iitb.ac.in/), आईआईआईटी हैदराबाद (http://sanskrit.uohyd.ernet.in/), सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी आँफ हैदराबाद (http://www.iith.ac.in/), जेएनयू, दिल्ली (http://sanskrit.jnu.ac.in/) आदि प्रमुख संस्थान हैं । भारतीय भाषा प्रसरण एवं विस्तारण केन्द्र (TDIL), इलेक्टॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (DeitY), संचार एवं सूचना मन्त्रालय, भारत सरकार भारतीय भाषाओं से सम्बन्धित अनुसंधान एवं विकास के लिये वित्तपोषण प्रदान करता है जिसके तहत संस्कृत भाषा के लिये बहुत सारे टूल्स बनाये गये हैं (http://tdil-dc.in/san) । भारतीय भाषाओं विशेष रूप से संस्कृत भाषा से सम्बन्धित कार्यों के लिये जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र ने संस्कृत भाषा से सम्बन्धित बहुत सारे कार्य किये हैं जिनमें से पाणिनीय संस्कृत व्याकरण के विभिन्न प्रकरण मुख्य हैं (Agrawal, 2007; Bhadra et al, 2007; Chandra, 2006; Jha et al, 2006; Bhadra et al, 2009; Jha et al, 2009; Chandra and Jha, 2011 & Chandra, 2012; Kumar, 2007; Singh, 2008; Bhaumik, 2009; Jha et al, 2006 and Chadrashekar, 2007) । इस क्षेत्र में हैदराबाद विश्वविद्यालय (http://sanskrit.uohyd.ernet.in/), प्रगत संगणन विकास केन्द्र (cdac.in), आईआईआईटी हैदराबाद, तिरूपति विद्यापीठ, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर का भी योगदान भी सराहनीय रहा है । दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने भी इस क्षेत्र में कार्य शुरू किया जिनमें से ई-शिक्षण हेतु छन्द विश्लेषक, सुबन्त रूपसिद्धि, तिङन्त रूपसिद्धि, सनद्यन्त विश्लेषक, आदि प्रमुख है (Department of Sanskrit, DU) । इस विभाग का मुख्य उद्देश्य संस्कृत भाषा के ऑनलाईन शिक्षण हेतु टूल्स बनाना है। संस्कृत छन्दों के क्षेत्र में इस शोध के क्षेत्र में आनन्द मिश्रा (http://sanskrit.sai.uni-heidelberg.de/Chanda/HTML) का योगदान बहुत ही सराहनीय है जिन्होने एक वेब आधारित सिस्टम का विकास किया है तथा उनका दावा है कि यह सिस्टम छन्द को पहचानने में समर्थ है तथा लगभग सभी छन्दों की सूची उपलब्ध कराता है । अरबी भाषा के

लिये छन्द की पहचान हेतु एक तंत्र का विकास किया गया है जिसका दावा है कि इस सिस्टम की सहायता से अनुभवहीन लोग भी अरबी कविता में छन्द निर्धारण के सक्षम होगे (Alabbas et al, 2014) । बांग्ला गद्य पाठ से बांग्ला पद्य बनाने के लिये एक संगणकीय विधि विकसित करने के लिए शुरुआत की गई है (Das and Gamback, 2014) । तुर्की लोक साहित्य के दीवान पद्य में आर्द छन्द को पहचानने एवं विश्लेषित करने के लिये अल्गोरिद्म (algorithm) प्रस्तावित की गई है जिसमें दीवान पद्यों का एक छोटा डेटाबेस की सहायता विश्लेषण किया जाता है (Kurt and Kara, 2012) । संस्कृत वृत्त छन्दों की पहचान के लिये एक अध्ययन तथा एक कम्प्यूटर प्रोग्राम विकसित किया गया है (Murthy, 2003) । कलिप्पा नामक तमिल पद्य पहचान के लिये एक सिस्टम उपलब्ध है जिसका दावा है कि यह तमिल भाषा के पद्यों में 80% सटीकता के साथ कार्य करता है (Sridhar et al, 2013) । मलयालम भाषा के लिये लघु एवं गुरु मात्राओं की पहचान के लिये उदाहरण आधारित एक सिस्टम भी विकसित किया गया है (Manu et al, 2013) । जो किसी भी मलयालम में नियम के आधार पर मात्राओं (लघु एवं गुरु) की पहचान करता है । संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले छन्दों को आधार बनाकर 2002 में संस्कृत छन्दों का उद्भव एवं विकास पर एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है जिसमें छन्दों के इतिहास, उत्पत्ति एवं विकास पर चर्चा की गई है (मिश्र, 2002) । छन्दशास्त्र के वैदिक आधार, साहित्यिक विस्तार तथा शास्त्रीय परिधि का विश्लेषण के लिये छन्दशास्त्र के उद्भव एवं विस्तार पर कार्य किया गया है जिसमें वैदिक एवं लौकिक छन्दों के लक्षण, उदाहरण एवं अर्थ भी प्राप्त होते है (मिश्र, 2006) । संस्कृत छन्दों पर एक लघुशोध 1997 में वाल्मीकि रामायण का छन्द विश्लेषण इस विषय पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है जिसमें वाल्मीकि रामायण में प्रयुक्त छन्दों के विषय में विस्तार से अर्थात् छन्द का अर्थ, लक्षण, उदाहरण तथा गण व्यवस्था सहित बताया गया है (सहदेव, 1997) । नाट्यशास्त्र एवं पिंगल के छन्द:सूत्र के एक अध्ययन में दो आधारभूत आचार्यों की छन्दोविषयक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है (मीणा, 2003) । पिंगलाचार्य के छन्द:सूत्र का परिचय, विशेषत: अनुष्टुप् छन्द के प्रकारों का निरूपण प्रस्तुत करने के बाद, छन्द के सन्दर्भ में मुनित्रय के व्याकरणशास्त्र, कौटिल्य-अर्थशास्त्र, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, भरतमुनि-नाट्यशास्त्र, अश्वघोष, भास, कालिदास की कृतियाँ-इन सब में प्रयुक्त छन्दों का सरल भाषा में अध्ययन पूर्ण विश्लेषण भी किया गया है (शाह, 2010) ।

3. सामग्री संकलन एवं शोधविधि (Material Collection and Methodology)

3.1 सामग्री (Material)

इस शोधपत्र के लिए मुख्य छन्दों का संग्रह दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए एवं एमए पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के आधार पर किया गया हैं । इनके संग्रहण के लिए सबसे पहले पाठ्य-पुस्तकों का अध्ययन किया गया तथा प्रयुक्त छन्दों के प्रयोग के साथ छन्दों की एक सूची बनाई गई । फिर इन सभी सूची को एक में मिलाकर अद्वितीय (unique) किया गया जिसके

परिणाम स्वरूप 44 छन्दों की सूची प्राप्त हुई । यही सारे छन्द इस शोधपत्र के सामग्री के रूप में लिए गये हैं । इन सभी छन्दों मे से अनुष्टुप छन्द का प्रयोग उक्त पाठ्यक्रम में सबसे अधिक बार (525) प्रयोग हुआ है । तथा प्रमिताक्षरा, चित्रजाति, इत्यादि छन्द का प्रयोग सबसे कम बार (1-1) हुआ है ।

3.2 शोधविधि (Methodology)

इस शोधपत्र में नियम आधारित शोधविधि का प्रयोग किया गया है । जिसका मुख्य आधार पिंगल का छन्दशास्त्र या छन्दसूत्र है । इसके लिए सबसे पहले सामग्री में चुने हुए छन्दों तथा मात्राओं की गणना के लिये नियमों को एक डेटाबेस में रखा गया है । सिस्टम सबसे पहले यूजर द्वारा दिये गये छन्द की जांच करता है कि यह छन्द है कि नही । जांच सही होने पर आगे प्रक्रिया के लिये भेजता है । फिर सिस्टम प्रदत्त छन्द से सम्बन्धित सूचनाएँ जैसे परिभाषा (लक्षण), उदाहरण एवं अन्य सूचनाएँ मात्रा गणना के साथ वापस कर देता है । उदाहरण का विश्लेषण नियम के आधार पर किया जाता है । सिस्टम द्वारा मात्रा के गणना का पूर्ण नियम भी यूजर को बताया जाता है । साथ ही साथ प्रस्तुत छन्द दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में कहाँ-कहाँ आया है इसकी सूचना भी दी जाती है । शोधविधि को चित्र संख्या 1 से समझा जा सकता है ।

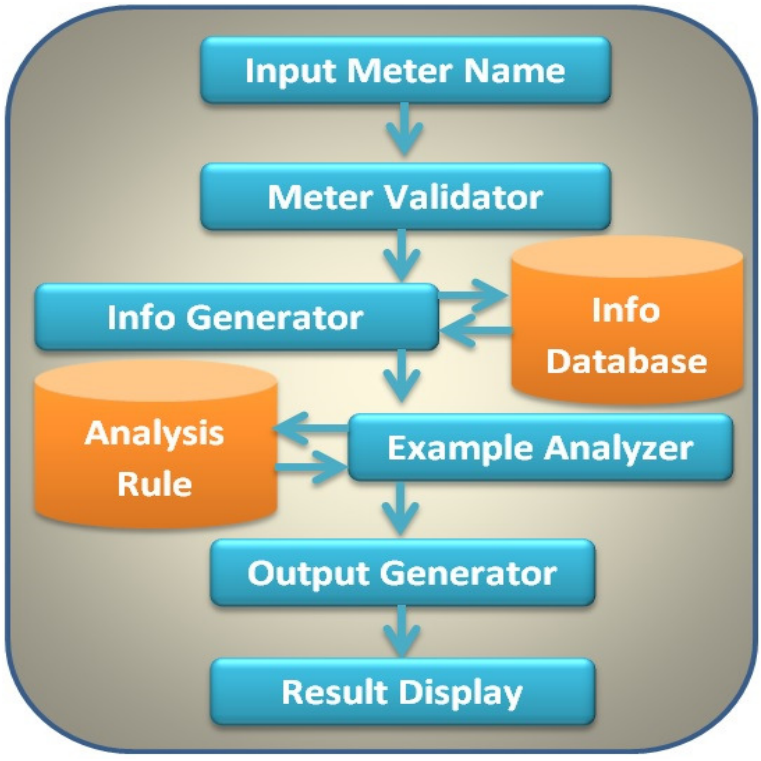

Figure 2: शोधविधि

4. परिणाम एवं परिचर्चा (Reseults and Discussions)

4.1 परिणाम (Results)

इस शोध के लिए मुख्य छन्दों का संग्रह दिल्ली विश्वविद्यालय के बीए एवं एमए पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के आधार पर किया गया हैं। यह सिस्टम इस पाठ्यक्रम से आधारित कोई छन्द ऑनलाईन सीखने में मदद करता है। कोई भी छन्द से सम्बन्धित सारी सूचनाएँ जैसे लक्षण हिन्दी अनुवाद के साथ, उदाहरण तथा उदाहरण में मात्राओं की गणना भी दिखाई गई है। मात्रा गणना के नियम भी प्रदर्शित करने का प्रावधान है। यह सिस्टम छात्रों, शिक्षकों तथा छन्द सीखने के इच्छुक किसी के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

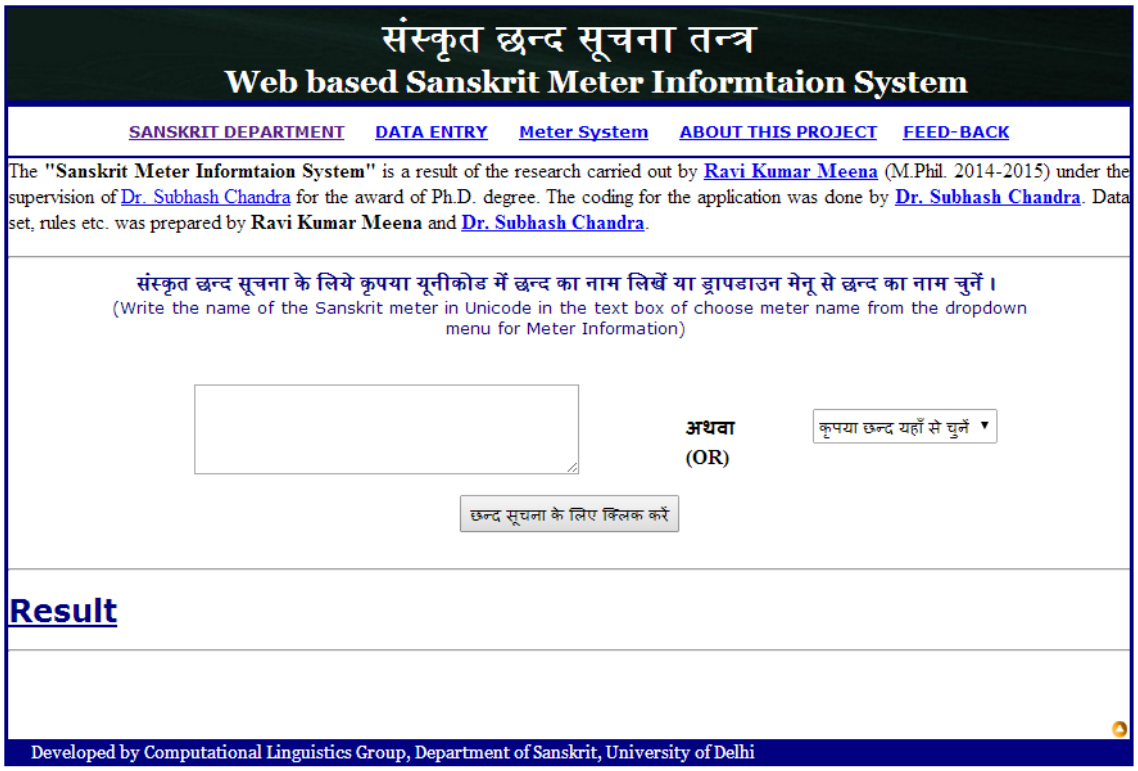

Figure 3: यूजर इंटरफेस

4.2 परिचर्चा (Discussion)

अभी प्रस्तुत सिस्टम केवल सूचना डेटाबेस की सहायता से प्रदान करता है। किन्तु उदाहरण विश्लेषण नियम के आधार पर करता है। बाद में इसे पूर्णतः नियम आधारित बनाया जाएगा तथा

बहुभाषीय किया जाएगा । साथ ही साथ इसमें छन्द की गेयता के लिये ऑडियो क्लिप भी जोड़ी जायेगी ।

5. शोध की भावी सम्भावना

वर्तमान में लौकिक ई-शिक्षण छन्दों पर शोध का कार्य केवल दिल्ली विश्वविद्यालय के एम.ए तथा बी.ए के पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों में प्रयुक्त छन्दों के आधार पर ही किया जा रहा है । भविष्य में सम्पूर्ण लौकिक छन्दों पर ई-शिक्षण प्रणाली से पढने की सुविधा दिल्ली विश्वविद्यालय की वेब-साईट पर शीघ्र उपलब्ध होगी । जिससे किसी भी समय किसी भी स्थान पर छन्द जिज्ञासु इस सुविधा का लाभ प्राप्त कर सकेगा । इस क्षेत्र में और भी कार्य कार्यरत है यथा- भविष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय की वेब-साईट पर एसा सर्च-इंजन तैयार किया जा रहा है जिससे किसी भी समय कोई भी जिज्ञासु किसी भी श्लोक (चाहे वह किसी पाण्डुलिपि से प्राप्त हो या अन्य किसी भी पुस्तक से प्राप्त हो) को यूनिकोड में टाईप करके सर्च करता है तो वह उस श्लोक में कौनसा छन्द है, उसका लक्षण क्या है, अर्थ, तथा गण सहित यह सुविधा उपलब्ध होगी । इसे बहुभाषीय किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agrawal, Muktanand, 2007, *Computational identification and analysis of Sanskrit verb-forms of bhvaadigana,* Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

2. Alabbas et al., 2014, 2012, "BASRAH: an automatic system to identify the meter of Arabic poetry," Natural Language Engineering-Cambridge University Press, pp. 1-19.

3. Bhadra, Manji, 2007, *Computational analysis of gender in Sanskrit noun phrases for Machine Translation,* Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

4. Bhadra, Manji, Singh, Surjit Kumar, Kumar, Sachin, Chandra, Subhash, Agrawal, Muk-tanand, Chandrashekar, R, Mishra, Sudhir Kumar & Jha, Girish Nath, 2009, "*Sanskrit Analysis System (SAS)"*, Sanskrit Computational Linguistics Lecture Notes in Computer Science by Springer Berlin Heidelberg, Page 116-133.

5. Bhowmik, Priti, 2009, *Evolving e-learning methods for Sanskrit e-learning in the context of secondary sylabus of CBSE,* Thesis Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

6. Chandra, Subhash & Jha, Girish Nath, 2011, *Computer Processing of Sanskrit Nominal Inflections: Methods and Implementation,* Cambridge Scholars Publishing (CSP), Newcastle upon Tyne.

7. Chandra, Subhash, 2006, *Machine Recognition and Morphological Analysis of Subanta-padas*, Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

8. Chandra, Subhash, 2012, *Restructuring of Paninian Morphological Rules for Computer processing of Sanskrit Nominal Inflections,* Proc. of the Workshop on Indian Language Data: Resources and Evaluation, Lütfi Kirdar Istanbul Exhibition and Congress Center, Turkey.

9. Chandrashekar, R, 2007, *Part-Of-Speech Tagging for Sanskrit,* Thesis Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

10. Das and Gambäck, 2014, *Poetic Machine: Computational Creativity for Automatic Poetry Generation in Bengali*, In Proceedings of the Fifth International Conference on Computational Creativity.

11. http://cdac.in (obtained on September 1, 2015)

12. http://sanskrit.du.ac.in/cl.html (obtained on September 2, 2015)

13. http://sanskrit.jnu.ac.in (obtained on September 2, 2015)

14. http://sanskrit.sai.uni-heidelberg.de/Chanda/HTML

15. http://sanskrit.uohyd.ernet.in/ (obtained on September 4, 2015)

16. Kumar, Sachin, 2007, *Sandhi splitter and analyzer for Sanskrit (with special reference to aC Sandhi),* Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

17. Kurt and Kara, 2012, *An algorithm for the detection and analysis of arud meter in Diwan poetry,* Turkish Journal of Electrical Engineering and Computer Cciences 20.6 (2012): 948-963.

18. Manu et al., 2013, *"Computing Prosodic Patterns for Malayalam",* National Conference on Indian Language Computing- NCILC 2013.

19. Mishra, Madhusudan**,** 1977, *Metres of Kalidas,* Tara Prakashan, Delhi.

20. Mukherjee, Sujit, 1999, *A Dictionary of Indian Literature: Beginnings,* Orient BlackSwan.

21. Murthy, 2003, Characterizing Classical Anu□□up: A Study in Sanskrit Prosody. *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute,* 101-115.

22. Rajeswari, Sridhar, R Rajkiran, N J Narendra Kumar and M Giridhar, 2013, "Recognition of kalippa class of tamil poetry", pp. 22-27

23. Singh, Surjit Kumar, 2008, *Kridanata Recognition and processing for Sanskrit,* Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

24. अवस्थी, रुद्रप्रसाद (सं.), 1972, *पाणिनीयशिक्षा,* चौखम्बा संस्कृतसीरीज आफ़िस, वाराणसी।

25. उपाध्याय, बलदेव, 1966, *अग्निपुराण*, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।

26. उपाध्याय, बलदेव, 2012, *वृत्तरत्नाकरः*, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।

27. ऋषि, उमाशंकर शर्मा, 2012, *संस्कृत साहित्य का इतिहास,* चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी।

28. गुप्ता, सावित्री, 2014, *छन्दोऽलङ्कारसौरभम्*, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली ।

29. घोष, चन्द्रमोहन, 1893, *छन्दःसारसंग्रह,* कलकत्ता ।

30. तैलङ्ग,जगन्नाथशास्त्री, 2013, *छन्दोमञ्जरी*, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी ।

31. द्विवेदी, कपिलदेव (अनु.), एवं सिंह, श्यामलाल (अनु.), 2008, *पिंगल कृत छन्दः सूत्रम्*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

32. महतो, दामोदर (सम्पा.), 2015, *पाणिनीय शिक्षा*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।

33. मिश्र, रामकिशोर, 2002, *संस्कृत छन्दों का उद्भव एवं विकास,* ज्ञान प्रकाशन, मेरठ ।

34. मिश्र, श्रीकिशोर, 2006, *छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार,* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

35. मीणा, टेकचन्द, 2003, *नाट्यशास्त्र में छन्दोयोजना एवं पिंगल के छन्दःसूत्र का तुलनात्मक अध्ययन,* लघुशोध. संस्कृत-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

36. मैक्डानल (सम्पा.), 1886, *ऋक्सर्वानुक्रमणी*, हार्वर्ड ओरियेन्टल सिरीज ।

37. शर्मा, अयोध्यानाथ, 1969, *पिंगलच्छन्दःसूत्रम्*, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।

38. शास्त्री, शालेग्राम, 1977, *साहित्यदर्पण*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।

39. शास्त्री, शिवदत्तमिश्र, 1998, *छन्दःप्रकाश*, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी ।

40. शाह, गोविन्दलाल, 2010, *पिंगलाचार्य के आसन्नपूर्वोत्तर- कालिक संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त लौकिक छन्द*, सूर्याऑफ़सेट अहमदाबाद।

41. शिवकुमार, नारायण, 1964, *छन्दःशास्त्र की भूमिका,* जमशेदपुर ।

42. सहदेव, मञ्जुला, 1997, *वाल्मीकि रामायण का छन्द विश्लेषण,* नाग प्रकाशक, दिल्ली ।

द्वितीय प्रकाशन
प्रकाशित पोस्टर (Published Poster)

ऑनलाइन संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र